वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 332
ISBN 978-93-80353-91-3

सोलहकारण विधान

–मंगल प्रेरणा एवं आशीर्वाद–

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी

–रचयित्री–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

सोलहकारण पर्व के अन्तर्गत भाद्रपद कृष्णा चतुर्थी-9 अगस्त 1952 को पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा संयम ग्रहण करने हेतु प्रथम संकल्प दिवस के उपलक्ष्य में 60वें संकल्प दिवस–17 अगस्त 2011 के अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.
फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweeep.org
E-mail : rk195057@yahoo.com

प्रथम संस्करण	वी.नि.सं. 2537, भाद्रपद कृ. 4	मूल्य
1100 प्रतियाँ	17 अगस्त 2011	40/-रुपये

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

–: निर्देशन :–

धर्मदिवाकर पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज

–: सम्पादक :–

कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन

आज के भौतिकवादी युग में मनुष्य को अपने जीवन में आत्मोन्नति के लिए सन्तों का समागम आवश्यक है किन्तु जहाँ संतों का सान्निध्य सरलता से प्राप्त नहीं हो पाता, ऐसे मानवों के लिए सत्साहित्य ही उनके लिए सही मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं। प्राचीनकाल से हमारे देश में ऋषि, मुनियों, मनीषियों ने आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्ति के लिए एवं दुर्लभ मानव पर्याय का सदुपयोग किस प्रकार करें, इसी हेतु से विपुल साहित्य रचना कर हमें प्रदान किये हैं। वर्तमान समय में देव, शास्त्र, गुरु की भक्ति ही हमें इस संसाररूपी समुद्र से पार करने में सशक्त माध्यम है।

ऐसे विषम समय में आज की आधुनिक पीढ़ी को जैनधर्म की ओर उन्मुख करने के लिए भक्तिमार्ग ही एक ऐसा मार्ग है, जो जनमानस को धर्म के लिए प्रेरित करता है। पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने बालकों से लेकर वृद्धों तक सभी के लिए बाल विकास से लेकर अष्टसहस्री जैसे क्लिष्ट ग्रंथ समाज को प्रदान किये हैं। अनेक पूजा-विधानों की रचनाएँ की हैं, जिन्हें देश ही नहीं विदेशों में भी भक्तजन भक्तिभाव से करते हैं। उन्हीं की शिष्या पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने भी इस दिशा में हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत में साहित्य रचनाएं कर सभी के लिए प्रदान की हैं, जो साहित्य जगत के लिए अविस्मरणीय हैं। उनकी लेखनी से लिखी गई अनेक पुस्तकों का प्रकाशन इस ग्रंथमाला से हुआ है, जो भव्यात्माओं के लिए कल्याण का मार्ग प्रशस्त करेंगी। उन्हीं कृतियों में एक नूतन सुंदर कृति ''सोलहकारण विधान'' की रचना हुई है, जिसकी पूजन को करके भक्तजन भक्तिगंगा में डुबकी लगाकर, सोलहकारण भावनाओं की आराधना करके अपने जीवन में विशेष पुण्यार्जन करेंगे। यह विधान आप सबके जीवन में मंगलकारी हो, शांति को प्रदान करे, यही मंगल भावना है।

कहा भी है–

अंधकार है वहाँ, जहाँ आदित्य नहीं है।
निर्बल है वह देश, जहाँ साहित्य नहीं है।।

प्रस्तावना

–आर्यिका सुदृढ़मती

भारत देश में प्राचीन काल से पर्व एवं त्योहारों को मनाने की परम्परा है। यहाँ विभिन्न सम्प्रदाय के लोग निवास करते हैं। जिन्हें स्वतंत्रतापूर्वक अपने पर्वों को मनाने का अधिकार है। पर्व कई प्रकार के हैं, राष्ट्रीय पर्व, धार्मिक पर्व, सामाजिक पर्व। जैनधर्म में भी अनेक पर्वों को मनाने की परम्परा है जो दो प्रकार के हैं– सादि पर्व, अनादि पर्व। अनादिनिधन पर्व वे हैं जिन्हें न किसी ने प्रारंभ किया न जिनका अंत है। सादि पर्व वे हैं जो किसी के द्वारा चलाए गए या व्यक्ति विशेष से संबंधित हैं- दशलक्षण पर्व, सोलहकारण व आष्टान्हिक पर्व अनादि हैं जिन्हें किसी ने नहीं बनाया। इन पर्वों के दिनों में व्रत, उपवास करके भगवान की भक्ति पूजा के माध्यम से भव्य जीव अपने कर्मों की निर्जरा करते हैं और अपनी आत्मा को परम पवित्र कर पुण्य का संचय करते हैं।

सोलहकारण पर्व अनादि निधन पर्व है, जो वर्ष में 3 बार आता है। चैत्र, भाद्रपद और माघ के महीनों में यह व्रत पूरे महीने किया जाता है। कृष्ण पक्ष की एकम् तिथि से पूरे 32 दिन तक यह व्रत किया जाता है। भाद्रपद मास सभी महीनों में श्रेष्ठ माना जाता है इस मास में अनेक व्रत आते हैं इसलिए इस मास में विशेषरूप से व्रतों को करने की परम्परा है। सोलहकारण व्रत भी भाद्रपद की कृष्णा एकम् से शुरू करके आश्विन के कृष्ण पक्ष की एकम् तक करते हैं। दूज को पारणा किया जाता है। साधु और श्रावक दोनों ही इस व्रत को करते हैं। यथाशक्ति कोई पूरे महीने उपवास करके, कोई पारणा एक उपवास से अथवा जघन्य विधि में 1 महीने के एकाशन करके इस व्रत को करते हैं। सोलहकारण व्रत में दर्शनविशुद्धि आदि 16 भावनाओं की दो-दो दिन आराधना करके जाप्य, पूजा करते हुए इनकी प्राप्ति के लिए भावना भाई जाती है क्योंकि 16 कारण भावनाओं के चिंतन से ही जीव तीर्थंकर प्रकृति का बंध करते हैं और आगामी भवों में निर्वाण पद को प्राप्त कर लेते हैं। हमारे प्रथमानुयोग के शास्त्रों में अनेकों उदाहरण हैं, जिनसे ज्ञात होता है कि अनंतों भव्य जीवों ने 16 कारण भावनाओं को भाकर तीर्थंकर प्रकृति का बंध करके अपनी आत्मा का कल्याण किया है। परन्तु वर्तमान में कोई भी जीव तीर्थंकर प्रकृति का बंध नहीं कर सकते क्योंकि यह नियम है कि केवली या श्रुतकेवली के पादमूल में ही 16 कारण भावनाओं को भाकर तीर्थंकर प्रकृति बंधती है। किन्तु फिर भी आगामी भव में इसकी प्राप्ति के लिए हमें इस भव में ही पुरुषार्थ करना होगा और इसके लिए प्रभु की पूजा, भक्ति ही हमारे लिए सशक्त माध्यम है। पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी जो इस बीसवीं सदी की प्रथम बालब्रह्मचारिणी हैं उन्होंने इस युग में सर्वप्रथम अपनी लेखनी चलाकर हमें ज्ञानार्जन एवं भगवान की भक्ति

के लिए विपुल साहित्य प्रदान किया है, जिनमें अनेकों पूजा-विधानों की रचना की है, जिनके माध्यम से भक्त भगवद्भक्ति में तल्लीन होकर असीम पुण्य संचय कर लेते हैं। उन्हीं की शिष्या प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने भी अपनी लेखनी द्वारा अनेक भजन, पूजनों की रचना, हिन्दी, अंग्रेजी में करके भावी पीढ़ी के लिए आधुनिक रूप में प्रदान किया है। सोलहकारण विधान उनमें से उनकी एक नूतन कृति है। इस विधान में पूज्य माताजी ने 17 पूजाएँ बनाई हैं। प्रथम समुच्चय पूजा है। 16 भावनाओं की प्रत्येक की अलग-अलग पूजाएँ हैं, जिनमें क्रम से 41+4+27+19+14+4+12+5+10+12+36+25+15+6+10+4=कुल 244 अर्घ्य हैं और 21 पूर्णार्घ्य हैं। अंत में बड़ी जयमाला के माध्यम से पूज्य माताजी ने सोलहकारण पर्व के कथानक का सुंदर वर्णन किया है कि किस प्रकार गुरु के अविनय से दुर्गति मिलती है और उनकी वैय्यावृत्ति से कर्म निर्जीर्ण हो जाते हैं और दुष्फल भी सुफल में परिवर्तित हो जाते हैं। दर्शनविशुद्धि प्रथम भावना है जो सम्यक्दर्शन के बिना नहीं हो सकती और जब तक दर्शनविशुद्धि नहीं होगी, आगे की भावनाएँ पल नहीं सकती हैं। आचार्यों ने तो यहाँ तक कहा है कि प्रत्येक भावनाओं में सोलहों भावनाएँ निहित हैं। एक भी भावना कम होने से तीर्थंकर प्रकृति का बंध नहीं हो सकता। अतः सभी भावनाओं का अपना विशेष महत्त्व है। मनुष्य पर्याय जो चिंतामणि रत्न के समान अति दुर्लभ है, उसे प्राप्त करके हमें यही भावना भानी है कि मुझे सम्यक्त्व की प्राप्ति हो क्योंकि उसके बिना मुक्ति असंभव है। यह सूक्ति प्रचलित है कि भावना भव नाशिनी होती है। पूज्य माताजी ने भी प्रत्येक अर्घावली के प्रारंभ में यही लिखा है कि–

दोहा – **अर्हद्भक्ति भावना, को निज मन में ध्याय।**
रत्नत्रय आराधना, हेतु पुष्प चढ़ाय।।

और इस रत्नत्रय की प्राप्ति तभी होगी, जब हम सच्चे, देव-शास्त्र-गुरु पर दृढ़ श्रद्धान रखेंगे। पूरे विधान की पूजाओं में यही भाव संजोये गये हैं। जैसे पूजा नं. 1 की जयमाला की पंक्ति में आया है– **देव, शास्त्र, गुरुवर, तीन रत्न सुखकर, सबको यही भव से तारते।**

प्रभु पद की रज ''चंदनामति'' सिर पर लगाना है।
अर्घ्य का थाल ले, प्रभु गुणों की माल ले, पूजा रचना है।। जिनवर.....।।15।।

विधान की प्रत्येक पंक्ति में माताजी ने भक्तिरस भर दिया है, जिसका हर शब्द आत्मसात करने योग्य है। अंत में पूज्य माताजी के शब्दों में ही प्रभु के चरणों में यह प्रार्थना करते हैं कि–

दर्शनविशुद्धि हो, आतम की शुद्धि हो, आगे तीर्थंकर बनके इस जग से मुक्ति हो।
आओ करें मिल आज सोलहकारण पूजा।।

इस विधान की पूजन करके यही मंगल कामना प्रभु के चरणों में करते हैं कि जब तक इस संसार से मुक्ति न हो तब तक इसी प्रकार सच्चे देव, शास्त्र, गुरु की शरण मिलती रहे।

राष्ट्रगौरव, गणिनीप्रमुख, आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

भारत की वसुन्धरा सदैव से तपस्या, त्याग एवं संयम की भूमि रही है। भगवान ऋषभदेव, राम, महावीर की यह भूमि आज भी ऐसे महान व्यक्तित्वों से सुशोभित है कि जो अपने जीवन में ही ऐतिहासिक बन जाते हैं।

ऐसा ही एक महान व्यक्तित्व है– वर्तमान दिगम्बर जैन समाज की सबसे प्राचीन दीक्षित साध्वी-पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी। सन् 1934 में शरदपूर्णिमा के दिन जिला बाराबंकी (उ.प्र.) के टिकैतनगर ग्राम में माता मोहिनी एवं पिता श्री छोटेलाल जैन के दाम्पत्य जीवन के प्रथम पुष्प के रूप में कन्यारत्न 'मैना' का जन्म हुआ। छोटी-सी आयु से ही अपनी माँ की प्रेरणावश जैन ग्रंथों के स्वाध्याय द्वारा इस बालिका ने अपने वैराग्य को भलीभाँति दृढ़ कर लिया और 18 वर्ष की अल्प आयु में शरदपूर्णिमा के दिन ही परिवार के प्रबल विरोध के बावजूद भी आजन्म ब्रह्मचर्यव्रत एवं गृहत्याग के कठिन नियम धारण कर लिये। सन् 1953 में श्री महावीर जी (राज.) अतिशय क्षेत्र पर आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से आपने क्षुल्लिका दीक्षा लेकर 'वीरमती' नाम प्राप्त किया। पुनः 1956 में बीसवीं सदी के प्रथम आचार्य चारित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागर जी महाराज की आज्ञानुसार उनके प्रथम पट्टाधीश शिष्य आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज से माधोराजपुरा (राज.) में आपने आर्यिका दीक्षा लेकर 'ज्ञानमती' नाम प्राप्त किया। ज्ञान प्राप्ति हेतु अध्ययन-अध्यापन एवं स्वाध्याय के प्रति आपकी विशेष अभिरुचि देखकर ही गुरुवर ने आपको यह नाम प्रदान किया था। दीक्षा के प्रारंभिक वर्षों में आपने सर्वप्रथम संस्कृत व्याकरण एवं जैन आगम का तलस्पर्शी ज्ञान प्राप्त किया तथा साथ ही सहस्रनाम मंत्रों की रचनापूर्वक अपनी लेखनी का शुभारंभ भी कर दिया।

57 वर्षों से साधनारत इन महान साध्वी ने अब तक 250 से भी अधिक ग्रंथों का सृजन किया है। संस्कृत, हिन्दी, प्राकृत, कन्नड़ इत्यादि भाषाओं की प्रकाण्ड विदुषी पूज्य माताजी की काव्य प्रतिभा भी अद्वितीय है। जिनेन्द्र भक्ति के रस से भरे हुए न जाने कितनेही पूजन-विधानों की रचना पूज्य माताजी ने अपनी लेखनी द्वारा की है। सन् 1995 में डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय (फैजाबाद) ने पूज्य माताजी की विराट ज्ञान साधना को देखकर जैन इतिहास में प्रथम बार किसी साध्वी को 'डी.लिट्.' की मानद उपाधि प्रदान की।

कर्मठता, दृढ़संकल्प, अनुशासन के साथ-साथ वात्सल्य की प्रतिबिम्ब पूज्य माताजी की प्रेरणा से कौरवों-पाण्डवों की राजधानी हस्तिनापुर (मेरठ-उ.प्र.) में जैन भूगोल की अद्वितीय रचना-'जम्बूद्वीप' का निर्माण हुआ है।

प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की दीक्षा एवं केवलज्ञान कल्याणक भूमि-प्रयाग (इलाहाबाद) में 'तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ' का भव्य निर्माण भी पूज्य माताजी की सृजनशक्ति का ही सुन्दर प्रतिफल है। इसी प्रकार भगवान महावीर जन्मभूमि-कुण्डलपुर (नालंदा) में नंद्यावर्त महल

तीर्थ का भव्य निर्माण पूज्य माताजी की प्रेरणा एवं ससंघ सानिध्य में मात्र 22 माह के अल्प अन्तराल में हुआ है।

2600 वर्ष पूर्व कुण्डलपुर (नालंदा) की जो धरती अहिंसा के अवतार भगवान महावीर के जन्मकल्याणक से महान उत्साह एवं हर्ष को प्राप्त हुई थी वह काल के थपेड़ों से भले ही विस्मृत जैसी हो गयी हो, परन्तु जैन समाज के श्रद्धालुओं का वहाँ जाना हमेशा से जारी रहा और अब पूज्य ज्ञानमती माताजी के महान उपकार स्वरूप यह जन्मभूमि पुनः इस प्रकार जगमगा उठी है कि आने वाला भविष्य सदैव इसकी चमक से प्रभावित रहेगा।

पूज्य माताजी की प्रेरणा से जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982) एवं भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार रथ (1998) का देशव्यापी प्रवर्तन सम्पन्न हुआ एवं कुण्डलपुर से प्रवर्तित भगवान महावीर ज्योति रथ (2003) का प्रवर्तन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ है। इन रथों के द्वारा सम्पूर्ण भारत में अहिंसामयी सिद्धान्तों की व्यापक प्रभावना हुई।

शैक्षणिक क्षेत्र में अनेकानेक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियाँ-सेमिनार इत्यादि पूज्य माताजी की प्रेरणा द्वारा समय-समय पर सम्पन्न हुए हैं। पूज्य माताजी के विराट व्यक्तित्व का अभिनंदन करने के लिए समाज ने उन्हें समय-समय पर युगप्रवर्तिका, चारित्रचन्द्रिका, न्याय प्रभाकर, आर्यिकारत्न, गणिनीप्रमुख, युगनायिका, राष्ट्रगौरव, विश्वविभूति, वाग्देवी, भारतभूषण जैसी उपाधियों से सम्मानित करके स्वयं को गौरवान्वित अनुभव किया है। वर्तमान में महाराष्ट्र प्रान्त के मांगीतुंगी पर्वत पर विश्व की सबसे ऊँची 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा का निर्माण पूज्य माताजी की प्रेरणा से हो रहा है।

24 घंटे में एक बार आहार लेकर, केशलोंच एवं पदविहार जैसी कठिन साधना करते हुए ब्रह्मचर्य एवं चारित्र के तेज को सर्वत्र बिखेरने वाली पूज्य ज्ञानमती माताजी भारतीय संस्कृति की महान धरोहर हैं, जिन्होंने 15 अप्रैल 2006 को अपनी आर्यिका दीक्षा के 50 वर्षों को पूर्ण किया है। 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में पूज्य माताजी की प्रेरणा से आयोजित विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का उद्घाटन भारत की प्रथम महिला राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील के करकमलों से हुआ और सन् 2009 ''शांतिवर्ष'' के रूप में घोषित हुआ। राष्ट्रपति जी ने जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में पधारकर पूज्य माताजी का आशीर्वाद प्राप्त किया।

दीर्घकालीन तपस्विनी ऐसी पूज्यनीया माताजी ने सन् 2009 में अपने जीवन के 75 वर्ष पूर्ण किए जिसे सन् 2008 से 2009 तक राष्ट्रीय स्तर पर ''हीरक जयंती महोत्सव वर्ष'' के रूप में मनाया गया।

वास्तव में आज के कलिकाल में भी आध्यात्मिक ज्ञान, चारित्र, साधना एवं मोक्षपथ को साकार करने वाले गुरुओं का जितना अभिनंदन किया जाये, उतना कम है। जो बिना कुछ कहे अपनी मुद्रा द्वारा ही शांति, संयम, सदाचार का उपदेश देते हैं ऐसे साधु इस भारत वसुन्धरा की शान हैं और हम जैसे जो भी प्राणीगण परमसौभाग्य से उनके चरणों में आश्रय प्राप्त कर लेते हैं, वे भी अपने जीवन को सही अर्थों में सार्थक कर लेते हैं।

ऐसे चतुर्मुखी प्रतिभा की धनी पूज्य माताजी के श्रीचरणों में भावभीना कोटिशः नमन है।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान का परिचय

-पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर

जिस हस्तिनापुर में इस संस्थान द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर कार्य कलाप चल रहे हैं, प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की पारणा, कौरव-पाण्डव की राजधानी, दर्शन प्रतिज्ञा में प्रसिद्ध मनोवती का इतिहास आदि पौराणिक कथानकों से जुड़ी वह हस्तिनापुर नगरी एक ऐतिहासिक एवं पौराणिक नगरी है। **सन् 1972** में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के नाम से दिल्ली में इस संस्था का जन्म हुआ।

सन् 1974 से हस्तिनापुर में निर्माण कार्य प्रारंभ किया गया और अब तक वहाँ अनेक भव्य रचनाएं, मंदिर, कमरे, फ्लैट, कोठियां, भोजनालय, टंकी आदि बन चुके हैं। निर्माण के अतिरिक्त संस्थान के द्वारा शिक्षा एवं धर्म प्रचार-प्रसार हेतु शिक्षण शिविर, सेमिनार, अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार, सम्मेलन आदि के आयोजन भी होते रहते हैं। पूज्य माताजी एवं आर्यिका श्री चंदनामती माताजी द्वारा लिखित चारों अनुयोगों एवं धर्मप्रभावना के समाचारों से सहित सम्यग्ज्ञान मासिक पत्रिका का प्रकाशन **सन् 1974** से बराबर निर्बाध गति से चल रहा है। संस्थान के अंतर्गत ही **सन् 1972** में स्थापित वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला से **300** से भी अधिक ग्रंथ लाखों की संख्या में प्रकाशित हो चुके हैं। यहां जम्बूद्वीप पुस्तकालय, णमोकार महामंत्र बैंक, गणिनी ज्ञानमती शोधपीठ आदि के द्वारा धार्मिक शैक्षणिक एवं पारमार्थिक कार्यक्रम चलते रहते हैं। सन् 1975 से प्रारंभपंचकल्याणकों में अब तक अनेक पंचकल्याणक प्रतिष्ठाएं एवं प्रति 5 वर्षों में होने वाले जम्बूद्वीप महामहोत्सव में से 4 महोत्सव हो चुके हैं। इस संस्थान द्वारा जहाँ पूज्य माताजी की प्रेरणा से सन् 1982में दिल्ली से स्व. प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा उद्घाटित जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति रथ का 1045 दिनों तक सम्पूर्ण भारत में भ्रमण एवं हस्तिनापुर में उसकी अखण्ड स्थापना हुई, सन् 1998 में प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा उद्घाटित भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार द्वारा अहिंसामयी सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार हुआ। वहीं भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) से महामहिम राज्यपाल बिहार प्रान्त द्वारा प्रवर्तित **''भगवान महावीर ज्योति''** रथ के भारत भ्रमण से जनमानस भगवान महावीर के विषय में आगमसम्मत ज्ञान से परिचित हुआ है। जम्बूद्वीप स्थल पर समय-समय पर भव्य दीक्षाएं भी सम्पन्न हुई हैं। इसी संस्थान द्वारा दिल्ली के लालकिला मैदान में 4 फरवरी सन् 2000 को प्रधानमंत्री श्री वाजपेयी द्वारा उद्घाटित ''भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव'' सम्पूर्ण देश एवं विदेशों में मनाया गया। जिसके अंतर्गत अनेक संगोष्ठियाँ, भगवान ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ निर्माण आदि कार्यक्रम हुए। सन् 2000-2001 में संस्थान द्वारा पूज्य माताजी की प्रेरणा से भगवान ऋषभदेव की दीक्षा एवं केवलज्ञान भूमि प्रयाग-इलाहाबाद में बनारस हाइवे पर **''तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षातीर्थ''** का नवनिर्माण हुआ है तथा 6 अप्रैल सन् 2001 को ही प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा उद्घाटित राष्ट्रीय स्तर पर सम्पूर्ण भारतवर्ष में मनाए जाने वाले भगवान महावीर 2600वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव वर्ष में

पूज्य माताजी द्वारा रचित ''विश्वशांति महावीर विधान'' का विराट आयोजन प्रथम राष्ट्रीय आयोजन के रूप में राजधानी दिल्ली के फिरोजशाह कोटला मैदान में अक्टूबर 2001 में सम्पन्न हुआ। उसी जन्मकल्याणक महोत्सव के अंतर्गत सन् 2003-2004 में संस्थान द्वारा पूज्य माताजी की प्रेरणा से भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर का विकास कार्य द्रुतगति से हुआ है। ''नंद्यावर्त महल'' नामक तीर्थ परिसर वहाँ का विशेष दर्शनीय स्थल पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र है।

कुण्डलपुर विकास संपन्न होने के पहले ही पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने आगामी वर्ष 2005 को ''भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव वर्ष'' के रूप में मनाने का सारे देश को आह्वान किया और प्रेरणा दी। तदुपरांत पूज्य माताजी ससंघ ने कुण्डलपुर से 14 नवम्बर 2004 को भगवान पार्श्वनाथ की जन्मभूमि बनारस के लिए विहार किया और पूज्य माताजी के सानिध्य में बनारस में भगवान पार्श्वनाथ की जन्मजयंती 6 जनवरी 2005 को इस पार्श्वनाथ महोत्सव वर्ष का जोर-शोर के साथ सारे देश की जनता के बीच उत्तरप्रदेश के लोक निर्माण मंत्री-श्री शिवपाल सिंह यादव एवं अन्य अतिथियों द्वारा उद्घाटन किया गया। इस महोत्सव वर्ष के अंतर्गत सर्वप्रथम लम्बे समय से प्रतीक्षित भगवान श्रेयांसनाथ की जन्मभूमि सिंहपुरी-सारनाथ में उनकी विशाल प्रतिमा का पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। तदुपरांत टिकैतनगर में भगवान महावीर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में पधारे उत्तरप्रदेश के लोकप्रिय मुख्यमंत्री माननीय श्री मुलायम सिंह यादव ने भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर 'पार्श्वनाथ वर्ष' का शुभारंभ किया और भगवान पार्श्वनाथ की वह प्रतिमा ''पार्श्वनाथ दि. जैन इण्टर कालेज'' के परिसर में स्थापित की गई है। इसी शृंखला में सारे देश में 3 वर्ष तक भगवान पार्श्वनाथ तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव विविध आयोजनों के साथ मनाया गया, जिसका समापन भगवान पार्श्वनाथ की केवलज्ञान भूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तिखाल वाले बाबा के महामस्तकाभिषेकपूर्वक 4 जनवरी 2008 को हुआ।

21 दिसम्बर 2008 का दिवस संस्थान के लिए विशेष गौरवपूर्ण एवं ऐतिहासिक रहा, जब गणतंत्र भारत की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटिल पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का शुभाशीर्वाद लेने जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर पधारीं और विश्वशाति अहिंसा सम्मेलन का उद्घाटन किया।

इस प्रकार आप सबके सहयोग से संचालित हो रहा दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान अपनी चतुर्मुखी योजनाओं से समाज को सदैव लाभान्वित करता रहे यही मंगल कामना है।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के सहयोगी

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत ''वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला'' की स्थापना सन् 1972 में हुई। तब से अब तक लाखों की संख्या में ग्रन्थों का प्रकाशन हो चुका है और निरन्तर हो रहा है। ग्रंथमाला से पाठकों को ग्रन्थ कम कीमत में प्राप्त हो सकें, इस दृष्टि से ग्रन्थमाला में एक संरक्षक योजना अगस्त सन् 1990 से प्रारंभ की गई है। इस योजना के अन्तर्गत निम्न महानुभाव अब तक संरक्षक बनकर अपना सहयोग प्रदान कर चुके हैं।

शिरोमणि संरक्षक

1. **श्रीमती निर्मला जैन ध.प. स्व. श्री प्रेमचन्द्र जैन, तत्पुत्र प्रदीप कुमार जैन, खारी बावली, दिल्ली-6।**
2. **श्रीमती सुमन जैन ध.प. श्री दिग्विजय सिंह जैन, इंदौर।**
3. **श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, जी-19, साऊथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली।**
4. **श्री महेन्द्र पाल हरेन्द्र कुमार जैन, सूरजमल विहार, दिल्ली।**
5. **श्रीमती मोहनी जैन ध.प. श्री सुनील जैन, प्रीत विहार, दिल्ली।**
6. **श्री देवेन्द्र कुमार जैन (धारूहेड़ा वाले) गुड़गाँव (हरि.)।**
7. **श्रीमती शारदा रानी जैन ध.प. स्व. रिखबचंद जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।**
8. **डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)**
9. **श्रीमती संगीता जैन ध.प. श्री संजीव कुमार जैन, शेरकोट (बिजनौर) उ.प्र.**
10. **श्री अनिल कुमार जैन, दरियागंज, दिल्ली**
11. **श्री बी.डी. मदनाइक, मुम्बई**
12. **श्री धनकुमार जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।**
13. **श्री जितेन्द्र कुमार जैन एवं श्रीमती सुनीता जैन कोटड़िया, फ्लोरिडा, यू.एस.ए.**
14. **श्रीमती विमला देवी जैन ध.प. श्री ओमप्रकाश जैन, स्वालिक नगर, हरिद्वार (उत्तरखंड)।**
15. **श्री अमित जैन एवं संभव जैन सुपुत्र श्रीमती अनीता जैन ध.प. श्री मूलचंद जैन पाटनी, दिसपुर (कामरूप) आसाम।**
16. **श्रीमती अजित कुमारी जैन ध.प. श्री महेन्द्र कुमार जैन, ओबेदुल्लागंज (रायसेन) म.प्र.।**
17. **श्री नाभिकुमार जैन, जैन बुक डिपो, सी-4, पी.वी.आर. प्लाजा के पीछे, कनॅट प्लेस, नई दिल्ली।**

परम संरक्षक

1. **श्री माँगीलाल बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।**
2. **डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन, 792 विवेकानंदपुरी, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।**
3. **श्री सुमत प्रकाश जैन, गज्जू कटरा, शाहदरा, दिल्ली।**
4. **श्री सुनील कुमार जैन, द्वारा-सुनील टैक्सटाईल्स, सरधना (मेरठ) उ.प्र.।**
5. **स्व. श्री प्रकाश चंद अमोलक चंद जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।**

6. श्री प्रद्युम्न कुमार जवेरी, रोकड़ियालेन, बोरीवली (वेस्ट) मुंबई।
7. श्रीमती उर्मिला देवी ध.प. श्री कान्ती प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
8. श्रीमती उषा जैन ध.प. श्री विमल प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
9. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) , गांधीनगर, दिल्ली।
10. श्रीमती सरिता जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन, किदवई नगर, कानपुर।
11. स्व. श्रीमती कैलाशवती ध.प. श्री कैलाश चन्द्र जैन , तोपखाना बाजार, मेरठ।
12. श्री भानेन्द्र कुमार जैन, द्वारा-श्री विद्या जैन, भगत सिंह मार्ग, जयपुर।
13. श्री प्रदीप कुमार शान्तिलाल बिलाला, अनूपनगर, इंदौर, (म.प्र.)।
14. श्री सुरेशचंद पवन कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
15. श्री नथमल पारसमल जैन, कलकत्ता-7।
16. श्रीमती स्व. शांताबाई ध.प. श्री कमलचंद जैन, सनावद (म.प्र.)।
17. श्री रूपचंद जैन कटारिया, दिल्ली
18. श्री आशु जैन, कालका जी, नई दिल्ली

संरक्षक

1. स्व. श्री अनन्तवीर्य जैन एवं स्व. श्रीमती आदर्श जैन के सुपुत्र श्री मनोज कुमार जैन, मेरठ।
2. श्रीमती राजूबाई मातेश्वरी श्री शिखर चन्द भाई देवेन्द्र कुमार लखमी चन्द जैन, सनावद (म.प्र.)।
3. श्री चिमनलाल चुन्नीलाल दोशी, कीका स्ट्रीट, मुम्बई।
4. श्रीमती अरुणाबेन मन्नूभाई कोटड़िया, सी.पी. टैंक रोड, मुम्बई।
5. श्रीमती ताराबेन चन्दूलाल दोशी, फ्रेन्च ब्रिज, मुम्बई।
6. श्री रतिलाल चुन्नीलाल दोशी, मुम्बई।
7. स्व. श्रीमती मथुराबाई खुशाल चन्द्र जैन, द्वारा-श्री रतन चन्द खुशाल चन्द्र गाँधी के सुपुत्र श्री धन्य कुमार, अशोक कुमार, शिरीश कुमार, धर्मराज गाँधी फलटन (महा.)।
8. श्री शांतिलाल खुशाल चन्द गाँधी, फलटन (सातारा) महा.।
9. श्री अनन्त लाल फूलचन्द फड़े, अकलूज (सोलापुर) महा.।
10. श्री हीरालाल माणिकलाल गाँधी, अकलूज (सोलापुर) महा.।
11. श्री जयकुमार खुशालचंद गाँधी, अकलूज (सोलापुर) महा.।
12. श्रीमती बदामी देवी मातेश्वरी श्री पदम कुमार जैन गंगवाल, कानपुर (उ.प्र.)।
13. श्रीमती कमलादेवी ध.प. स्व. श्री महेन्द्र कुमार जैन, घण्टे वाले हलवाई, दरियागंज, दिल्ली।
14. श्रीमती उषादेवी ध.प. श्री श्रवण कुमार जैन, चावड़ी बाजार, दिल्ली।
15. श्री मुकेश कुमार जैन, कटरा शहंशाही, चाँदनी चौक, दिल्ली।
16. श्री हुकमीचंद मांगीलाल शाह, धानमंडी, उदयपुर (राज.)
17. श्री किरण चन्द्र जैन, कटरा धूलियान, चाँदनी चौक, दिल्ली।
18. श्रीमती विमलादेवी ध.प. श्री महावीर प्रसाद जैन इंजी. विवेक विहार, दिल्ली
19. श्रीमती उषादेवी ध.प. श्री अशोक कुमार जैन (खेकड़ा निवासी), बहराइच (उ.प्र.)।
20. श्रीमती लीलावती ध.प. श्री हरीश चन्द्र जैन, शकरपुर, दिल्ली।

21. श्री दुलीचन्द जैन, बाहुबली एन्कलेव, दिल्ली।
22. श्री रतिलाल केवलचन्द गाँधी की पुण्य स्मृति में, पापुलर परिवार, सूरत (गुज.)।
23. श्रीमती भंवरीदेवी ध.प. श्री सदासुख जैन पांड्या की समृति में इन्दर चन्द सुमेरमल जैन पांड्या, शिलांग (मेघालय)।
24. श्रीमती सोहनीदेवी ध.प. श्री तनसुखराय सेठी, फैन्सी बाजार, गौहाटी (आसाम)।
25. श्रीमती धापूबाई ध.प. श्री कस्तूर चन्द जैन, रामगंज मण्डी (राज.)।
26. श्री मिट्ठनलाल चन्द्रभान जैन, कविनगर गाजियाबाद (उ.प्र.)।
27. श्रीमती शकुन्तलादेवी ध.प. श्री सुरेशचंद जैन (बर्तन वाले), खुड़बुड़ा मोहल्ला, देहरादून (उ.प्र.)।
28. श्री देवेन्द्र कुमार गुणवन्त कुमार टोंग्या, बड़नगर (म.प्र.)।
29. श्री दिगम्बर जैन समाज, तहसील फतेहपुर (बाराबंकी) उ.प्र.।
30. श्री मन्नालाल रामलाल जैन डूंगरवाला, भानपुरा (मन्दसौर) म.प्र.।
31. श्री इन्दर चन्द कैलाश चंद चौधरी, सनावद (म.प्र.)।
32. स्व. श्री प्रकाश चन्द अमोलक चन्द जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
33. स्व. श्री विमल चन्द जैन, रखबचन्द दसरथ सा, सनावद (म.प्र.)।
34. श्री आजाद कुमार जैन शाह (सनावद वाले), इन्दौर (म.प्र.)।
35. श्रीमती सुषमा जैन ध.प. श्री राकेश कुमार जैन, मवाना (मेरठ) उ.प्र.।
36. श्रीमती कुसुम जैन ध.प. श्री रमेशचन्द जैन, किशनपुरी, बागपत रोड, मेरठ।
37. श्रीमती किरण जैन ध.प. श्री पदम प्रसाद जैन एडवोकेट, मेरठ (उ.प्र.)।
38. श्रीमती विमलादेवी ध.प. श्री जिनेन्द्रप्रसाद जैन ठेकेदार, टोडरमल रोड, नई दिल्ली।
39. श्रीमती क्षमादेवी जैन, मधुबन, दिल्ली।
40. श्रीमती कमलादेवी ध.प. श्री राजेन्द्र कुमार जैन टोडरका, ठाणे (महा.)।
41. श्री अजित प्रसाद जैन बब्बेजी, श्री राजकुमार श्रवण कुमार जैन, लखनऊ।
42. श्री प्रभा चन्द गोधा, 45 भगत वाटिका, सिविल लाइन, जयपुर-6 (राज.)।
43. श्री गोपीचन्द विपिन कुमार जैन, सरधना टैन्ट हाउस, गंजमंडी, सरधना।
44. श्रीमती रतनसुन्दरी देवी ध.प. श्री वीरचन्द जैन (चिकन वाले), चूड़ीवाली गली, चौक बाजार, लखनऊ।
45. डॉ. सुभाषचन्द जैन, रातानाड़ा क्लीनिक, रातानाड़ा बाजार, जोधपुर (राज.)।
46. श्री प्रमोद कुमार जैन (मुजफ्फरनगर वाले) 35 एच.वी.रोड, न्यू मार्केट, थरपकनाग़ांची (बिहार)।
47. श्री विजेन्द्र कुमार जैन, के.-1/20 मॉडल टाउन, दिल्ली।
48. श्री कैलाश चंद जैन, 45 भगत वाटिका, सिविल लाइन, जयपुर (राज.)।
49. श्री सुभाषचंद जैन, श्री दि. जैन पार्श्वनाथ चैत्यालय, 405 डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली।
50. श्री सुभाष चन्द जैन सर्राफ, टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.।
51. श्री चन्द्रसेन जैन, द्वारा-सुमेरचन्द, चन्द्रसेन जैन, सब्जी मण्डी, नहटौर (बिजनौर)।
52. श्री सुधीर कुमार जैन जे.ई., नन्द किशोर जैन, शारदा नहर खण्ड, शाहजहाँपुर।
53. श्री सुकुमालचंद जैन, मोती ट्रेडिंग कम्पनी, टी.आर. फुकन रोड, फैन्सी बाजार, गौहाटी।
54. श्री अनिल पुलकित सेठी, बी 1/122, फेज-2, अशोक विहार, दिल्ली-110052।

55. श्री चन्द्रमोहन बंसल, 11, पूसा रोड, करोलबाग, नई दिल्ली-5।
56. श्री गिरधर प्रसाद आमोद प्रसाद जैन, जैन वस्त्रालय, काली मार्केट, सिवान (बिहार)।
57. श्री सतीश चन्द जैन, 31 सिविल लाइन, म.नं.-10, सेक्टर-2, टाइप-5 झांसी।
58. श्री स्वरूप चन्द कासलीवाल, नया बाजार, अजमेर (राज.)।
59. श्री हुलास चन्द सेठी, अयोध्या शुगर मिल्स, राजा का सहसपुर, बिलारी (उ.प्र.)।
60. श्रीमती किरण देवी जैन ध.प. श्री नरेन्द्र कुमार जैन, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
61. श्रीमती संतोष जैन ध.प. श्री प्रवीण कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
62. श्री सूरजमल पुत्र श्री विनीत कुमार जैन, मोहल्ला गंजकटरा पूरणटरा पूरणजाट, जैन विला, मुरादाबाद (उ.प्र.)।
63. स्व. श्री शिखर चन्द जैन, 'टिम्बर कमीशन एजेन्ट', शंकरगंज, हापुड़ (उ.प्र.)।
64. श्रीमती राजेश्वरी जैन मातेश्वरी श्री राकेश जैन 31, सिविल लाईन, सीतापुर।
65. श्री राजकुमार जैन, मैसर्स रविदत्त प्रेमचन्द जैन बारदाने वाले, श्यामगंज, बरेली।
66. श्री बलवीर जैन, द्वारा-जानकी एक्सटेंशन रिफाइनरी, गाँधीगंज, शाहजहाँपुर।
67. श्री पन्नालाल सेठी, डीमापुर (नागालैंड)।
68. श्री वीरेन्द्र कुमार जैन, ईदगाह कालोनी, आगरा (उ.प्र.)।
69. श्री पोखपाल जैन, द्वारा-नावेल्टी मेटल इंडिया, मानसिंह गेट, अलीगढ़ (उ.प्र.)।
70. श्रीमती रश्मि जैन ध.प. श्री विजय कुमार जैन, दरियागंज, नई दिल्ली।
71. श्रीमती विमला देवी ध.प. श्री प्रमोद कुमार जैन इंजी., शाहजहाँपुर (उ.प्र.)।
72. स्व. श्रीमती कैलाशवती जैन ध.प. श्री कैलाश चन्द जैन इंजी., तोपखाना बाजार, मेरठ।
73. श्रीमती अरुण कुमार नांद्रेकर ध.प. भाऊ साहेब नांद्रेकर, मुलुन्ड (वेस्ट) मुम्बई।
74. श्री भागचन्द मनीष कुमार ठोलिया, द्वारा-किरन एजेंसी, पो. बुरहानपुर, (म.प्र.)।
75. श्री कैलाशचन्द राजकुमार जैन रावंका, पो. बिसवां (सीतापुर) उ.प्र.।
76. श्रीमती विद्यावती जैन, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली।
77. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) एवं सुपुत्र श्री मदन कुमार, प्रदीप कुमार एवं प्रवीण कुमार जैन, धर्मपुरा, गाँधीनगर, दिल्ली।
78. श्रीमती अरुणा जैन, ध.प. प्रवीन्द्र कुमार जैन, प्रीतमपुरा, दिल्ली।
79. श्रीमती पुष्पादेवी, ध.प. महेन्द्र कुमार जैन, पुष्पांजली एन्क्लेव, दिल्ली।
80. श्री बाबूलाल तोताराम जैन, भुसावल (महा.)।
81. डॉ. अनुपम जैन, सुदामा नगर, इंदौर (म.प्र.)।
82. श्री विनय कुमार जैन, ज्वैलर्स, दरीबाकलां, दिल्ली।
83. स्व. श्री आनन्द प्रकाश जैन 'शान्तिप्रिय', जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.।
84. श्रीमती राजुलबाई ध.प. श्री नेमीचन्द जैन लोहाड़े, पो. कोपरगाँव (महा.)।
85. श्री धन्नालाल गोधा, मल्हारगंज, इंदौर (म.प्र.)।
86. श्री सुनील कुमार मनोज कुमार जैन, झिलमिल कालोनी, दिल्ली।
87. श्रीमती आशा जैन ध.प. श्री राजेश कुमार जैन बरुआ सागर (उ.प्र.)।

88. श्री पारसमल डूंगरमल जी पाटनी पो. मेड़तासिटी, नागौर (राजस्थान)।
89. श्री अनिल कुमार जैन (गुड़गांव वाले) प्रियदर्शनी विहार, दिल्ली-92।
90. श्रीमती कृष्णा बाई नेमीनाथ जैन, पी. वाले, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
91. श्रीमती मंजूलता जैन ध.प. श्री प्रभात चन्द गोधा, नया बाजार, अजमेर (राज.)।
92. श्री प्रमोद कुमार जैन, पारस प्रिन्टर्स, शाहदरा-दिल्ली।
93. श्री चांदमल अनिल कुमार सरावगी, किशनगंज (बिहार)।
94. कुमारी अदिती सुपुत्री श्री अपोलो जी जैन सौगानी, इंदौर।
95. श्रीमती मंजूलता ध.प. प्रभाचन्द गोधा-नया बाजार, अजमेर।
96. श्री सुचेन्द्र कुमार शैलेन्द्र कुमार जैन, डाल्टनगंज (झारखंड)।
97. श्रीमती जतनदेवी लक्ष्मीचंद जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)।
98. श्रीमती सखाई जैन ध.प. श्री जीतमल जैन, मड़ाना (कोटा) राज.।
99. श्री मोहित जैन पुत्र मुकेश जैन, जगन्नाथ जैन पहाड़िया, फतेहपुर (शेखावटी) राज.।
100. श्री नरेश जैन बंसल, गुड़गाँवा (हरि.)।
101. श्रीमती रतनबाई ध.प. राजेन्द्र प्रकाश कोठिया, कोटा (राज.)।
102. श्रीमती संतोष जैन ध.प. श्री अजीत कुमार जैन, भिवाड़ी (राज.)।
103. श्रीमती प्रेमलता जैन ध.प. श्री सुशील कुमार जैन, मलाड़ (मुम्बई)।
104. श्री राजेन्द्र कुमार पंचौलिया, इंदौर (म.प्र.)।
105. स्व. श्री मोहनलाल हेमचंद गांधी, सतारा (महा.)।
106. श्रीमती आरती जैन ध.प. श्री प्रकाशचंद जैन 'शीशे वाले', इलाहाबाद (उ.प्र.)
107. डॉ. विमला जैन ''विमल'' ध.प. श्री प्रकाशचंद जैन, फिरोजाबाद (उ.प्र.)

विशेष स्मरणीय अवसर

सोलहकारण पर्व के अन्तर्गत सन् 1952 में भाद्रपद कृष्णा चतुर्थी – शनिवार, दिनाँक 9 अगस्त 1952 को गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी कु. मैना के रूप में टिकैतनगर के श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर की मूलवेदी में विराजमान अतिशयकारी भगवान पार्श्वनाथ के समक्ष यह संकल्प लेकर घर से निकलीं कि मैं पिच्छिका लेकर ही (दीक्षा लेकर) इस नगरी में पुनः आऊँ, उनका वह संकल्पपूर्ण हुआ अर्थात् उसके बाद वे मैना के रूप में टिकैतनगर कभी नहीं गईं, दीक्षा लेकर ही वे वहाँ गईं और सोलहकारण पर्व उनके जीवन में साकार हो गया। अतः उसी संकल्प दिवस – भाद्रपद कृष्णा चतुर्थी के उपलक्ष्य में इस सोलहकारण विधान का प्रकाशन करते हुए हमें गौरव का अनुभव हो रहा है।

विषयानुक्रमणिका

क्र.	पूजा	पृष्ठ नं.
1.	समुच्चय पूजा	1
2.	दर्शनविशुद्धि भावना पूजा	7
3.	विनयसम्पन्नता भावना पूजा	21
4.	शीलव्रतेष्वनतिचार भावना पूजा	25
5.	अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग भावना पूजा	35
6.	संवेगभावना पूजा	43
7.	शक्तितस्त्यागभावना पूजा	50
8.	शक्तितस्तपो भावना पूजा	54
9.	साधुसमाधि भावना पूजा	61
10.	वैय्यावृत्त्य भावना पूजा	66
11.	अर्हद्भक्ति भावना पूजा	72
12.	आचार्यभक्ति भावना पूजा	78
13.	बहुश्रुतभक्ति भावना पूजा	89
14.	प्रवचनभक्ति भावना पूजा	98
15.	आवश्यकापरिहाणि भावना पूजा	105
16.	मार्गप्रभावना भावना पूजा	112
17.	प्रवचनवात्सल्य भावना पूजा	119
18.	बड़ी जयमाला	125
19.	प्रशस्ति	129
20.	आरती	131
21.	भजन	132
22.	षोडशकारण व्रत	133
21.	विधान के मण्डल का नक्शा	136

समर्पण

जिन्होंने सोलहकारण भावनाओं को अपने जीवन में
साकार करने के पुरुषार्थरूप
भाद्रपद कृष्णा चतुर्थी-९ अगस्त १९५२, शनिवार को घर से
निकलने का पहला संकल्पित कदम बढ़ाया, पुनः सन् १९५३ में
चैत्र मास के सोलहकारण पर्व के प्रथम दिवस
क्षुल्लिका दीक्षा धारण कर अपने संकल्प
को दृढ़तापूर्वक साकार किया पुनः सन् १९५५ में
भाद्रपद सोलहकारण पर्व में कुंथलगिरि सिद्धक्षेत्र पर
प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर महाराज
की अंतिम सल्लेखना देखकर अपने
मानव जीवन को सफल किया तथा
उन्हीं गुरुदेव के आदेशानुसार उनके प्रथम पट्टशिष्य
आचार्य श्री वीरसागर महाराज
की शिष्यता स्वीकार करके चैत्र मास के सोलहकारण पर्व के
समापन अवसर पर वैशाख कृष्णा दूज को
आर्यिका दीक्षा धारण कर ज्ञानमती नाम से अलंकृत होकर
अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग भावना को अतिशयरूप में
अपनाकर अपने नाम को सार्थक किया
ऐसी युगनायिका सर्वप्राचीन दीक्षित
आर्यिकाशिरोमणि गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी
के करकमलों में सोलहकारण पर्व
शुभारंभ- २० मार्च २०११ को लिखकर पूर्ण किये गये
सोलहकारण विधान
नामक भक्ति काव्यकृति को समर्पित
करके सोलहकारण भावनाओं को अपने रत्नत्रयमय जीवन में
आने हेतु आशीर्वाद की भावना के साथ-

भाद्रपद कृ. चतुर्थी
17 अगस्त 2011

आर्यिका चंदनामती

सोलहकारण पूजा

(समुच्चय पूजा)

तर्ज –अब ना छुपाऊँगा.....

दर्शनविशुद्धि हो, आतम की शुद्धि हो, आगे तीर्थंकर बनके, इस जग से मुक्तिहो
आओ करें मिल आज सोलहकारण पूजा-2।।टेक.।।
जो सोलह भावना भाते, वे तीर्थंकर बन जाते।।
केवलि श्रुतकेवलि पद में, ऐसे स्वर्णिम क्षण मिलते।।
भावों की शुद्धि हो, निजगुण की वृद्धि हो, आगे तीर्थंकर बनके इस जग सेमुक्ति हो,
आओ करें मिल आज सोलहकारण पूजा।।1।।

आह्वानन स्थापन है, पूजन का सन्निधापन है।।
पुष्पांजली समर्पण है, प्रभु चरणों में वन्दन है।।
भावों की शुद्धि हो, निजगुण की वृद्धि हो, आगे तीर्थंकर बनके इस जग सेमुक्ति हो,
आओ करें मिल आज सोलहकारण पूजा।।2।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणानि! अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणानि! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणानि! अत्र मम सन्निहिता भवत भवत वषट् सन्निधीकरणं।

–अष्टक –

दर्शन विशुद्धि हो, आतम की शुद्धि हो, आगे तीर्थंकर बनके इस जग से मुक्तिहो
आओ करें मिल आज सोलहकारण पूजा-2।।टेक.।।
जल का स्वर्ण कलश लेकर, धार करूँ तीर्थंकर पद।
जन्म जरा मृत्यु क्षय हों, मानव जीवन सुखमय हो।।
भावों की शुद्धि हो, निजगुण की वृद्धि हो, आगे तीर्थंकर बनके इस जग सेमुक्ति हो,
आओ करें मिल आज सोलहकारण पूजा।।1।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन विशुद्धि हो, आतम की शुद्धि हो, आगे तीर्थंकर बनके इस जग से मुक्तिहो
आओ करें मिल आज सोलहकारण पूजा-2।।टेक.।।
शुद्ध सुगंधित केशर ले, जिनवर पद में चर्चूं मैं।
भव आताप मेरा क्षय हो, मानव जीवन सुखमय हो।।
भावों की शुद्धि हो, निजगुण की वृद्धि हो, आगे तीर्थंकर बनके इस जग सेमुक्ति हो,
आओ करें मिल आज सोलहकारण पूजा।।2।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन विशुद्धि हो, आतम की शुद्धि हो, आगे तीर्थंकर बनके इस जग से मुक्तिहो
आओ करें मिल आज सोलहकारण पूजा-2।।टेक.।।
मोती सम अक्षत लेकर, पुंज धरूँ मैं जिनवर पद।
मम आतम सुख अक्षय हो, मानव जीवन सुखमय हो।।
भावों की शुद्धि हो, निजगुण की वृद्धि हो, आगे तीर्थंकर बनके इस जग सेमुक्ति हो,
आओ करें मिल आज सोलहकारण पूजा।।3।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन विशुद्धि हो, आतम की शुद्धि हो, आगे तीर्थंकर बनके इस जग से मुक्तिहो
आओ करें मिल आज सोलहकारण पूजा-2।।टेक.।।

कुंद कमल पुष्पों को ले, जिनवर सम्मुख अर्पूं मैं।
मेरी काम व्यथा क्षय हो, मानव जीवन सुखमय हो।।
भावों की शुद्धि हो, निजगुण की वृद्धि हो, आगे तीर्थंकर बनके इस जग से मुक्ति हो,
आओ करें मिल आज सोलहकारण पूजा।।4।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन विशुद्धि हो, आतम की शुद्धि हो, आगे तीर्थंकर बनके इस जग से मुक्तिहो
आओ करें मिल आज सोलहकारण पूजा-2।।टेक.।।
खाजे पूरनपोली ले, प्रभु पूजन में चढ़ाऊँ मैं।
मेरा रोग क्षुधा क्षय हो, मानव जीवन सुखमय हो।।
भावों की शुद्धि हो, निजगुण की वृद्धि हो, आगे तीर्थंकर बनके इस जग से मुक्ति हो,
आओ करें मिल आज सोलहकारण पूजा।।5।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन विशुद्धि हो, आतम की शुद्धि हो, आगे तीर्थंकर बनके इस जग से मुक्तिहो
आओ करें मिल आज सोलहकारण पूजा-2।।टेक.।।
घृत का इक लघु दीपक ले, प्रभु की आरति कर लूँ मैं।
मेरा मोह तिमिर क्षय हो, मानव जीवन सुखमय हो।।
भावों की शुद्धि हो, निजगुण की वृद्धि हो, आगे तीर्थंकर बनके इस जग से मुक्ति हो,
आओ करें मिल आज सोलहकारण पूजा।।6।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन विशुद्धि हो, आतम की शुद्धि हो, आगे तीर्थंकर बनके इस जग से मुक्तिहो
आओ करें मिल आज सोलहकारण पूजा-2।।टेक.।।
गंध सुगंधित धूप लिया, प्रभू पूजन में चढ़ा दिया।
अष्टकर्म मेरे क्षय हों, मानव जीवन सुखमय हो।।

भावों की शुद्धि हो, निजगुण की वृद्धि हो, आगे तीर्थंकर बनके इस जग से मुक्ति हो,
आओ करें मिल आज सोलहकारण पूजा।।7।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन विशुद्धि हो, आतम की शुद्धि हो, आगे तीर्थंकर बनके इस जग से मुक्तिहो
आओ करें मिल आज सोलहकारण पूजा-2।।टेक.।।
सेव व आम अनार लिया, प्रभु पूजन में चढ़ा दिया।
मोक्ष मिले दुख का क्षय हो, मानव जीवन सुखमय हो।।
भावों की शुद्धि हो, निजगुण की वृद्धि हो, आगे तीर्थंकर बनके इस जग से मुक्ति हो,
आओ करें मिल आज सोलहकारण पूजा।।8।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन विशुद्धि हो, आतम की शुद्धि हो, आगे तीर्थंकर बनके इस जग से मुक्तिहो
आओ करें मिल आज सोलहकारण पूजा-2।।टेक.।।
अर्घ्य चढ़ा प्रभु पूजन की, भाव हैं ये ''चन्दनामती''।
मिले अनघ पद दुख क्षय हों, मानव जीवन सुखमय हो।।
भावों की शुद्धि हो, निजगुण की वृद्धि हो, आगे तीर्थंकर बनके इस जग से मुक्ति हो,
आओ करें मिल आज सोलहकारण पूजा।।9।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

–दोहा–

शांतीधारा के लिए, लिया है प्रासुक नीर।
सोलह भावन भाय के, हो जाऊँ भव तीर।।10।।

शांतये शांतिधारा।

पुष्पांजलि के हेतु मैं, पुष्प सुगंधित लाय।
सोलहकारण पर्व में, गुण उपवन खिल जाय।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।।

जाप्य मंत्र–**ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणभावनाभ्यो नमः।**

जयमाला

–शेरछंद–

जय जय प्रभो! दर्शनविशुद्धि भावना भाऊँ।
आत्मा को शुद्ध करके गुण के पुष्प खिलाऊँ।।
हे नाथ! कृपा करके मुझे शक्ति दीजिए।
सोलह सुभावना के लिए युक्ति दीजिए।।1।।

पहली जो है दर्शनविशुद्धि भावना कही।
अष्टांग सहित दोष रहित देती शिवमही।।
हे नाथ! कृपा करके मुझे शक्ति दीजिए।
सोलह सुभावना के लिए युक्ति दीजिए।।2।।

दूजी विनयसम्पन्नता सिखलाती विनय को।
अतिचार रहित शीलव्रत है पालना सबको।।
हे नाथ! कृपा करके मुझे शक्ति दीजिए।
सोलह सुभावना के लिए युक्ति दीजिए।।3।।

चौथी अभीक्ष्ण ज्ञान में उपयोग कराती।
संवेग भावना जगत् से राग हटाती।।
हे नाथ! कृपा करके मुझे शक्ति दीजिए।
सोलह सुभावना के लिए युक्ति दीजिए।।4।।

निज शक्ति के अनुसार त्याग भावना भाएँ।
शक्ती के ही अनुसार तपस्या भी बढ़ाएँ।।
हे नाथ! कृपा करके मुझे शक्ति दीजिए।
सोलह सुभावना के लिए युक्ति दीजिए।।5।।

फिर भावना जो साधु समाधी की भाते हैं।
वे निज समाधि साध मोक्ष पद को पाते हैं।।
हे नाथ! कृपा करके मुझे शक्ति दीजिए।
सोलह सुभावना के लिए युक्ति दीजिए।।6।।

गुरुओं की वैयावृत्ति का जो भाव बनाते।
वे भीम के समान तन की शक्ति को पाते।।

हे नाथ! कृपा करके मुझे शक्ति दीजिए।
सोलह सुभावना के लिए युक्ति दीजिए।।7।।

अर्हन्त-सूरि-बहुश्रुत-प्रवचन की भक्ति से।
हो जाती आतमा को प्राप्त ज्ञान शक्ति है।।
हे नाथ! कृपा करके मुझे शक्ति दीजिए।
सोलह सुभावना के लिए युक्ति दीजिए।।8।।

आवश्यकापरिहाणि भावना है बताती।
धार्मिक क्रिया में सावधानी रखना सिखाती।।
हे नाथ! कृपा करके मुझे शक्ति दीजिए।
सोलह सुभावना के लिए युक्ति दीजिए।।9।।

जिनधर्म की प्रभावना की भावना करूँ।
प्रवचन के वात्सल्य की बस कामना करूँ।।
हे नाथ! कृपा करके मुझे शक्ति दीजिए।
सोलह सुभावना के लिए युक्ति दीजिए।।10।।

इन सोलहों शुभ भावना को मन में बसाऊँ।
पूजन में ''चन्दनामती'' पूर्णार्घ्य चढ़ाऊँ।।
हे नाथ! कृपा करके मुझे शक्ति दीजिए।
सोलह सुभावना के लिए युक्ति दीजिए।।11।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद–

जो रुचिपूर्वक सोलहकारण, भावना की पूजा करते हैं।
मन-वच-तन से इनको ध्याकर, निज आतम सुख में रमते हैं।।
तीर्थंकर के पद कमलों में, जो मानव इनको भाते हैं।
वे ही इक दिन 'चन्दनामती', तीर्थंकर पदवी पाते हैं।।

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।

(पूजा नं.-2)

दर्शनविशुद्धि भावना पूजा

–स्थापना (अडिल्ल छंद) –

सोलहकारण में है पहली भावना।
करना है दर्शनविशुद्धि की कामना।।
आत्मा में सम्यक्त्व विशुद्धि बढ़ाइये।
आह्वानन कर पुष्पांजलि चढ़ाइये।।1।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धिभावना! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धिभावना! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धिभावना! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अष्टक (सोरठा) –

जल का कलश उठाय, जिनवर पद त्रय धार दूँ।
जन्म मृत्यु नश जांय, सम्यग्दर्शन शुद्ध हो।।1।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धिभावनायै जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन केशर लाय, जिनवर पद चर्चन करूँ।
भव आतप नश जाय, सम्यग्दर्शन शुद्ध हो।।2।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धिभावनायै संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तंदुल धवल मंगाय, प्रभु पद में अर्पण करूँ।
अक्षय पद मिल जाय, सम्यग्दर्शन शुद्ध हो।।3।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धिभावनायै अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प सुगंधित लाय, जिनवर चरण चढ़ाय दूँ।
कामव्यथा नश जाय, सम्यग्दर्शन शुद्ध हो।।4।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धिभावनायै कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंजन थाल सजाय, प्रभु चरणन अर्पण करूँ।
क्षुधा रोग नश जाय, सम्यग्दर्शन शुद्ध हो।।5।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धिभावनायै क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक ज्योति जलाय, जिनवर की आरति करूँ।
मोहतिमिर नश जाय, सम्यग्दर्शन शुद्ध हो।।6।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धिभावनायै मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजी धूप बनाय, प्रभु ढिग अग्नी में दहूँ।
कर्म सभी नश जांय, सम्यग्दर्शन शुद्ध हो।।7।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धिभावनायै अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल का थाल सजाय, जिनवर की पूजन करूँ।
फल शिवपद मिल जाय, सम्यग्दर्शन शुद्ध हो।।8।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धिभावनायै मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

थाल अर्घ्य का लाय, जजूँ 'चन्दनामति' प्रभो।
पद अनर्घ्य मिल जाय, सम्यग्दर्शन शुद्ध हो।।9।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धिभावनायै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक नीर मंगाय, शांतीधारा मैं करूँ।
आत्मशांति मिल जाय, सम्यग्दर्शन शुद्ध हो।।10।।

शांतये शांतिधारा।

चुन चुन पुष्प मंगाय, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।
आतम गुण मिल जांय, सम्यग्दर्शन शुद्ध हो।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

(प्रथम वलय में 41 अर्घ्य, 6 पूर्णार्घ्य)

–दोहा –

दर्शविशुद्धी भावना, पूजन करो महान।
मण्डल पर पुष्पांजली, करके पाऊँ ज्ञान।।

इति मण्डलस्योपरि प्रथमदले पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–कुसुमलता छंद –

सम्यग्दर्शन के आठों, गुण में निःशंकित प्रथम कहा।
जिनवच में शंका न धरें जो, उनमें यह गुण प्रगट रहा।।

आठ अंग युत सम्यग्दर्शन, का परिपालन करना है।
दरस विशुद्धि भावना की, पूजन कर शिवपद वरना है।।1।।

ॐ ह्रीं निःशंकितगुणसहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यग्दर्शन के आठों गुण, में निःकांक्षित दुतिय कहा।
भोगों की वांछा न करें जो, उनमें यह गुण प्रगट रहा।।
आठ अंग युत सम्यग्दर्शन, का परिपालन करना है।
दरस विशुद्धि भावना की, पूजन कर शिवपद वरना है।।2।।

ॐ ह्रीं निःकांक्षितगुणसहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यग्दर्शन के गुण में है, निर्विचिकित्सा तृतिय कहा।
मुनि तन में ग्लानी न करें जो, उनमें यह गुण प्रगट रहा।।
आठ अंग युत सम्यग्दर्शन, का परिपालन करना है।
दरस विशुद्धि भावना की, पूजन कर शिवपद वरना है।।3।।

ॐ ह्रीं निर्विचिकित्सागुणसहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

सम्यग्दर्शन के गुण में है, अमूढदृष्टि चतुर्थ कहा।
नहीं मूढ़ता मानें जो, उनके मन में यह प्रगट हुआ।।
आठ अंग युत सम्यग्दर्शन, का परिपालन करना है।
दरस विशुद्धि भावना की, पूजन कर शिवपद वरना है।।4।।

ॐ ह्रीं अमूढ़दृष्टिगुणसहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यग्दर्शन के गुण में, पंचम उपगूहन अंग कहा।
धार्मिक जन के दोष ढकें जो, उनमें यह प्रत्यक्ष रहा।।
आठ अंग युत सम्यग्दर्शन, का परिपालन करना है।
दरस विशुद्धि भावना की, पूजन कर शिवपद वरना है।।5।।

ॐ ह्रीं उपगूहनगुणसहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यग्दर्शन के गुण में, छट्ठा है स्थितिकरण कहा।
धर्म से डिगते को जो स्थिर, करे उसी में प्रगट हुआ।।

आठ अंग युत सम्यग्दर्शन, का परिपालन करना है।
दरस विशुद्धि भावना की, पूजन कर शिवपद वरना है।।6।।

ॐ ह्रीं स्थितिकरणगुणसहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यग्दर्शन के गुण में, सप्तम गुण है वात्सल्य कहा।
साधर्मी के प्रति वत्सलता, धरें जो उनमें प्रगट हुआ।।
आठ अंग युत सम्यग्दर्शन, का परिपालन करना है।
दरस विशुद्धि भावना की, पूजन कर शिवपद वरना है।।7।।

ॐ ह्रीं वात्सल्यगुणसहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यग्दर्शन के गुण में, अष्टम प्रभावना अंग कहा।
जैनधर्म की जो प्रभावना, करें, उन्हीं में प्रगट हुआ।।
आठ अंग युत सम्यग्दर्शन, का परिपालन करना है।
दरस विशुद्धि भावना की, पूजन कर शिवपद वरना है।।8।।

ॐ ह्रीं प्रभावनागुणसहित दर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य –

निःशंकित से प्रभावना तक, जो आठों गुण धरते हैं।
निरतिचार सम्यग्दर्शन का, वे ही पालन करते हैं।।
इन गुणयुत दर्शनविशुद्धि, भावना को अर्घ्य चढ़ाना है।
कर पूर्णार्घ्य समर्पण निज, आत्मा को शुद्ध बनाना है।।1।।

ॐ ह्रीं निःशंकितादिअष्टगुणसमन्वितदर्शनविशुद्धिभावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तर्ज-चन्दाप्रभु के दर्शन करने.....

दर्शविशुद्धि भावना भाकर, सम्यग्दर्शन पाएंगे।
आठों मद को दूर भगाकर, विनयभाव प्रगटाएंगे।।टेक.।।
अपने मातृपक्ष का मद करना जातिमद कहलाता।
उसको तज कर माता के गुण में अनुराग किया जाता।।

अष्टद्रव्य ले अर्घ्य चढ़ाकर, सम्यग्दर्शन पाएंगे।
आठों मद को दूर भगाकर, विनयभाव प्रगटाएंगे।।9।।

ॐ ह्रीं जातिमदरहितदर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शविशुद्धि भावना भाकर, सम्यग्दर्शन पाएंगे।
आठों मद को दूर भगाकर, विनयभाव प्रगटाएंगे।।टेक.।।
अपने पिता-पितामह का मद करना कुलमद कहलाता।
उसको तज कर अपने कुल का स्वाभिमान गुण बन जाता।।
अष्टद्रव्य ले अर्घ्य चढ़ाकर, सम्यग्दर्शन पाएंगे।
आठों मद को दूर भगाकर, विनयभाव प्रगटाएंगे।।10।।

ॐ ह्रीं कुलमदरहितदर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शविशुद्धि भावना भाकर, सम्यग्दर्शन पाएंगे।
आठों मद को दूर भगाकर, विनयभाव प्रगटाएंगे।।टेक.।।
कुछ शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त कर अहंकार यदि आ जाता।
दोष लगे सम्यग्दर्शन में, यही ज्ञानमद कहलाता।।
अष्टद्रव्य ले अर्घ्य चढ़ाकर, सम्यग्दर्शन पाएंगे।
आठों मद को दूर भगाकर, विनयभाव प्रगटाएंगे।।11।।

ॐ ह्रीं ज्ञानमदरहितदर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शविशुद्धि भावना भाकर, सम्यग्दर्शन पाएंगे।
आठों मद को दूर भगाकर, विनयभाव प्रगटाएंगे।।टेक.।।
जग में पूजा योग्य बने तो अहंकार मन में जागा।
पूजामद से दूर हटे तो मिथ्यातम मन से भागा।।
अष्टद्रव्य ले अर्घ्य चढ़ाकर, सम्यग्दर्शन पाएंगे।
आठों मद को दूर भगाकर, विनयभाव प्रगटाएंगे।।12।।

ॐ ह्रीं पूजामदरहितदर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शविशुद्धि भावना भाकर, सम्यग्दर्शन पाएंगे।
आठों मद को दूर भगाकर, विनयभाव प्रगटाएंगे।।टेक.।।

तन में बल आ गया कभी तो अहंकार मन में आया।
बल मद को कर दिया दूर तो सच्चा बल मैंने पाया।।
अष्टद्रव्य ले अर्घ्य चढ़ाकर, सम्यग्दर्शन पाएंगे।
आठों मद को दूर भगाकर, विनयभाव प्रगटाएंगे।।13।।

ॐ ह्रीं बलमदरहितदर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शविशुद्धि भावना भाकर, सम्यग्दर्शन पाएंगे।
आठों मद को दूर भगाकर, विनयभाव प्रगटाएंगे।।टेक.।।
धनवैभव हो गया प्राप्त तो अहंकार मन जाग गया।
धनमद को कर दिया त्याग तो मिथ्यातम सब भाग गया।।
अष्टद्रव्य ले अर्घ्य चढ़ाकर, सम्यग्दर्शन पाएंगे।
आठों मद को दूर भगाकर, विनयभाव प्रगटाएंगे।।14।।

ॐ ह्रीं धनमदरहितदर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शविशुद्धि भावना भाकर, सम्यग्दर्शन पाएंगे।
आठों मद को दूर भगाकर, विनयभाव प्रगटाएंगे।।टेक.।।
तप करके भी पतन हेतु तप मद मेरे मन में जागा।
उसका त्याग किया तो मेरे मन से मोहतिमिर भागा।।
अष्टद्रव्य ले अर्घ्य चढ़ाकर, सम्यग्दर्शन पाएंगे।
आठों मद को दूर भगाकर, विनयभाव प्रगटाएंगे।।15।।

ॐ ह्रीं तपमदरहितदर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शविशुद्धि भावना भाकर, सम्यग्दर्शन पाएंगे।
आठों मद को दूर भगाकर, विनयभाव प्रगटाएंगे।।टेक.।।
सुन्दर तन पाकर के मेरे मन में अहंकार आया।
नश्वर समझके त्याग दिया तब मन को सुंदर कर पाया।।
अष्टद्रव्य ले अर्घ्य चढ़ाकर, सम्यग्दर्शन पाएंगे।
आठों मद को दूर भगाकर, विनयभाव प्रगटाएंगे।।16।।

ॐ ह्रीं कायमदरहितदर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य –

आठों मद से रहित शुद्ध, सम्यग्दर्शन का यजन करूँ।
विनयवृत्ति से सहित शुद्ध, निज आत्मतत्त्व का भजन करूँ।।
मैं पूर्णार्घ्य चढ़ा करके, दर्शनविशुद्धि को भाता हूँ।
सोलहकारण भाने हेतू, प्रभु चरणों में आता हूँ।।2।।

ॐ अष्टमदरहितदर्शनविशुद्धिभावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा –

देवमूढ़ता त्याग कर, दर्शन करूँ विशुद्ध।
अर्घ्य चढ़ाकर जिनचरण, प्राप्त करूँ पद शुद्ध।।17।।

ॐ ह्रीं देवमूढ़तादोषरहितदर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सच्चे गुरु पहचान कर, गुरूमूढ़ता त्याग।
प्रभु पद अर्घ्य चढ़ाय कर, पाऊँ निज साम्राज्य।।18।।

ॐ ह्रीं गुरुमूढ़तादोषरहितदर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकमूढ़ता त्याग कर, करूँ आत्म अनुराग।
सम्यग्दर्शन पाय कर, करूँ अर्चना आज।।19।।

ॐ ह्रीं लोकमूढतादोषरहितदर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-चौबोल छंद-

हिंसा आदिक पापों को, जो धर्म बढ़ावा देता है।
उसको माना है कुधर्म, वह सबको धोखा देता है।।
इस अनायतन में श्रद्धा, करना ही दोष कहाता है।
दोषरहित दर्शनविशुद्धि को, अर्घ्य चढ़ाया जाता है।।20।।

ॐ ह्रीं कुधर्मप्रशंसाअनायतनदोषरहितदर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्त्री शस्त्र आदि रख भी, जो निज को देव बताते हैं।
सच्चे देव न हो सकते, वे तो कुदेव कहलाते हैं।।

इस अनायतन में श्रद्धा, करना ही दोष कहाता है।
दोषरहित दर्शनविशुद्धि को, अर्घ्य चढ़ाया जाता है।।21।।

ॐ ह्रीं कुदेवप्रशंसाअनायतनदोषरहितदर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधी मानी विषयाशा से, सहित कुगुरू कहलाते हैं।
उनके उपदेशों से प्राणी, भव भव में दुख पाते हैं।।
इस अनायतन में श्रद्धा, करना ही दोष कहाता है।
दोषरहित दर्शनविशुद्धि को, अर्घ्य चढ़ाया जाता है।।22।।

ॐ ह्रीं कुगुरुप्रशंसाअनायतनदोषरहितदर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो कुधर्मसेवक हैं उनकी, भी न प्रशंसा करना है।
क्योंकि हमें संसार जलधि, से जल्दी पार उतरना है।।
इस अनायतन में श्रद्धा, करना ही दोष कहाता है।
दोषरहित दर्शनविशुद्धि को, अर्घ्य चढ़ाया जाता है।।23।।

ॐ ह्रीं कुधर्मसेवकप्रशंसाअनायतनदोषरहितदर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो कुदेव सेवक हैं उनकी, भी न प्रशंसा करना है।
क्योंकि हमें संसार जलधि, से जल्दी पार उतरना है।।
इस अनायतन में श्रद्धा, करना ही दोष कहाता है।
दोषरहित दर्शनविशुद्धि को, अर्घ्य चढ़ाया जाता है।।24।।

ॐ ह्रीं कुदेवसेवकप्रशंसाअनायतनदोषरहितदर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो कुगुरू सेवक हैं उनकी, भी न प्रशंसा करना है।
क्योंकि हमें संसार जलधि, से जल्दी पार उतरना है।।
इस अनायतन में श्रद्धा, करना ही दोष कहाता है।
दोषरहित दर्शनविशुद्धि को, अर्घ्य चढ़ाया जाता है।।25।।

ॐ ह्रीं कुगुरुसेवकप्रशंसाअनायतनदोषरहितदर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य –

तीन मूढ़ता छह अनायतन, का नहिं सेवन करना है।
क्योंकि हमें निजसम्यग्दर्शन, दोषयुक्त नहिं करना है।।
मैं पूर्णार्घ्य चढ़ा करके, दर्शनविशुद्धि का यजन करूँ।
भववारिधि से तिरने हेतू, देव शास्त्र गुरु भजन करूँ।।3।।

ॐ ह्रीं त्रिमूढ़ताषडनायतनदोषरहितदर्शनविशुद्धिभावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा –

आठों दोषों में प्रथम, शंका नामक दोष।
जिनवचशंका दोष तज, जजूँ धर्म निर्दोष।।26।।

ॐ ह्रीं शंकादोष रहित दर्शन विशुद्धि भावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों दोषों में दुतिय, कांक्षा नामक दोष।
भोगाकांक्षा दोष तज, जजूँ धर्म निर्दोष।।27।।

ॐ ह्रीं कांक्षादोषरहितदर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों दोषों में तृतिय, विचिकित्सा है दोष।
रत्नत्रय में ग्लानि तज, जजूँ धर्म निर्दोष।।28।।

ॐ ह्रीं विचिकित्सादोषरहितदर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों दोषों में चतुर्थ, मूढ़दृष्टि है दोष।
मूढ़बुद्धि का त्याग कर, जजूँ धर्म निर्दोष।।29।।

ॐ ह्रीं मूढ़दृष्टिदोषरहितदर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ दोष में पाँचवां, अनुपगूहन है दोष।
परनिंदा को त्याग कर, जजूँ धर्म निर्दोष।।30।।

ॐ ह्रीं अनुपगूहनदोषरहितदर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ दोष में अस्थिती-करण छठा है दोष।
अस्थिर भाव मिटाय कर, जजूँ धर्म निर्दोष।।31।।

ॐ ह्रीं अस्थितिकरणदोषरहितदर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

आठ दोष में सातवाँ, अवात्सल्य है दोष।
धर्मी के प्रति द्वेष तज, जजूँ धर्म निर्दोष।।32।।

ॐ ह्रीं अवात्सल्यदोषरहितदर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अप्रभावना नाम का, कहा आठवां दोष।
दुर्भावों का त्याग कर, जजूँ धर्म निर्दोष।।33।।

ॐ ह्रीं अप्रभावनादोषरहितदर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य –

शंकादिक सब दोष तज, हो सम्यक्त्व विशुद्ध।
मैं पूर्णार्घ्य चढ़ाय कर, करूँ निजातम शुद्ध।।4।।

ॐ ह्रीं शंकादिअष्टदोषरहितदर्शनविशुद्धिभावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य –

मद मूढत्व अनायतन, शंकादि को टार।
पच्चिस दोष निवारके, जजूँ दर्शनाचार।।5।।

ॐ ह्रीं अष्टमदत्रिमूढ़ताषट्अनायतन शंकादिअष्टदोषादिपंचविंशति-मलदोषविरहित दर्शनविशुद्धि भावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–शंभु छंद –

अष्टांग सहित सम्यग्दर्शन के, अन्य आठ गुण माने हैं।
उनमें संवेग प्रथम गुण को, धर्मानुराग से जाने हैं।।
इस गुण से युत दर्शन विशुद्धि, को अर्घ्य चढ़ाने आया हूँ।
सम्यक्त्व मेरा हो जाय शुद्ध, यह भाव हृदय में लाया हूँ।।34।।

ॐ ह्रीं संवेगगुणसहितदर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वेग नाम के गुण में भोग, विषैले लगने लगते हैं।
संसार शरीर व भोगों को, ज्ञानी मानव ही तजते हैं।।
इस गुण से युत दर्शन विशुद्धि, को अर्घ्य चढ़ाने आया हूँ।
सम्यक्त्व मेरा हो जाय शुद्ध, यह भाव हृदय में लाया हूँ।।35।।

ॐ ह्रीं निर्वेगगुणसहितदर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपने पापों की निंदा कर, जो जन प्रायश्चित्त करते हैं।
घर में रहकर भी घोर महा, जो पाप कभी नहिं करते हैं।।
इस गुण से युत दर्शन विशुद्धि, को अर्घ्य चढ़ाने आया हूँ।
सम्यक्त्व मेरा हो जाय शुद्ध, यह भाव हृदय में लाया हूँ।।36।।

ॐ ह्रीं आत्मनिंदागुणसहितदर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रागद्वेषादि विकारों से, जो पाप हुए हैं जीवन में।
गुरु सम्मुख उनका आलोचन, करना समझो गर्हा गुण है।।
इस गुण से युत दर्शन विशुद्धि, को अर्घ्य चढ़ाने आया हूँ।
सम्यक्त्व मेरा हो जाय शुद्ध, यह भाव हृदय में लाया हूँ।।37।।

ॐ ह्रीं आत्मगर्हागुणसहितदर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो क्रोध लोभ रागादि दोष, को मन में नहीं टिकाते हैं।
उपशम गुणयुत वे भव्य जीव, पापों को दूर भगाते हैं।।
इस गुण से युत दर्शन विशुद्धि, को अर्घ्य चढ़ाने आया हूँ।
सम्यक्त्व मेरा हो जाय शुद्ध, यह भाव हृदय में लाया हूँ।।38।।

ॐ ह्रीं उपशमगुणसहितदर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँचों परमेष्ठी नवदेवों की, सदा विनय जो करते हैं।
मानव में प्रगट इस गुण को ही, आचार्य भक्तिगुण कहते हैं।।
इस गुण से युत दर्शन विशुद्धि, को अर्घ्य चढ़ाने आया हूँ।
सम्यक्त्व मेरा हो जाय शुद्ध, यह भाव हृदय में लाया हूँ।।39।।

ॐ ह्रीं भक्तिगुणसहितदर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय संयुत संतों के, प्रति आदर ही वत्सलता है।
जिनधर्म और धर्मायतनों की, रक्षा यह गुण करता है।।
इस गुण से युत दर्शन विशुद्धि, को अर्घ्य चढ़ाने आया हूँ।
सम्यक्त्व मेरा हो जाय शुद्ध, यह भाव हृदय में लाया हूँ।।40।।

ॐ ह्रीं वात्सल्यगुणसहितदर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भवदधि में डूबे प्राणी के, प्रति दया भाव करुणा गुण है।
सम्यग्दृष्टि की अनुकम्पा से, तिर जाते प्राणी गण हैं।।
इस गुण से युत दर्शन विशुद्धि, को अर्घ्य चढ़ाने आया हूँ।
सम्यक्त्व मेरा हो जाय शुद्ध, यह भाव हृदय में लाया हूँ।।41।।

ॐ ह्रीं अनुकम्पागुणसहितदर्शनविशुद्धिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य –

संवेगादिक आठों गुण से, सम्यक्त्व विशुद्धी होती है।
जिनके मन में ये प्रगट हुए, लक्ष्मी उनके घर होती है।।
इन गुण युत सम्यग्दर्शन को, पूर्णार्घ्य चढ़ाने आये हैं।
आतम दर्शन हो जाए प्रगट, बस यही भावना लाये हैं।।6।।

ॐ ह्रीं संवेगादिअष्टगुणसमन्वितदर्शनविशुद्धि भावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र – **ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धिभावनायै नमः।**

जयमाला

तर्ज-सपने में.....

सोलहकारण में, प्रथम भावना भाना है।
दर्शनविशुद्धि, भावना को अर्घ्य चढ़ाना है।।टेक.।।

निर्ग्रन्थ दिगम्बर पथ में, रुचि ही सम्यग्दर्शन है।
जिनवर ने जो उपदेशा, उस पर ही चलें हमेशा।।
उनको निश्चित ही, मोक्ष पंथ को पाना है।
दर्शनविशुद्धि, भावना को अर्घ्य चढ़ाना है।।1।।

आठों अंगों से संयुत, संवेगादिक गुण से युत।
सम्यक्त्व प्राप्त करते जो, सुख शांति प्राप्त करते वो।।
उन सम्यग्दृष्टि, को अणुव्रत अपनाना है।
दर्शनविशुद्धि, भावना को अर्घ्य चढ़ाना है।।2।।

जो नहीं मूढ़ता पालें, षट् अनायतन को टालें।
शंकादि दोष परिहरते, आठों मद कभी न करते।।

इन पच्चिस मल, दोषों को हमें हटाना है।
दर्शनविशुद्धि, भावना को अर्घ्य चढ़ाना है।।3।।

भय सात जगत में माने, इनसे न डरें जो प्राणी।
जिनसे भय भी भय खाते, वे सम्यग्दृष्टि ज्ञानी।।
भय रहित उसी, सम्यग्दर्शन को पाना है।
दर्शनविशुद्धि, भावना को अर्घ्य चढ़ाना है।।4।।

दर्शनविशुद्धि का अतिशय, श्रेणिक में हुआ प्रगट है।
प्रभु वीर के समवसरण में, किया पुण्य का बंध उन्होंने।।
आगे उनको, तीर्थंकर पदवी पाना है।
दर्शनविशुद्धि, भावना को अर्घ्य चढ़ाना है।।5।।

इतिहास विचित्र है इनका, सम्राट मगध श्रेणिक का।
पहले तो विधर्मी थे वे, उपसर्ग किया इक मुनि पे।।
उपसर्ग कथानक, जिन शास्त्रों में बखाना है।
दर्शनविशुद्धि, भावना को अर्घ्य चढ़ाना है।।6।।

उपसर्ग मुनी पर करना, उत्कृष्ट आयु का बंधना।
था सप्तम नरक में जाना, तेंतिस सागर दुख पाना।।
चेलना सती की, महिमा सबने जाना है।
दर्शनविशुद्धि, भावना को अर्घ्य चढ़ाना है।।7।।

गये राजा रानी इक संग, मुनिवर को नमन किया जब।
आशीर्वाद दिया इक सा, दोनों को धरम वृद्धी का।।
तब श्रेणिक नृप ने, सच्चा गुरु पहचाना है।
दर्शनविशुद्धि, भावना को अर्घ्य चढ़ाना है।।8।।

फिर जिनवर भक्ती करके, नरकायु को कम करके।
गये श्रेणिक प्रथम नरक में, क्षायिक सम्यक्त्व है उनमें।।
यह कर्म की महिमा, जिन शास्त्रों से जाना है।
दर्शनविशुद्धि, भावना को अर्घ्य चढ़ाना है।।9।।

हे नाथ! भावना भाऊँ, प्रभु भक्ती में रम जाऊँ।
पूर्णार्घ्य का थाल सजाऊँ, जिनवर चरणों में चढ़ाऊँ।।
''चन्दनामती'' अब, मनवांछित फल पाना है।
दर्शनविशुद्धि, भावना को अर्घ्य चढ़ाना है।।10।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धिभावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद –

जो रुचिपूर्वक सोलहकारण, भावना की पूजा करते हैं।
मन-वच-तन से इनको ध्याकर, निज आतम सुख में रमते हैं।।
तीर्थंकर के पद कमलों में, जो मानव इनको भाते हैं।
वे ही इक दिन 'चन्दनामती', तीर्थंकर पदवी पाते हैं।।

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।

(पूजा नं.-3)

विनयसम्पन्नता भावना पूजा

–स्थापना (अडिल्ल छंद) –

सोलहकारण में द्वितीय है भावना।
कही विनयसम्पन्नता है भावना।।
उसकी पूजन हेतु करूँ स्थापना।
भाव यही है विनयभाव मन धारना।।1।।

ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नता भावना! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नता भावना! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नता भावना! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अष्टक (सखी छंद) –

कंचन झारी में जल ले, त्रयधार करूँ जिनपद में।
मैं दुतिय भावना भाऊँ, पूजन कर अति हरषाऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नताभावनायै जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर मिला चंदन है, तीर्थंकर पद चर्चन है।
मैं दुतिय भावना भाऊँ, पूजन कर अति हरषाऊँ।।2।।

ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नताभावनायै संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तंदुल धो करके लाऊँ, अक्षत के पुंज चढ़ाऊँ।
मैं दुतिय भावना भाऊँ, पूजन कर अति हरषाऊँ।।3।।

ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नताभावनायै अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों की माल बनाऊँ, पूजन में उसे चढ़ाऊँ।
मैं दुतिय भावना भाऊँ, पूजन कर अति हरषाऊँ।।4।।

ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नताभावनायै कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य सरस ले आऊँ, प्रभु पद में उसे चढ़ाऊँ।
मैं दुतिय भावना भाऊँ, पूजन कर अति हरषाऊँ।।5।।

ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नताभावनायै क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नों का दीपक लेकर, आरति कर लूँ मैं जिनवर।
मैं दुतिय भावना भाऊँ, पूजन कर अति हरषाऊँ।।6।।

ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नताभावनायै मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं सुरभित धूप जलाऊँ, कर्मों की धूम उड़ाऊँ।
मैं दुतिय भावना भाऊँ, पूजन कर अति हरषाऊँ।।7।।

ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नताभावनायै अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल सरस मधुर मैं लाऊँ, प्रभु पद में थाल चढ़ाऊँ।
मैं दुतिय भावना भाऊँ, पूजन कर अति हरषाऊँ।।8।।

ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नताभावनायै मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर पद अर्घ्य चढ़ाऊँ, ''चन्दनामती'' सुख पाऊँ।
मैं दुतिय भावना भाऊँ, पूजन कर अति हरषाऊँ।।9।।

ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नताभावनायै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं प्रासुक जल ले करके, शांतीधारा को करके।
मैं दुतिय भावना भाऊँ, पूजन कर अति हरषाऊँ।।10।।

शांतये शांतिधारा।

पुष्पों से अंजलि भरके, पुष्पांजलि करूँ जिनपद में।
मैं दुतिय भावना भाऊँ, पूजन कर अति हरषाऊँ।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः

अथ प्रत्येक अर्घ्य

(द्वितीय वलय में 4 अर्घ्य, 1 पूर्णार्घ्य)

–दोहा –

विनयभावना की यहाँ, पूजन करो महान।
मण्डल पर पुष्पांजली, करके पाऊँ ज्ञान।।

इति मण्डलस्योपरिद्वितीयदले पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–स्रग्विणी छंद –

जैन शास्त्रों का स्वाध्याय नितप्रति करूँ।
ज्ञान अरु ज्ञानियों की विनय नित करूँ।।

भावना विनयसम्पन्नता भाऊँ मैं।
पूजा करके विनयभाव प्रगटाऊँ मैं।।1।।

ॐ ह्रीं ज्ञानविनयभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध सम्यक्त्व की मैं विनय कर सकूँ।
शक्ति दो नाथ! दर्शन विनय वर सकूँ।।
भावना विनयसम्पन्नता भाऊँ मैं।
पूजा करके विनयभाव प्रगटाऊँ मैं।।2।।

ॐ ह्रीं दर्शनविनयभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सकलचारित्र अरु देशचारित्र में।
कर विनय पाल लूँ कुछ तो चारित्र मैं।।
भावना विनयसम्पन्नता भाऊँ मैं।
पूजा करके विनयभाव प्रगटाऊँ मैं।।3।।

ॐ ह्रीं चारित्रविनयभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव गुरु शास्त्र के प्रति विनयभाव है।
अन्य के प्रति विनयभाव का चाव है।।
भावना विनयसम्पन्नता भाऊँ मैं।
पूजा करके विनयभाव प्रगटाऊँ मैं।।4।।

ॐ ह्रीं उपचारविनयभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-स्रग्विणी छंद –

ज्ञान दर्शन व चारित्र उपचार हैं।
विनय के भेद ये ही कहे चार हैं।।
भावना विनयसम्पन्नता भाऊँ मैं।
पूजा करके विनयभाव प्रगटाऊँ मैं।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्विधविनयसमन्वितविनयसम्पन्नता भावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र – **ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नताभावनायै नमः।**

जयमाला

तर्ज-मनिहारों का रूप बनाया.....

सोलहकारण की जयमाल गाऊँ, विनयसम्पन्नता को निभाऊँ।।टेक.।।
सोलहकारण की है यह दुतिय भावना, इसको पाने की मन में जगी भावना।
विनय से सर्व विद्या मैं पाऊँ, विनय सम्पन्नता को निभाऊँ।।1।।
देवगुरु शास्त्र का जो विनय करते हैं, आठों मद दूर कर मोक्षपद वरते हैं।
मान को मैं भी दूर भगाऊँ, विनयसम्पन्नता को निभाऊँ।।2।।
विनय के पाँच भी भेद माने कहीं, ज्ञान-दर्शन-चरण-तप व उपचार हैं।
यथाशक्ती मैं सबको निभाऊँ, विनयसम्पन्नता को निभाऊँ।।3।।
गुरु विनय से धनुर्धारी अर्जुन बने, गुरु विनय की थी उत्कृष्ट चंद्रगुप्त ने।
उनके सम मैं भी गुरुभक्ति पाऊँ, विनयसम्पन्नता को निभाऊँ।।4।।
एक रानी ने प्रभु जी का अविनय किया, अंजना बनके उसने बहुत दुख सहा।
भाव अविनय का मन में न लाऊँ, विनयसम्पन्नता गुण निभाऊँ।।5।।
चक्रवर्ती ने अविनय णमोकार का, करके पाया नरक में बहुत दुक्ख था।
उस णमोकार को मन में ध्याऊँ, विनयसम्पन्नता गुण निभाऊँ।।6।।
साधुगण भी परस्पर विनय पालते, स्वप्न में भी न अविनय हृदय धारते।
विनय कर सबको विनयी बनाऊँ, विनयसम्पन्नता गुण निभाऊँ।।7।।
विनय से हीन विद्या निरर्थक ही है, विनय से युक्त विद्या तो सार्थक ही है।
विनय से सर्वसिद्धी को पाऊँ, विनय सम्पन्नता गुण निभाऊँ।।8।।
मनवचन काय से इसकी पूजा करूँ, अर्घ्य का थाल जिनवर के सम्मुख धरूँ।
''चन्दनामति'' सुरभि गुण की पाऊँ, विनयसम्पन्नता गुण निभाऊँ।।9।।

ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नताभावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद –

जो रुचिपूर्वक सोलहकारण, भावना की पूजा करते हैं।
मन-वच-तन से इनको ध्याकर, निज आतम सुख में रमते हैं।।
तीर्थंकर के पद कमलों में, जो मानव इनको भाते हैं।
वे ही इक दिन 'चन्दनामती', तीर्थंकर पदवी पाते हैं।।

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।

(पूजा नं.-4)

शीलव्रतेष्वनतिचार भावना पूजा

–स्थापना-गीता छंद –

सोलह सुकारण भावना में, है तृतिय जो भावना।
शील अरु व्रत में नहीं, अतिचार हों यह कामना।।
इस भावना की अर्चना में मैं करूँ आह्वानना।
मन में बिठाऊँ भावना कर पुष्प से स्थापना।।1।।

ॐ ह्रीं शीलव्रतेष्वनतिचार भावना! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं शीलव्रतेष्वनतिचार भावना! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं शीलव्रतेष्वनतिचार भावना! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अष्टक-शंभु छंद –

मैं पद्म सरोवर का निर्मल जल, झारी में भर लाया हूँ।
निज जन्म जरा मृति नाश हेतु, प्रभु पूजन करने आया हूँ।।
हों शील व व्रत अतिचार रहित, बस पूजन का है लक्ष्य यही।
मैं यथाशक्ति इनका पालन, कर सकूँ मिले तब मोक्ष मही।।1।।

ॐ ह्रीं शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीतिस्वाहा।

कर्पूर मिला चंदन घिस कर, मैं स्वर्ण पात्र भर लाया हूँ।
संसार ताप के नाश हेतु, प्रभु पूजन करने आया हूँ।।
हों शील व व्रत अतिचार रहित, बस पूजन का है लक्ष्य यही।
मैं यथाशक्ति इनका पालन, कर सकूँ मिले तब मोक्ष मही।।2।।

ॐ ह्रीं शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं बासमती के शुद्ध धवल, तंदुल धो करके लाया हूँ।
बस अक्षय पद की प्राप्ति हेतु, प्रभु पूजन करने आया हूँ।।
हों शील व व्रत अतिचार रहित, बस पूजन का है लक्ष्य यही।
मैं यथाशक्ति इनका पालन, कर सकूँ मिले तब मोक्ष मही।।3।।

ॐ ह्रीं शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं कल्पवृक्ष के फूलों की, माला ले करके आया हूँ।
निज काम व्यथा के नाश हेतु, प्रभु पूजन करने आया हूँ।।
हों शील व व्रत अतिचार रहित, बस पूजन का है लक्ष्य यही।
मैं यथाशक्ति इनका पालन, कर सकूँ मिले तब मोक्ष मही।।4।।

ॐ ह्रीं शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मीठे नमकीन सरस व्यंजन का, थाल सजा कर लाया हूँ।
निज क्षुधा रोग विध्वंस हेतु, प्रभु पूजन करने आया हूँ।।
हों शील व व्रत अतिचार रहित, बस पूजन का है लक्ष्य यही।
मैं यथाशक्ति इनका पालन, कर सकूँ मिले तब मोक्ष मही।।5।।

ॐ ह्रीं शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कंचन थाली में घृत दीपक ले, आरति करने आया हूँ।
निज मोह तिमिर के नाश हेतु, प्रभु पूजन करने आया हूँ।।
हों शील व व्रत अतिचार रहित, बस पूजन का है लक्ष्य यही।
मैं यथाशक्ति इनका पालन, कर सकूँ मिले तब मोक्ष मही।।6।।

ॐ ह्रीं शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं धूप दशांगी को अग्नी में, ज्वालन करने आया हूँ।
निज अष्ट कर्म विध्वंस हेतु, प्रभु पूजन करने आया हूँ।।
हों शील व व्रत अतिचार रहित, बस पूजन का है लक्ष्य यही।
मैं यथाशक्ति इनका पालन, कर सकूँ मिले तब मोक्ष मही।।7।।

ॐ ह्रीं शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

खट्टे मीठे नाना विध के, फल थाल सजाकर लाया हूँ।
मैं मोक्ष महाफल प्राप्ति हेतु, प्रभु पूजन करने आया हूँ।।
हों शील व व्रत अतिचार रहित, बस पूजन का है लक्ष्य यही।
मैं यथाशक्ति इनका पालन, कर सकूँ मिले तब मोक्ष मही।।8।।

ॐ ह्रीं शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

''चन्दनामती'' आठों द्रव्यों का, अर्घ्य बनाकर लाया हूँ।
मैं पद अनर्घ्य की प्राप्ति हेतु, प्रभु पूजन करने आया हूँ।।

हों शील व व्रत अतिचार रहित, बस पूजन का है लक्ष्य यही।
मैं यथाशक्ति इनका पालन, कर सकूँ मिले तब मोक्ष मही।।9।।

ॐ ह्रीं शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – **शांतीधारा मैं करूँ, लेकर प्रासुक नीर।**
जग में शांति रहे सदा, मैं पाऊँ भव तीर।।10।।

शांतये शांतिधारा।

पुष्पांजलि जिनपद करूँ, नाना पुष्प मंगाय।
निज जीवन पुष्पित करूँ, गुण सुरभी महकाय।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

(तृतीय वलय में 27 अर्घ्य, 1 पूर्णार्घ्य)

दोहा – **शीलव्रतेष्वनतिचार की, पूजन करूँ महान।**
मण्डल पर पुष्पांजली, करके पाऊँ ज्ञान।।

इति मण्डलस्योपरि तृतीयदले पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–चौबोल छंद –

वचनगुप्ति-मनगुप्ती-ईर्या, समिती को जो धरते हैं।
देख शोधकर वस्तु उठाना-रखना-भोजन करते हैं।।
पाँच भावना सहित अहिंसा, व्रत का जो पूजन करते।
शीलव्रतों में अनतिचार की, शुद्ध भावना वे धरते।।1।।

ॐ ह्रीं पंचभावनासहितनिरतिचारअहिंसाव्रतरूपशीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँच व्रतों में दुतिय सत्य का, पालन भी है प्रमुख कहा।
क्रोध लोभ भीरुत्व हास्य, अनुवीची भाषण रहित महा।।
पाँच भावना सहित सत्य व्रत, का जो अर्चन करते हैं।
शीलव्रतों में अनतिचार, भावना वही जन धरते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं पंचभावनासहितनिरतिचारसत्यव्रतरूपशीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शून्यागारावास विमोचित, आवासों में जो रहते।
परोपरोधाकरण भैक्ष्यशुद्धी, आदिक पालन करते।।
जो अचौर्य व्रत पंच भावना, सहित सदा पूजन करते।
शीलव्रतों में अनतिचार की, शुद्ध भावना वे धरते।।3।।

ॐ ह्रीं पंचभावनासहितनिरतिचारअचौर्यव्रतरूपशीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्त्रीराग कथा सुनने का, त्याग सदा जो करते हैं।
अंग निरीक्षण विषयभोग, को याद नहीं जो करते हैं।।
ब्रह्मचर्य व्रत पंच भावना, सहित का जो अर्चन करते।
शीलव्रतों में अनतिचार की, शुद्ध भावना वे धरते।।4।।

ॐ ह्रीं पंचभावनासहितनिरतिचारब्रह्मचर्यव्रतरूपशीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचेन्द्रिय के इष्ट-अनिष्ट, आदि में राग न जो करते।
द्वेषरूप भी भाव न करके, परिग्रह पाप से हैं बचते।।
पंचभावना सहित परिग्रह, त्याग का जो अर्चन करते।
शीलव्रतों में अनतिचार की, शुद्ध भावना वे धरते।।5।।

ॐ ह्रीं पंचभावनासहितनिरतिचारपरिग्रहत्यागव्रतरूपशीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँचों समिति में प्रथम समिति, ईर्या समिति कहलाती है।
चउ हाथ भूमि को देख गमन, करने से यह पल जाती है॥
इस समिति सहित मुनि आचार्यों की पूजन जो भी करतेहैं।
वे शीलव्रतों में अनतिचार, भावना स्वयं ही धरते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं ईर्यासमितिपालनरूपशीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

पाँचों समिति में दुतिय समिति, भाषा समिती कहलाती है।
हितमित प्रिय वाणी धारक, मुनियों में पाई जाती है।।
इस समिति सहित मुनि आचार्यों की पूजन जो भी करतेहैं।
वे शीलव्रतों में अनतिचार, भावना स्वयं ही धरते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं भाषासमितिपालनरूपशीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

पाँचों समिति में तृतिय समिति, एषणा समिति कहलाती है।
छ्यालीस दोष विरहित आहार, लेने से यह पल जाती है।।
इस समिति सहित मुनि आचार्यों की पूजन जो भी करतेहैं।
वे शीलव्रतों में अनतिचार, भावना स्वयं ही धरते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं एषणासमितिपालनरूपशीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आदाननिक्षेपण नाम सहित, समिति चतुर्थ कहलाती है।
शोधन कर वस्तु उठाने रखने, से ही यह पल जाती है।।
इस समिति सहित मुनि आचार्यों, की पूजन जो भी करते हैं।
वे शीलव्रतों में अनतिचार, भावना स्वयं ही धरते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं आदाननिक्षेपणसमितिपालनरूपशीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँचों समिति में पंचम जो, उत्सर्ग समिति कहलाती है।
मल मूत्र विसर्जन करने में, यह सावधानी बतलाती है।।
इस समिति सहित मुनि आचार्यों, की पूजन जो भी करते हैं।
वे शीलव्रतों में अनतिचार, भावना स्वयं ही धरते हैं।।10।।

ॐ ह्रीं उत्सर्गसमितिपालनरूपशीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाह

मनगुप्ति वचनगुप्ति व काय-गुप्ती ये तीन कहाती हैं।
मन पर अनुशासन कर लेने से, प्रथम गुप्ति पल जाती है।।
इस गुप्ति सहित मुनि आचार्यों, की पूजन जो भी करते हैं।
वे शीलव्रतों में अनतिचार, भावना स्वयं ही धरते हैं।।11।।

ॐ ह्रीं मनगुप्तिपालनरूपशीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनगुप्ति वचनगुप्ती व काय-गुप्ती ये तीन कहाती हैं।
जिह्वा पर अनुशासन करने से, वचन गुप्ति पल जाती है।।
इस गुप्ति सहित मुनि आचार्यों, की पूजन जो भी करते हैं।
वे शीलव्रतों में अनतिचार, भावना स्वयं ही धरते हैं।।12।।

ॐ ह्रीं वचनगुप्तिपालनरूपशीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनगुप्ति वचनगुप्ती व काय-गुप्ती ये तीन कहाती हैं।
तनचेष्टा पर अनुशासन करके, कायगुप्ति पल जाती है।।
इस गुप्ति सहित मुनि आचार्यों, की पूजन जो भी करते हैं।
वे शीलव्रतों में अनतिचार, भावना स्वयं ही धरते हैं।।13।।

ॐ ह्रीं कायगुप्तिपालनरूपशीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हिंसादिक पाँचों पापों का जो, आंशिक त्याग किया जाता।
वह ही अणुव्रत कहलाता है, श्रावक में वो पाया जाता।।
उनमें से प्रथम अहिंसा अणुव्रत, की पूजन का भाव जगा।
शीलव्रतों में अनतिचार के, भावों से मिथ्यात्व भगा।।14।।

ॐ ह्रीं अहिंसाणुव्रतपालनरूपशीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

हिंसादिक पाँचों पापों का जो, आंशिक त्याग किया जाता।
वह ही अणुव्रत कहलाता है, श्रावक में वो पाया जाता।।
उनमें से सत्यअणुव्रत दूजे, की पूजन का भाव जगा।
शीलव्रतों में अनतिचार के, भावों से मिथ्यात्व भगा।।15।।

ॐ ह्रीं सत्याणुव्रतपालनरूपशीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हिंसादिक पाँचों पापों का जो, आंशिक त्याग किया जाता।
वह ही अणुव्रत कहलाता है, श्रावक में वो पाया जाता।।
उनमें से तीजे अचौर्य, अणुव्रत पूजन का भाव जगा।
शीलव्रतों में अनतिचार के, भावों से मिथ्यात्व भगा।।16।।

ॐ ह्रीं अचौर्याणुव्रतपालनरूपशीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाह

हिंसादिक पाँचों पापों का जो, आंशिक त्याग किया जाता।
वह ही अणुव्रत कहलाता है, श्रावक में वो पाया जाता।।
उनमें से चौथे ब्रह्मचर्य, अणुव्रत पूजन का भाव जगा।
शीलव्रतों में अनतिचार के, भावों से मिथ्यात्व भगा।।17।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्याणुव्रतपालनरूपशीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

हिंसादिक पाँचों पापों का जो, आंशिक त्याग किया जाता।
वह ही अणुव्रत कहलाता है, श्रावक में वो पाया जाता।।

उनमें से परिग्रहपरीमाण, अणुव्रत पूजन का भाव जगा।
शीलव्रतों में अनतिचार के, भावों से मिथ्यात्व भगा।।18।।

ॐ ह्रीं परिग्रहपरिमाणअणुव्रतपालनरूपशीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावक के पाँच अणुव्रत त्रय-गुणव्रत चउ शिक्षाव्रत जानो।
उनमें तीनों गुणव्रत में से, पहले दिग्व्रत को पहचानो।।
इस व्रत में दशों दिशा के, गमनागमन की सीमा होती है।
तब शीलव्रतों में अनतिचार, भावना की रक्षा होती है।।19।।

ॐ ह्रीं दिग्व्रतनामगुणव्रतपालनरूपशीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावक के पाँच अणुव्रत त्रय-गुणव्रत चउ शिक्षाव्रत जानो।
उनमें हि देशव्रत नामक दूजे, गुणव्रत को तुम पहचानो।।
इस व्रत में गली मुहल्ले की, भी मर्यादा बन जाती है।
तब शीलव्रतों में अनतिचार, भावना हृदय में आती है।।20।।

ॐ ह्रीं देशव्रतनामगुणव्रतपालनरूपशीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावक के पाँच अणुव्रत त्रय-गुणव्रत चउ शिक्षाव्रत जानो।
उनमें हि अनर्थदण्डविरति, गुणव्रत तृतीय को पहचानो।।
पापोपदेश हिंसादानादिक, पाँचों का तुम त्याग करो।
फिर शीलव्रतों में अनतिचार, की पूजन में अनुराग करो।।21।।

ॐ ह्रीं अनर्थदण्डविरतिनामगुणव्रतपालनरूपशीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रय गुणव्रत के पश्चात् चार, शिक्षाव्रत भी पालन करना।
मनवचतन कृतकारित अनुमति, से पाप त्याग समता धरना।।
यह सामायिक शिक्षाव्रत है, इसके पालन से सुख मिलता।
अतिचार रहित शीलादि व्रतों की, पूजन से भव दुख टलता।।22।।

ॐ ह्रीं सामायिकनामशिक्षाव्रतपालनरूपशीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रय गुणव्रत के पश्चात् चार, शिक्षाव्रत भी पालन करना।
अष्टमी चतुर्दशि को प्रोषध, उपवास यथाशक्ती करना।।
यह है द्वितीय शिक्षाव्रत इस, पालन से आतम सुख मिलता।
अतिचार रहित शीलादि व्रतों की, पूजन से भव दुख टलता।।23।।

ॐ ह्रीं प्रोषधोपवासनामशिक्षाव्रतपालनरूपशीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रयगुणव्रत के पश्चात् चार, शिक्षाव्रत भी पालन करना।
भोगोपभोगपरिमाण नाम के, व्रत को तुम धारण करना।।
यह है तृतीय शिक्षाव्रत इसका, पालन करके सुख मिलता।
अतिचार रहित शीलादि व्रतों की, पूजन से भव दुख टलता।।24।।

ॐ ह्रीं भोगोपभोगपरिमाणनामशिक्षाव्रतपालनरूपशीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रयगुणव्रत के पश्चात् चार, शिक्षाव्रत भी पालन करना।
आहारदान के द्वारा अतिथी, संविभाग व्रत को धरना।।
यह है चतुर्थ शिक्षाव्रत इसका, पालन करके सुख मिलता।
अतिचार रहित शीलादि व्रतों की, पूजन से भव दुख टलता।।25।।

ॐ ह्रीं अतिथिसंविभागनामशिक्षाव्रतपालनरूपशीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवन में सबसे मूल्यवान, सम्यग्दर्शन को माना है।
वह मोक्षमार्ग के लिए प्रथम, सोपान उसे अब पाना है।।
सम्यक्त्व बिना आत्मा के सारे, गुण मिथ्या बन जाते हैं।
शीलादि व्रतों की शुद्धि हेतु, सम्यग्दर्शन गुण ध्याते हैं।।26।।

ॐ ही सम्यक्त्वगुणपालनरूपशीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चाहे गृहस्थ हों या मुनिवर, कर सकते सब सल्लेखना ग्रहण।
अपनी आयु के अन्तकाल में, कर सकते हैं समाधि मरण।।

इसके द्वारा अगले भव में भी, सुगति गमन का सुख मिलता।
अतिचार रहित शीलादि व्रतों की, पूजन से भव दुख टलता।।27।।

ॐ ह्रीं सल्लेखनागुणपालनरूपशीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

–पूर्णार्घ्य –

सोलहकारण में तृतिय भावना, शीलव्रतेष्वनतिचार कही।
मुनि के तेरह चारित्र व श्रावक, के बारहव्रतयुक्त सही।।
सम्यक्त्व व सल्लेखना सहित, सत्ताइस अर्घ्य चढ़ा करके।
''चन्दनामती'' शिवसुख हेतू, पूर्णार्घ्य चढ़ाऊँ आ करके।।1।।

ॐ ह्रीं सप्तविंशतिगुणसमन्वितशीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र – **ॐ ह्रीं शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै नमः।**

जयमाला

तर्ज-कभी राम बनके.....

पूजा पाठ करने, मंत्र जाप करने, चले आए मंदिर में चले आए।।टेक.।।

सोलहकारण की पूजा रचाई।
अष्ट द्रव्यों की थाली सजाई।।

पूजा पाठ करने, मंत्र जाप करने, चले आए मंदिर में चले आए।।1।।

सोलहकारण में है तीजी भावना।
उसमें शील और व्रत सभी पालना।।

पूजा पाठ करने, मंत्र जाप करने, चले आए मंदिर में चले आए।।2।।

तेरहविध चारित्र मुनि पालते।
श्रावक बारह व्रतों को धारते।।

पूजा पाठ करने, मंत्र जाप करने, चले आए मंदिर में आए।।3।।

इनमें तीन गुणव्रत चार शिक्षाव्रत।
सात शीलनाम से ये कहे सात व्रत।।

पूजा पाठ करने, मंत्र जाप करने, चले आए मंदिर में चले आए।।4।।

बारह तप बाइस परिषह जो पालते।
ये हैं चौंतिस गुण कहे मुनिराज के।।

पूजा पाठ करने, मंत्र जाप करने, चले आए मंदिर में चले आए।।5।।

शील और व्रतों को जो भी पालते।
अपने मानव जीवन को वे सुधारते।।

पूजा पाठ करने, मंत्र जाप करने, चले आए मंदिर में चले आए।।6।।

इसकी पूजा करके पूज्य बन जाओगे।
आत्मसुख 'चन्दनामति' पाओगे।।

पूजा पाठ करने, मंत्र जाप करने, चले आए मंदिर में चले आए।।7।।

ॐ ह्रीं शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद –

जो रुचिपूर्वक सोलहकारण, भावना की पूजा करते हैं।
मन-वच-तन से इनको ध्याकर, निज आतम सुख में रमते हैं।।
तीर्थंकर के पद कमलों में, जो मानव इनको भाते हैं।
वे ही इक दिन 'चन्दनामती', तीर्थंकर पदवी पाते हैं।।

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।

(पूजा नं.-5)

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग भावना पूजा

–स्थापना-दोहा –

सम्यक् ज्ञानाभ्यास में, नित्य रहें जो लीन।
वे मुनि अपने ध्यान से, करें कर्म को क्षीण।।1।।

ज्ञान तथा ज्ञानी पुरुष, हैं त्रिलोक में पूज्य।
वही ज्ञान मुझको मिले, बन जाऊँ जगपूज्य।।2।।

सोलहकारण भावना, में चतुर्थ का नाम।
अभीक्ष्ण ज्ञान उपयोग का, करूँ यहाँ आह्वान।।3।।

ॐ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावना! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावना! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावना! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक –

गंगा का निर्मल जल लेकर, स्वर्णिम कलशे में भर लाया।
निज जन्म मरण के नाश हेतु, प्रभु की पूजन करने आया।।
चौथी अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग, है कही भावना ग्रंथों में।
इसको भाकर तीर्थंकर पद, पाया है मुनि निर्ग्रन्थों ने।।1।।

ॐ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

काश्मीरी केशर घिसकर कनक, कटोरी में भर कर लाया।
संसार ताप के नाश हेतु, प्रभु की पूजन करने आया।।
चौथी अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग, है कही भावना ग्रंथों में।
इसको भाकर तीर्थंकर पद, पाया है मुनि निर्ग्रन्थों ने।।2।।

ॐ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा

शुभ वासमती के तंदुल धोकर, मुट्ठी में भरकर लाया।
मैं अक्षय पद की प्राप्ति हेतु, प्रभु की पूजन करने आया।।

चौथी अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग, है कही भावना ग्रंथों में।
इसको भाकर तीर्थंकर पद, पाया है मुनि निर्ग्रन्थों ने।।3।।

ॐ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

फूलों के उपवन से चुन चुनकर, पुष्प थाल में भर लाया।
निज कामबाण विध्वंस हेतु, प्रभु की पूजन करने आया।।
चौथी अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग, है कही भावना ग्रंथों में।
इसको भाकर तीर्थंकर पद, पाया है मुनि निर्ग्रन्थों ने।।4।।

ॐ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घेवर फेनी गुझिया आदिक, व्यंजन का थाल सजा लाया।
निज क्षुधारोग के नाश हेतु, प्रभु की पूजन करने आया।।
चौथी अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग, है कही भावना ग्रंथों में।
इसको भाकर तीर्थंकर पद, पाया है मुनि निर्ग्रन्थों ने।।5।।

ॐ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कंचन थाली में रजत दीप ले, मणिमय ज्योति जला लाया।
मोहांधकार के नाश हेतु, प्रभु की पूजन करने आया।।
चौथी अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग, है कही भावना ग्रंथों में।
इसको भाकर तीर्थंकर पद, पाया है मुनि निर्ग्रन्थों ने।।6।।

ॐ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन कपूर की धूप बना, अग्नी में दहन करने आया।
आठों कर्मों के नाश हेतु, प्रभु की पूजन करने आया।।
चौथी अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग, है कही भावना ग्रंथों में।
इसको भाकर तीर्थंकर पद, पाया है मुनि निर्ग्रन्थों ने।।7।।

ॐ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर सेव बादाम आदि, फल का मैं थाल सजा लाया।
अब मोक्ष महाफल प्राप्ति हेतु, प्रभु की पूजन करने आया।।
चौथी अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग, है कही भावना ग्रंथों में।
इसको भाकर तीर्थंकर पद, पाया है मुनि निर्ग्रन्थों ने।।8।।

ॐ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीतिस्वाहा।

जल से फल तक ''चन्दनामती'', मैं आठों द्रव्य सजा लाया।
मैं पद अनर्घ्य की प्राप्ति हेतु, प्रभु की पूजन करने आया।।
चौथी अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग, है कही भावना ग्रंथों में।
इसको भाकर तीर्थंकर पद, पाया है मुनि निर्ग्रन्थों ने।।9।।

ॐ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

ज्ञान भावना के लिए, कर लूँ शांतीधार।
ज्ञानप्राप्ति होवे मुझे, हो जाऊँ भवपार।।10।।

शांतये शांतिधारा।

ज्ञानगुणों की प्राप्तिहित, पुष्पांजली चढ़ाय।
ज्ञानभावना के लिए, पुष्प सुगंधित लाय।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

(चतुर्थ वलय में 19 अर्घ्य, 1 पूर्णार्घ्य)

–दोहा–

अभीक्ष्ण ज्ञान उपयोग की, पूजन करूँ महान।
मण्डल पर पुष्पांजली, करके पाऊँ ज्ञान।।

इति मण्डलस्योपरि चतुर्थदले पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–चौबोल छंद–

पाँच ज्ञान में मतिज्ञान के, भेद तीन सौ छत्तिस हैं।
है परोक्ष यह ज्ञान सदा, रहता श्रुतज्ञान के ही संग है।।
मैं अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग, भावना को भाने आया हूँ।
सोलहकारण पूजन करके, अर्घ्य चढ़ाने आया हूँ।।1।।

ॐ ह्रीं मतिज्ञानसंयुक्त अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुतिय ज्ञान श्रुतज्ञान के दो, बारह अरु भेद अनेक कहे।
अंगप्रविष्ट के बारह भेद व, अंगबाह्य के अनेक रहे।।

मैं अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग, भावना को भाने आया हूँ।
सोलहकारण पूजन करके, अर्घ्य चढ़ाने आया हूँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्रुतज्ञानसंयुक्त अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है अष्टांग निमित्तज्ञान, इससे श्रुतज्ञान निखरता है।
सम्यक् श्रुतज्ञानी श्रुताभ्यास से इसे प्राप्त कर सकता है।।
मैं अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग, भावना को भाने आया हूँ।
सोलहकारण पूजन करके, अर्घ्य चढ़ाने आया हूँ।।3।।

ॐ ह्रीं अष्टनिमित्तश्रुतज्ञानसंयुक्तअभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नभ में सूरज चंदा एवं ग्रह, मेघपटल आदिक लखकर।
तन में तिल व्यंजन आदि देख, शुभ अशुभ बताते हैं मुनिवर।।
उन अंतरिक्ष श्रुतज्ञानी के, चरणों में अर्घ्य चढ़ाना है।
यह भी अभीक्ष्णज्ञानोपयोग से, ही जाता पहचाना है।।4।।

ॐ ह्रीं अंतरिक्षनिमित्तकश्रुतज्ञानसमन्वितअभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धरती में स्वर्ण रतन हड्डी आदिक से भूमि परीक्षण कर।
इत्यादि अनेकों चिन्हों से शुभ अशुभ बताते हैं मुनिवर।।
उन भौम निमित्तक श्रुतज्ञानी के पद में अर्घ्य चढ़ाना है।
यह भी अभीक्ष्णज्ञानोपयोग से ही जाना पहचाना है।।5।।

ॐ ह्रीं भौमनिमित्तकश्रुतज्ञानसमन्वितअभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिर्यंच मनुज आदिक तन में, शुभ-अशुभ चिन्ह का ज्ञान जिन्हें।
उनका रस रुधिर आदि लखकर, हित-अहित का हो विज्ञान जिन्हें।।
उन अंग निमित्तक श्रुतज्ञानी के, पद में अर्घ्य चढ़ाना है।
यह भी अभीक्ष्णज्ञानोपयोग से, ही जाता पहचाना है।।6।।

ॐ ह्रीं अंगनिमित्तकश्रुतज्ञानसमन्वितअभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिर्यंच मनुज आदिक जो भी, शुभ अशुभ शब्द बोला करते।
उनके स्वर को सुनकर निमित्तज्ञानी सुख-दुःख फल को कहते।।

उन स्वरनिमित्त श्रुतज्ञानी के, चरणों में अर्घ्य चढ़ाना है।
यह भी अभीक्ष्णज्ञानोपयोग, से ही जाता पहचाना है।।7।।

ॐ ह्रीं स्वरनिमित्तकश्रुतज्ञानसमन्वितअभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन पर मस्सा तिल आदि देखकर, जो भविष्य बतलाते हैं।
शुभ अशुभ जान करके उनका, संकट भी दूर भगाते हैं।।
उन व्यंजन के निमित्तज्ञानी के, पद में अर्घ्य चढ़ाना है।
यह भी अभीक्ष्णज्ञानोपयोग, से ही जाता पहचाना है।।8।।

ॐ ह्रीं व्यंजननिमित्तकश्रुतज्ञानसमन्वितअभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन में जो स्वस्तिक कलश वज्र, मछली ध्वज आदि लक्षण हैं।
इनका अवलोकन करके जो, बतलाते सुख दुख साधन हैं।।
उन लक्षण ज्ञानी मुनिवर के, चरणों में अर्घ्य चढ़ाना है।
यह भी अभीक्ष्णज्ञानोपयोग, से ही जाता पहचाना है।।9।।

ॐ ह्रीं लक्षणनिमित्तकश्रुतज्ञानसमन्वितअभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आभूषण वस्त्रादिक तन के, जब छिन्न-भिन्न हो जाते हैं।
उनको लखकर निमित्तज्ञानी, शुभ अशुभ काल बतलाते हैं।।
उन छिन्ननिमित्तज्ञानि मुनिवर के, पद में अर्घ्य चढ़ाना है।
यह भी अभीक्ष्णज्ञानोपयोग, से ही जाता पहचाना है।।10।।

ॐ ह्रीं छिन्ननिमित्तकश्रुतज्ञानसमन्वितअभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुप्तावस्था में स्वप्न शुभाशुभ, देख विकल्प उपजते हैं।
जो उनका अर्थ समझ जाते, वे ही उनका फल कहते हैं।।
उन स्वप्न निमित्तज्ञानी मुनिवर के, पद में अर्घ्य चढाना है।
यह भी अभीक्ष्णज्ञानोपयोग, से ही जाता पहचाना है।।11।।

ॐ ह्रीं स्वप्ननिमित्तकश्रुतज्ञानसमन्वितअभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टांग निमित्त में अंतरिक्ष अरु, भौम अंग स्वर व्यंजन हैं।
लक्षण व छिन्न अरु स्वप्न निमित्तक, आठ भेद का वर्णन है।।
इनके निमित्त से मति एवं, श्रुतज्ञान में वृद्धि होती है।
मैं पूजूँ अर्घ्य चढ़ा करके, निज आतम शुद्धि होती है।।12।।

ॐ ह्रीं अष्टांगनिमित्तकश्रुतज्ञानोत्पादकअभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–गीता छंद –

श्रुतज्ञान के पश्चात् अवधि-ज्ञान को अब जानिए।
जिनशास्त्र के अनुसार इसके, भेद त्रय पहचानिए।।
इस अवधिज्ञान की प्राप्ति हेतू, अर्घ्य मैं अर्पण करूँ।
ज्ञानोपयोग अभीक्ष्ण होवे, प्रभु चरण चर्चन करूँ।।13।।

ॐ ह्रीं अवधिज्ञानोत्पादकअभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उस अवधिज्ञान के तीन भेदों, में प्रथम देशावधी।
चारों गती में प्राप्त इसको, कर सकें प्राणी सभी।।
इस अवधिज्ञान की प्राप्ति हेतू, अर्घ्य मैं अर्पण करूँ।
ज्ञानोपयोग अभीक्ष्ण होवे, प्रभु चरण चर्चन करूँ।।14।।

ॐ ह्रीं देशावधिज्ञानोत्पादकअभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

उस अवधिज्ञान के तीन भेदों, में दुतिय परमावधी।
बस मोक्षगामी मुनिवरों में, ही अवधि यह है कही।।
इस अवधिज्ञान की प्राप्ति हेतू, अर्घ्य मैं अर्पण करूँ।
ज्ञानोपयोग अभीक्ष्ण होवे, प्रभु चरण चर्चन करूँ।।15।।

ॐ ह्रीं परमावधिज्ञानोत्पादकअभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाह

उस अवधिज्ञान के तीन भेदों, में तृतिय सर्वावधी।
इसको भी केवल प्राप्त कर, सकते मुनीश्वर ही कभी।।
इस अवधिज्ञान की प्राप्ति हेतू, अर्घ्य मैं अर्पण करूँ।
ज्ञानोपयोग अभीक्ष्ण होवे, प्रभु चरण चर्चन करूँ।।16।।

ॐ ह्रीं सर्वावधिज्ञानोत्पादकअभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाह

–दोहा–

मनःसुपर्ययज्ञान के, हैं दो भेद महान।
ऋजुमति उनमें प्रथम को, पूजूँ हो कल्याण।।17।।

ॐ ह्रीं ऋजुमतीमनःपर्ययज्ञानोत्पादकअभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनःसुपर्ययज्ञान के, हैं दो भेद महान।
विपुलमती उनमें दुतिय, पूजूँ हो कल्याण।।18।।

ॐ ह्रीं विपुलमतीमनःपर्ययज्ञानोत्पादकअभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–शेर छंद–

जो मूर्त औ अमूर्त, सब पदार्थ को जाने।
त्रैलोक्य अरु त्रिकालवर्ति, तत्त्व पिछाने।।
उस क्षायिकी कैवल्यज्ञान, को जजूँ यहाँ।
पाऊँ अभीक्ष्ण ज्ञान का, उपयोग सर्वदा।।19।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानोत्पादक अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायैअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य (शेर छंद)–

पाँचों प्रकार ज्ञान को, जो प्राप्त करावे।
हम वह अभीक्ष्ण ज्ञानयुक्त, भावना भावें।।
इस भावना को हम यहाँ, पूर्णार्घ्य चढ़ावें।
फिर 'चन्दनामति' क्रम से, मोक्षधाम को पावें।।1।।

ॐ ह्रीं पंचज्ञानभेदसहितअभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र–**ॐ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै नमः।**

जयमाला

तर्ज-चन्दाप्रभु के दर्शन करने.....

सोलहकारण भावना भाकर तीर्थंकर पद पाना है।
जयमाला गाकर अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगि बन जाना है।।टेक.।।

श्री जिनवर के मुख से निकली वाणी ही जिनवाणी है।
चारों अनुयोगों में गूंथी वही परम कल्याणी है।।
गुरुमुख से उनको पढ़कर ही ज्ञानाभ्यास बढ़ाना है।
जयमाला गाकर अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगि बन जाना है।।1।।

ग्रंथों के स्वाध्याय से कर्मों की निर्जरा हुआ करती।
मुक्ति अंगना भी क्रमशः स्वाध्याय से प्राप्त हुआ करती।।
कर स्वाध्याय जिनागम का आत्मा को शुद्ध बनाना है।
जयमाला गाकर अभीक्ष्णज्ञानोपयोगि बन जाना है।।2।।

जिनसूत्रों का अध्यन कभी अकाल में नहीं किया जाता।
सूत्रग्रंथ अध्ययन सदा त्रैकालिक में ही किया जाता।।
आगम वर्णित काल में ही स्वाध्याय से सत्फल पाना है।
जयमाला गाकर अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगि बन जाना है।।3।।

विनयसहित यदि पढ़ा गया श्रुत विस्मृत भी हो जाता है।
तो भी जन्मान्तर में ज्यों का त्यों प्रगटित हो जाता है।।
इस श्रद्धा के साथ सदा निज ज्ञानाभ्यास बढ़ाना है।
जयमाला गाकर अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगि बन जाना है।।4।।

अपने ज्ञान की वृद्धि हेतु ज्ञानी की सदा विनय करना।
गणिनी ज्ञानमती माताजी के सम ज्ञान हृदय धरना।।
ले पूर्णार्घ्य 'चन्दनामति' शुभ भाव से उसे चढ़ाना है।
जयमाला गाकर अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगि बन जाना है।।5।।

ॐ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद–

जो रुचिपूर्वक सोलहकारण, भावना की पूजा करते हैं।
मन-वच-तन से इनको ध्याकर, निज आतम सुख में रमते हैं।।
तीर्थंकर के पद कमलों में, जो मानव इनको भाते हैं।
वे ही इक दिन 'चन्दनामती', तीर्थंकर पदवी पाते हैं।।

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।

(पूजा नं.-6)

संवेगभावना पूजा

–स्थापना –

तर्ज-श्रीपति जिनवर करुणायतनं.....

हे नाथ! तुम्हारी पूजन का, शुभ भाव हृदय में आया है।
जग के दुःखों से घबराकर, यह भक्त तेरे ढिग आया है।।टेक.।।

सोलहकारण की एक-एक, भावना पढ़ी जब से मैंने।
संसार प्रपंचों को तजने, का भाव बनाया है मैंने।।

बस इसीलिए पूजन करने का, भाव हृदय में आया है।
जग के दुःखों से घबराकर, यह भक्त तेरे ढिग आया है।।1।।

शारीरिक-मानस-आगंतुक, दुःखों से भरा भवसागर है।
यहाँ इष्ट वियोग अनिष्ट योग दुख, चिरकालीन निशाचर है।

उनसे मुक्ति पाने हेतू, संवेग भाव मन आया है।
जग के दुःखों से घबराकर, यह भक्त तेरे ढिग आया है।।2।।

–दोहा –

आह्वानन स्थापना, सन्निधिकरण महान।
करके मन में भावना, है संवेग प्रधान।।3।।

ॐ ह्रीं संवेगभावना! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं संवेगभावना! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं संवेगभावना! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अष्टक (दोहा) –

गंगा नदि का नीर ले, धार करूँ जिन पाद।
मैं संवेग सुभावना, जजूँ हरूँ मन ताप।।1।।

ॐ ह्रीं संवेगभावनायै जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि की गंध ले, चर्चूं जिनवर पाद।
मैं संवेगसुभावना, जजूँ हरूँ मन ताप।।2।।

ॐ ह्रीं संवेगभावनायै संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तंदुल धवल सुगंध ले, अर्पूं जिनवर पाद।
मैं संवेग सुभावना, जजूँ हरूँ मन ताप।।3।।

ॐ ह्रीं संवेगभावनायै अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जुही गुलाब सु केवड़ा, अर्पूं जिनवर पाद।
मैं संवेग सुभावना, जजूँ हरूँ मन ताप।।4।।

ॐ ह्रीं संवेगभावनायै कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंजन सरस बनायके, अर्पूं जिनवर पाद।
मैं संवेग सुभावना, जजूँ हरूँ मन ताप।।5।।

ॐ ह्रीं संवेगभावनायै क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत का दीप जलायके, करूँ आरती नाथ।
मैं संवेग सुभावना, जजूँ हरूँ मन ताप।।6।।

ॐ ह्रीं संवेगभावनायै मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप सुगंधित अग्नि में, दहन करूँ जिनपाद।
मैं संवेग सुभावना, जजूँ हरूँ मन ताप।।7।।

ॐ ह्रीं संवेगभावनायै अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल अंगूर अनार ले, अर्पूं जिनवर पाद।
मैं संवेग सुभावना, जजूँ हरूँ मन ताप।।8।।

ॐ ह्रीं संवेगभावनायै मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य थाल ''चन्दनामती'' अर्पण है जिनपाद।
मैं संवेग सुभावना, जजूँ हरूँ मन ताप।।9।।

ॐ ह्रीं संवेगभावनायै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतीधारा मैं करूँ, आत्मशांति के काज।
मैं संवेग सुभावना, जजूँ हरूँ मन ताप।।10।।

शांतये शांतिधारा।

पुष्पांजलि अर्पण करूँ, आत्मसुरभि के काज।
मैं संवेग सुभावना, जजूँ हरूँ मन ताप।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

(पंचम वलय में 14 अर्घ्य, 1 पूर्णार्घ्य)

–सोरठा –

सोलहकारण में, है संवेग सु भावना।
उसके पालन हेतु, करलूँ आतम साधना।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पंचमदले पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–शंभु छंद –

पृथिवीकायिक जीवों की, कुलकोटि सात लख मानी हैं।
उनकी विराधना नहिं हो उनमें, भी जीवात्मा मानी है।।
ऐसी योनि मिले नहिं मुझको, यही भावना भानी है।
जग से हो वैराग्य प्रभो! मिल जावे मुक्ति निशानी है।।1।।

ॐ ह्रीं पृथिवीकायदुःखविरक्ताय संवेगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जलकायिक जीवों की भी, कुलकोटि सात लख मानी हैं।
उनकी विराधना नहिं हो उनमें, भी जीवात्मा मानी है।।
ऐसी योनि मिले नहिं मुझको, यही भावना भानी है।
जग से हो वैराग्य प्रभो! मिल जावे मुक्ति निशानी है।।2।।

ॐ ह्रीं जलकायदुःखविरक्ताय संवेगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नीकायिक जीवों की, कुलकोटि सातलख मानी हैं।
उनकी विराधना नहिं हो उनमें, भी जीवात्मा मानी है।।
ऐसी योनि मिले नहिं मुझको, यही भावना भानी है।
जग से हो वैराग्य प्रभो! मिल जावे मुक्ति निशानी है।।3।।

ॐ ह्रीं अग्निकायदुःखविरक्ताय संवेगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वायुकायिक जीवों की, कुलकोटि सातलख मानी हैं।
उनकी विराधना नहिं हो उनमें, भी जीवात्मा मानी है।।
ऐसी योनि मिले नहिं मुझको, यही भावना भानी है।
जग से हो वैराग्य प्रभो! मिल जावे मुक्ति निशानी है।।4।।

ॐ ह्रीं वायुकायिकदुःखविरक्ताय संवेगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वनस्पति वृक्षों की दशलख, कुलकोटियाँ बखानी हैं।
उनकी विराधना नहिं हो उनमें, भी जीवात्मा मानी है।।
ऐसी योनि मिले नहिं मुझको, यही भावना भानी है।
जग से हो वैराग्य प्रभो! मिल जावे मुक्ति निशानी है।।5।।

ॐ ह्रीं वनस्पतिकायिकदुःखविरक्ताय संवेगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नित्यनिगोद के दुःख को जिह्वा, द्वारा कहा न जा सकता।
सात लाख कुलकोटि में, लेकर जन्म मरण करता।।
ऐसी योनि मिले नहिं मुझको, यही भावना भानी है।
जग से हो वैराग्य प्रभो! मिल जावे मुक्ति निशानी है।।6।।

ॐ ह्रीं नित्यनिगोददुःखविरक्ताय संवेगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इतरनिगोदी जीवों की, कुलकोटि सातलख मानी हैं।
उनकी विराधना नहिं हो उनमें, भी जीवात्मा मानी है।।
ऐसी योनि मिले नहिं मुझको, यही भावना भानी है।
जग से हो वैराग्य प्रभो! मिल जावे मुक्ति निशानी है।।7।।

ॐ ह्रीं इतरनिगोददुःखविरक्ताय संवेगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वीन्द्रिय जीव असंख्याता-संख्यात भेदयुत माने हैं।
उनके कुल दो लाख तरह के, जिनआगम में बखाने हैं।।
ऐसी योनि मिले नहिं मुझको, यही भावना भानी है।
जग से हो वैराग्य प्रभो! मिल जावे मुक्ति निशानी है।।8।।

ॐ ह्रीं द्वीन्द्रियजीवदुःखविरक्ताय संवेगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रीन्द्रिय जीव असंख्याता-संख्यात भेद युत माने हैं।
उनके कुल दो लाख तरह के, जिन आगम में बखाने हैं।।
ऐसी योनि मिले नहिं मुझको, यही भावना भानी है।
जग से हो वैराग्य प्रभो! मिल जावे मुक्ति निशानी है।।9।।

ॐ ह्रीं त्रीन्द्रियजीवदुःखविरक्ताय संवेगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुरिन्द्रिय भी असंख्याता-संख्यात भेदयुत माने हैं।
उनके कुल दो लाख तरह के, जिनआगम में बखाने हैं।।

ऐसी योनि मिले नहिं मुझको, यही भावना भानी है।
जग से हो वैराग्य प्रभो! मिल जावे मुक्ति निशानी है।।10।।

ॐ ह्रीं चतुरिन्द्रियजीवकायदुःखविरक्ताय संवेगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्चेन्द्रिय मनुजों की चौदह-लख कुलकोटि बखानी हैं।
मनुजयोनि पाकर हमने, उसकी कीमत पहचानी है।।
ऐसी दुर्लभ मनुजयोनि में, यही भावना भानी है।
जग से हो वैराग्य प्रभो! मिल जावे मुक्ति निशानी है।।11।।

ॐ ह्रीं पंचेन्द्रियमनुष्यपर्यायजनितदुःखविरक्ताय संवेगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवगती में देवों की कुलकोटि, चार लख मानी हैं।
सम्यग्दर्शन युक्त देवगति, की महिमा ही बखानी है।।
देवगती पाने हेतू अब, यही भावना भानी है।
जग से हो वैराग्य प्रभो! मिल जावे मुक्ति निशानी है।।12।।

ॐ ह्रीं देवगतिजनितदुःखविरक्ताय संवेगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिर्यंचगति में जीवों की, कुलकोटि चार लख मानी हैं।
इसके दुख को जान मुझे, तिर्यंचगति नहिं पानी हैं।।
सम्यग्दर्शन दृढ़ हो मेरा, यही भावना भानी है।
जग से हो वैराग्य प्रभो! मिल जावे मुक्ति निशानी है।।13।।

ॐ ह्रीं तिर्यंचगतिजनितदुःखविरक्ताय संवेगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरकगति के जीवों की, कुलकोटि चार लख मानी हैं।
वहाँ के दुःख को जान मुझे, अब नरकगती नहिं पानी है।।
सम्यग्दर्शन दृढ़ हो मेरा, यही भावना भानी है।
जग से हो वैराग्य प्रभो! मिल जावे मुक्ति निशानी है।।14।।

ॐ ह्रीं नरकगतिजनितदुःखविरक्ताय संवेगभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य –

इन चौरासी लाख योनियों, में अनादि से भ्रमण हुआ।
हे प्रभु! आत्मज्ञान बिन मेरा, शिवपथ में नहिं गमन हुआ।।
पूर्ण अर्घ्य ले इसीलिए, संवेग भावना पूजूँ मैं।
जिनवर के चरणों में आकर, भव भव दुख से छूटूँ मैं।।1।।

ॐ ह्रीं चतुरशीतिलक्षयोनिजनितसंसारदुःखविरक्ताय संवेगभावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र – **ॐ ह्रीं संवेगभावनायै नमः।**

जयमाला

तर्ज-हम लाएँ हैं तूफान से.....

हम आए हैं जिनवर चरण, पूर्णार्घ्य को लेके।
संवेगभावना को निज, हृदय में संजोके।।टेक.।।

चौरासिलाख योनियों में, समय बिताया।
मैंने अनादिकाल से बस, दुख को ही पाया।।
कुछ पुण्य से नरभव में आए, जन्म को लेके।
संवेगभावना को निज, हृदय में संजोके।।1।।

स्वर्गों के सुख भोगे वहाँ भी, शांति न पाई।
नरकों में रो रोकर वहाँ की, आयु बिताई।।
मानव जनम सार्थक करूँ, सम्यक्त्व को लेके।
संवेग भावना को निज, हृदय में संजोके।।2।।

प्रभु के निकट मैं सोलहकारण, भावना भाऊँ।
सम्यक्त्व की महिमा से आतम, शुद्ध बनाऊँ।।
भव भव में मिले भक्ति यही, आश मन लेके।
संवेगभावना को निज, हृदय में संजोके।।3।।

संसार के दुख से प्रभो! अब, डर लगा करता।
कैसे तिरूँ भवसिंधु को, चिन्तन किया करता।।

बस इसलिए ही भावनाएँ, भाई हैं मन में।
संवेग भावना को निज, हृदय में संजोके।।4।।

पूजन से मेरी आत्मा भी, पूज्य बनेगी।
भावों की परिणती से शिव-गती भी मिलेगी।।
बस ''चन्दनामती'' चढ़ाऊँ, अर्घ्य प्रभो मैं।
संवेग भावना को निज, हृदय में संजोके।।5।।

ॐ ह्रीं संवेगभावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद –

जो रुचिपूर्वक सोलहकारण, भावना की पूजा करते हैं।
मन-वच-तन से इनको ध्याकर, निज आतम सुख में रमते हैं।।
तीर्थंकर के पद कमलों में, जो मानव इनको भाते हैं।
वे ही इक दिन 'चन्दनामती', तीर्थंकर पदवी पाते हैं।।

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।

(पूजा नं. 7)

शक्तितस्त्यागभावना पूजा

–स्थापना (सोरठा छंद) –

शक्ति के अनुसार, त्याग भावना भायके।
जिनपूजन सुखकार, करूँ थापना आयके।।1।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्त्यागभावना! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं शक्तितस्त्यागभावना! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं शक्तितस्त्यागभावना! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक (सोरठा) –

गंग नदी जल लाय, जिनवर चरण पखार लूँ।
त्याग भावना भाय, मन को शुद्ध बनाय लूँ।।1।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्त्यागभावनायै जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन केशर लाय, जिनवर चरण लगाय दूँ।
त्याग भावना भाय, मन को शुद्ध बनाय लूँ।।2।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्त्यागभावनायै संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत धोकर लाय, जिनवर निकट चढ़ाय दूँ।
त्याग भावना भाय, मन को शुद्ध बनाय लूँ।।3।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्त्यागभावनायै अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बहु विध पुष्प मंगाय, जिनवर निकट चढ़ायदूँ।
त्याग भावना भाय, मन को शुद्ध बनाय लूँ।।4।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्त्यागभावनायै कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंजन सरस बनाय, जिनवर निकट चढ़ाय दूँ।
त्याग भावना भाय, मन को शुद्ध बनाय लूँ।।5।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्त्यागभावनायै क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत का दीप जलाय, आरति प्रभु की उतार लूँ।
त्याग भावना भाय, मन को शुद्ध बनाय लूँ।।6।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्त्यागभावनायै मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप सुगंधित लाय, प्रभु के निकट जलाय लूँ।
त्याग भावना भाय, मन को शुद्ध बनाय लूँ।।7।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्त्यागभावनायै अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल का थाल मंगाय, प्रभु के निकट चढ़ाय दूँ।
त्याग भावना भाय, मन को शुद्ध बनाय लूँ।।8।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्त्यागभावनायै मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य 'चन्दना' लाय, प्रभु के चरण चढ़ाय दूँ।
त्याग भावना भाय, मन को शुद्ध बनाय लूँ।।9।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्त्यागभावनायै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कंचन झारी लाय, जिनपद शांतीधार दूँ।
त्याग भावना भाय, मन को शुद्ध बनाय लूँ।।10।।

शांतये शांतिधारा।

चंपा पुष्प मंगाय, पुष्पांजलि चढ़ाय दूँ।
त्याग भावना भाय, मन को शुद्ध बनाय लूँ।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

(छठे वलय में 4 अर्घ्य, 1 पूर्णार्घ्य)

–दोहा–

त्याग भावना के लिए, पूजन द्रव्य मंगाय।
पुष्पांजलि कर लूँ प्रभो! मन में अति हरषाय।।1।।

इति मण्डलस्योपरि षष्ठदले पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

तर्ज –ॐ जय महावीर प्रभो.....

ॐ जय जिनवर देवा, स्वामी जय जिनवर देवा।
त्याग भावना भाकर-2, बने परम देवा।। ॐ जय.।।
जो आहारदान दे मुनि को, पुण्य लाभ लेवें। प्रभु पुण्य.....
भोगभूमि एवं स्वर्गों की-2, सुख सम्पत्ति सेवें।। ॐ जय.।।1।।

ॐ ह्रीं आहारदानरूपशक्तितस्त्यागभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ जय जिनवर देवा, स्वामी जय जिनवर देवा।
त्याग भावना भाकर-2, बने परम देवा।। ॐ जय.।।
प्रासुक औषधि दान करें जो, पुण्यलाभ पावें। प्रभु पुण्य.....
स्वस्थ शरीरी होकर-2, मुक्तिधाम पावें।। ॐ जय.।।2।।

ॐ ह्रीं औषधिदानरूपशक्तितस्त्यागभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ जय जिनवर देवा, स्वामी जय जिनवर देवा।
त्याग भावना भाकर-2, बने परम देवा।। ॐ जय.।।
सच्चे शास्त्र को देना, ज्ञानदान माना। प्रभु पुण्य.....
इसको दे भव्यात्मन्-2, ज्ञानी बन जाना।।ॐ जय.।।3।।

ॐ ह्रीं ज्ञानदानरूपशक्तितस्त्यागभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ जय जिनवर देवा, स्वामी जय जिनवर देवा।
त्याग भावना भाकर-2, बने परम देवा।। ॐ जय.।।
त्रस स्थावर जीव की, दया सदा पालूँ। प्रभु पुण्य.....
अभयदान दे उनको-2, आत्मशांति मानूँ।।ॐ जय.।।4।।

ॐ ह्रीं अभयदानरूपशक्तितस्त्यागभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-कुसुमलता छंद –

यथाशक्ति जो चार तरह के, दान सदा देते रहते।
वे ही त्याग भावना भाकर, निज पर का अनुग्रह करते।।
मैं पूर्णार्घ्य समर्पित करके, त्याग भावना भाता हूँ।
सोलहकारण के विधान में, तीर्थंकरगुण ध्याता हूँ।।1।।

ॐ ह्रीं चतुःभेदसमन्वित शक्तितस्त्यागभावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र – **ॐ ह्रीं शक्तितस्त्यागभावनायै नमः।**

जयमाला

तर्ज-सांची कहूँ तोरे आवन से.....

सांची कहूँ प्रभु पूजन से मन के, भग जाते सारे विकार हो जी। भग जाते...
समता की सूरत, वीतराग मूरत, अपने प्रभू को निहार लो जी।।टेक.।।

दर्शन से मिटता है मिथ्या अंधेरा,
हट जाता है काले कर्मों का डेरा।
भाव बढ़ा लो, पूजा रचा लो, भर लो पुण्य भण्डार हो जी....।।1।।

निशदिन ध्यान धरूँ प्रभु तेरा,
हो जाएगा तब सम्यक् उजेरा।
ध्यान लगा ले, कर्म जला ले, कर लो धर्मसंचार हो जी.....।।2।।

जिसने भी सच्चे मन से है ध्याया,
तूने उसे भव से पार लगाया।
ऐसा सुना है, देखा यही है, आया तभी प्रभु के द्वार हो जी.....।।3।।

जो शक्तितस्त्याग की भावना को,
भाता व करता है तपसाधना को।
दान भी कर लो, ध्यान भी कर लो, मिल जोक्सुख भण्डार हो जी.....।।4।।

जयमाला का अर्घ्य प्रभु को चढ़ाऊँ,
तब ''चन्दनामति'' अनघपद को पाऊँ।
ऐसी ही रीती, है धर्मनीती, बतलाती जीवन का सार हो जी.....।।5।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्त्यागभावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद –

जो रुचिपूर्वक सोलहकारण, भावना की पूजा करते हैं।
मन-वच-तन से इनको ध्याकर, निज आतम सुख में रमते हैं।।
तीर्थंकर के पद कमलों में, जो मानव इनको भाते हैं।
वे ही इक दिन 'चन्दनामती', तीर्थंकर पदवी पाते हैं।।

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।

(पूजा नं.-8)

शक्तितस्तपो भावना पूजा

–स्थापना-दोहा –

सोलहकारण भावना, भाते जो चित लाय।
तीर्थंकर पद प्राप्ति का, करते वही उपाय।।1।।

उसमें सप्तम भावना, तप संज्ञा से प्रसिद्ध।
जिसको भाकर योगिजन, पाते हैं पद सिद्ध।।2।।

उसकी पूजन हेतु मैं, करूँ यहाँ आह्वान।
संस्थापन सन्निधिकरण, कर मैं बनूँ महान।।3।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्तपो भावना! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं शक्तितस्तपो भावना! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं शक्तितस्तपो भावना! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक –

तर्ज-हमरी गुलाबी चुनरिया.....

भक्ति की भरली गगरिया।
तू भव पार कर दे संवरिया।।टेक.।।
क्षीर समुद्र से जल भर लाए-2 प्रभु पद में डारें गगरिया....कि भव पार....।
तप भावना की पूजा रचाई-2, चलना है मुक्ति डगरिया....कि भव पार....।।1।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्तपोभावनायै जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्ति की भर ली गगरिया।
तू भव पार कर दे संवरिया।।टेक.।।
मलयागिरि चंदन से प्रभु जी, पूजूँ मैं सारी उमरिया....कि भव पार.....।
तप भावना की पूजा रचाई-2, चलना है मुक्ति डगरिया....कि भव पार....।।2।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्तपोभावनायै संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्ति की भर ली गगरिया।
तू भव पार कर दे संवरिया।।टेक.।।

अक्षत के पुंजों से प्रभू जी, पूजूँ मैं सारी उमरिया....कि भव पार.....।
तप भावना की पूजा रचाई-2, चलना है मुक्ति डगरिया....कि भव पार....।।3।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्तपोभावनायै अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्ति की भर ली गगरिया।
तू भव पार कर दे संवरिया।।टेक.।।

चंपा चमेली पुष्पों से प्रभु जी, पूजूँ मैं सारी उमरिया....कि भव पार.....।
तप भावना की पूजा रचाई-2, चलना है मुक्ति डगरिया....कि भव पार....।।4।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्तपोभावनायै कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्ति की भर ली गगरिया।
तू भव पार कर दे संवरिया।।टेक.।।

क्षुध नाश हेतू नैवेद्य से प्रभु, पूजूँ मैं सारी उमरिया....कि भव पार.....।
तप भावना की पूजा रचाई-2, चलना है मुक्ति डगरिया....कि भव पार....।।5।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्तपोभावनायै क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्ति की भर ली गगरिया।
तू भव पार कर दे संवरिया।।टेक.।।

दीपक से आरति करके प्रभू जी, पूजूँ मैं सारी उमरिया....कि भव पार.....।
तप भावना की पूजा रचाई-2, चलना है मुक्ति डगरिया....कि भव पार....।।6।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्तपोभावनायै मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्ति की भर ली गगरिया।
तू भव पार कर दे संवरिया।।टेक.।।

धूप चढ़ाकर अग्नि में प्रभु जी, पूजूँ मैं सारी उमरिया....कि भव पार.....।
तप भावना की पूजा रचाई-2, चलना है मुक्ति डगरिया....कि भव पार....।।7।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्तपोभावनायै अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्ति की भर ली गगरिया।
तू भव पार कर दे संवरिया।।टेक.।।

मीठे सरस फल लेकर प्रभू जी, पूजूँ मैं सारी उमरिया....कि भव पार.....।
तप भावना की पूजा रचाई-2, चलना है मुक्ति डगरिया....कि भव पार....।।8।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्तपोभावनायै मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्ति की भर ली गगरिया।
तू भव पार कर दे संवरिया।।टेक.।।

जल फल सहित अर्घ्य लेकर के प्रभु जी, पूजूँ मैं सारी उमरिया..कि भव पार..।
तप भावना की पूजा रचाई-2, चलना है मुक्ति डगरिया....कि भव पार....।।9।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्तपोभावनायै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

शांतीधारा मैं करूँ, जल का कलश मंगाय।
निज मन को पावन करूँ, तपो भावना भाय।।10।।

शांतये शांतिधारा।

पुष्पांजलि के हेतु मैं, पुष्प सुगंधित लाय।
निज मन को पावन करूँ, तपो भावना भाय।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

(सातवें वलय में 12 अर्घ्य, 1 पूर्णार्घ्य)

–सोरठा–

सोलहकारण में, शक्तीतस्तप भावना।
उसके पालन हेत, कर लूँ आतम साधना।।1।।

इति मण्डलस्योपरि सप्तमदले पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–कुसुमलता छंद–

बाह्य तपों में अनशन तप, पहला है जिनशासन में।
व्रत उपवासादिक करके जो, भरे शक्ति आतम में।।
यहाँ शक्तितस्तपो भावना-हेतू अर्घ्य चढ़ाना।
जिनने इसको प्राप्त किया है, उनको शीश झुकाना।।1।।

ॐ ह्रीं अनशनतपरूपशक्तितस्तपोभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवमौदर्य दूसरे तप में, भूख से कम खाते हैं।
इस तप को करने वाले, भी तपसी कहलाते हैं।।

यहाँ शक्तितस्तपो भावना-हेतू अर्घ्य चढ़ाना।
जिनने इसको प्राप्त किया है, उनको शीश झुकाना।।2।।

ॐ ह्रीं अवमौदर्यतपरूपशक्तितस्तपोभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुछ अटपटा नियम लेकर, मुनि आहार को जाते।
वृत्तपरीसंख्यान तपस्या, युक्त वही कहलाते।।
यहाँ शक्तितस्तपो भावना-हेतू अर्घ्य चढ़ाना।
जिनने इसको प्राप्त किया है, उनको शीश झुकाना।।3।।

ॐ ह्रीं वृत्तपरिसंख्यानतपरूपशक्तितस्तपोभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घी-शक्कर-दधि-दूध-नमक अरु, तेल नाम षट्रस हैं।
कुछ या सबका त्याग करें जो, वही धरें यह तप हैं।।
यहाँ शक्तितस्तपो भावना-हेतू अर्घ्य चढ़ाना।
जिनने इसको प्राप्त किया है, उनको शीश झुकाना।।4।।

ॐ ह्रीं रसपरित्यागतपरूपशक्तितस्तपोभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विविक्तशय्यासन नामक तप, मुनिजन पालन करते।
गुरूसंघ में रहकर वे, विधिवत् शयनासन करते।।
यहाँ शक्तितस्तपो भावना-हेतू अर्घ्य चढ़ाना।
जिनने इसको प्राप्त किया है, उनको शीश झुकाना।।5।।

ॐ ह्रीं विविक्तशय्यासनतपरूपशक्तितस्तपोभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतापन योगादिक करके, तन को क्लेशित करना।
कायक्लेश तप कहलाता है, इसे शक्तिसम करना।।
यहाँ शक्तितस्तपो भावना-हेतू अर्घ्य चढ़ाना।
जिनने इसको प्राप्त किया है, उनको शीश झुकाना।।6।।

ॐ ह्रीं कायक्लेशतपरूपशक्तितस्तपोभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तरंग छह तप भेदों में, प्रायश्चित्त प्रथम है।
दोष शुद्धि हित गुरु से प्रायश्चित, ले करते पालन हैं।।
यहाँ शक्तितस्तपो भावना-हेतू अर्घ्य चढ़ाना।
जिनने इसको प्राप्त किया है, उनको शीश झुकाना।।7।।

ॐ ह्रीं प्रायश्चित्ततपरूपशक्तितस्तपोभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव शास्त्र गुरुओं की विनय, करना भी तप कहलाता।
इसका पालन करने वाला, सदा ऊर्ध्वगति पाता।।
यहाँ शक्तितस्तपो भावना-हेतू अर्घ्य चढ़ाना।
जिनने इसको प्राप्त किया है, उनको शीश झुकाना।।8।।

ॐ ह्रीं विनयतपरूपशक्तितस्तपोभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुओं की सेवा करना है, वैय्यावृत्ति तप माना।
जिनशास्त्रों में इस वैयावृत्ति, का गुण बहुत बखाना।।
यहाँ शक्तितस्तपो भावना-हेतू अर्घ्य चढ़ाना।
जिनने इसको प्राप्त किया है, उनको शीश झुकाना।।9।।

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्तितपरूपशक्तितस्तपोभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनआगम को पढ़ना और, पढ़ाना ही स्वाध्याय कहा।
पंचभेद युत इसको करके, ज्ञानमयी उपयोग रहा।।
यहाँ शक्तितस्तपो भावना-हेतू अर्घ्य चढ़ाना।
जिनने इसको प्राप्त किया है, उनको शीश झुकाना।।10।।

ॐ ह्रीं स्वाध्यायतपरूपशक्तितस्तपोभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तरंग बहिरंग परिग्रह, त्याग निजात्मा शुद्ध करो।
मुनि बनकर व्युत्सर्ग तपो-धारक बन स्वयंप्रबुद्ध बनो।।
यहाँ शक्तितस्तपो भावना-हेतू अर्घ्य चढ़ाना।
जिनने इसको प्राप्त किया है, उनको शीश झुकाना।।11।।

ॐ ह्रीं व्युत्सर्गतपरूपशक्तितस्तपोभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आर्तरौद्र दुर्ध्यान को तजकर, धर्मशुक्ल ध्यानी बनना।
ध्यान तपस्या कर भव्यात्मन्! शुद्धातमज्ञानी बनना।।
यहाँ शक्तितस्तपो भावना-हेतू अर्घ्य चढ़ाना।
जिनने इसको प्राप्त किया है, उनको शीश झुकाना।।12।।

ॐ ह्रीं ध्यानतपरूपशक्तितस्तपोभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य –

तर्ज-आओ बच्चों तुम्हें दिखाएँ.....

पूर्ण अर्घ्य ले करें अर्चना, सोलहकारण धाम की।
इसके माध्यम से कर लें हम, यात्रा सिद्धस्थान की।।
जय जय जैन धरम, बोलो जय जय जैन धरम-2।।टेक.।।
शक्ति के अनुसार तपस्या, करते हैं जो नर नारी।
फिर क्रमशः अभ्यास बढ़ाकर, वर सकते वे शिवनारी।।
इसी भावना हेतु जपें हम, माला तप के नाम की।
इसके माध्यम से कर लें हम, यात्रा सिद्धस्थान की।।
जय जय जैन धरम, बोलो जय जय जैनधरम।।1।।

ॐ ह्रीं द्वादशविधतपरूप शक्तितस्तपोभावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र – **ॐ ह्रीं शक्तितस्तपो भावनायै नमः।**

जयमाला

तर्ज-तीरथ करने चली सती.....

दीक्षा लेकर करूँ महातप, कब ऐसा दिन आएगा।
मेरा मन सोलह कारण की, तपो भावना भाएगा।।टेक.।।
ऋषभदेव ने सहस वर्ष तप, कर कैवल्यज्ञान पाया।
युग की आदि में इस धरती पर, धर्मतीर्थ को प्रगटाया।।
उनके पद चिन्हों पर चलकर, मन पावन बन जाएगा।
मन पावन बन जाएगा।।दीक्षा.....।।1।।
वीर प्रभू ने बारह वर्ष का, तप कर आत्मज्ञान पाया।
बाल ब्रह्मचारी बन जग को, अपना गौरव बतलाया।।
उनके पदचिन्हों पर चलकर, मन पावन बन जाएगा।
मन पावन बन जाएगा।।दीक्षा.....।।2।।
वीर प्रभू की परम्परा में, शांतिसागराचार्य हुए।
प्रथमाचार्य बीसवीं सदि के, तपोमूर्ति साकार हुए।।

उनके पदचिन्हों पर चलकर, मन पावन बन जाएगा,
मन पावन बन जाएगा।।3।।
वर्तमान के मुनि-आर्यिका, भी तपसाधन करते हैं।
मूलगुणों का पालन, रत्नत्रय आराधन करते हैं।।
उनके पदचिन्हों पर चलकर, मन पावन बन जाएगा।
मन पावन बन जाएगा।।4।।
इसी शक्तितस्तपोभावना, की जयमाला गाते हैं।
पूर्ण अर्घ्य 'चन्दनामती', हम तपस्वियों को चढ़ाते हैं।।
उनके पदचिन्हों पर चलकर, मन पावन बन जाएगा।
मन पावन बन जाएगा।।5।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्तपोभावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद –

जो रुचिपूर्वक सोलहकारण, भावना की पूजा करते हैं।
मन-वच-तन से इनको ध्याकर, निज आतम सुख में रमते हैं।।
तीर्थंकर के पद कमलों में, जो मानव इनको भाते हैं।
वे ही इक दिन 'चन्दनामती', तीर्थंकर पदवी पाते हैं।।

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।

(पूजा नं.-9)

साधुसमाधि भावना पूजा

–स्थापना (सोरठा) –

मुनियों को सुखकार, साधु समाधी भावना।
पूजन हेतू आज, करूँ उसी की थापना।।1।।

ॐ ह्रीं साधुसमाधिभावना! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं साधुसमाधिभावना! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं साधुसमाधिभावना! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक –

तर्ज-नंदीश्वर पूजा.....

ले स्वर्ण भृंग में नीर, जिनपद धार करूँ।
हो जाऊँ भवदधि तीर, मन संताप हरूँ।।
व्रतशील समन्वित साधु, का मैं यजन करूँ।
मिल जावे साधु समाधि, निजगुण सृजन करूँ।।1।।

ॐ ह्रीं साधुसमाधिभावनायै जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन कर्पूर सुगंध, घिस प्रभु पद चर्चूं।
मिल जावे आत्म सुगंध, भव आताप नशूँ।।
व्रतशील समन्वित साधु, का मैं यजन करूँ।
मिल जावे साधु समाधि, निजगुण सृजन करूँ।।2।।

ॐ ह्रीं साधुसमाधिभावनायै संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोतीसम तंदुल लाय, जिनपद में अर्पूं।
मुझे अक्षय पद मिल जाय, इस हेतु अर्चूं।।
व्रतशील समन्वित साधु, का मैं यजन करूँ।
मिल जावे साधु समाधि, निजगुण सृजन करूँ।।3।।

ॐ ह्रीं साधुसमाधिभावनायै अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

नाना विध पुष्प मंगाय, जिनवर पद अर्पूं।
मम कामव्यथा नश जाय, जिनवर गुण चर्चूं।।

व्रतशील समन्वित साधु, का मैं यजन करूँ।
मिल जावे साधु समाधि, निजगुण सृजन करूँ।।4।।

ॐ ह्रीं साधुसमाधिभावनायै कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नानाविध व्यंजन लाय, जिनवर को पूजूँ।
मम क्षुधारोग नश जाय, भवदुख से छूटूँ।।
व्रतशील समन्वित साधु, का मैं यजन करूँ।
मिल जावे साधु समाधि, निजगुण सृजन करूँ।।5।।

ॐ ह्रीं साधुसमाधिभावनायै क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कंचन का दीप जलाय, प्रभु आरति कर लूँ।
मम मोहतिमिर नश जाय, गुणभारति भर लूँ।।
व्रतशील समन्वित साधु, का मैं यजन करूँ।
मिल जावे साधु समाधि, निजगुण सृजन करूँ।।6।।

ॐ ह्रीं साधुसमाधिभावनायै मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाय, कर्म दहन कर लूँ।
निज आतम गुण को पाय, पाप शमन कर लूँ।।
व्रतशील समन्वित साधु, का मैं यजन करूँ।
मिल जावे साधु समाधि, निजगुण सृजन करूँ।।7।।

ॐ ह्रीं साधुसमाधिभावनायै अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर व आम्र अनार, फल का थाल लिया।
मिले मोक्ष महल का द्वार, ऐसा भाव किया।।
व्रतशील समन्वित साधु, का मैं यजन करूँ।
मिल जावे साधु समाधि, निजगुण सृजन करूँ।।8।।

ॐ ह्रीं साधुसमाधिभावनायै मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ आठों द्रव्य मंगाय, अर्घ्य बनाय लिया।
'चन्दनामती' प्रभु पाद, उसे चढ़ाय दिया।।
व्रतशील समन्वित साधु, का मैं यजन करूँ।
मिल जावे साधु समाधि, निजगुण सृजन करूँ।।9।।

ॐ ह्रीं साधुसमाधिभावनायै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – **शांतीधारा के लिए, जल का पात्र मंगाय।**
विश्वशांति का भाव ले, जिनपद देउं चढ़ाय।।10।।

शांतये शांतिधारा।

पुष्पांजलि के हेतु मैं, पुष्प सुगंधित लाय।
आतम गुण के हेतु मैं, जिनपद देउं चढ़ाय।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

(आठवें वलय में 5 अर्घ्य, 1 पूर्णार्घ्य)

*दोहा –***साधु समाधी भावना, को निज मन में ध्याय।**
रत्नत्रय आराधना, हेतू पुष्प चढ़ाय।।1।।

इति मण्डलस्योपरि अष्टमदले पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–चौबोल छंद –

पाँच भेद निर्ग्रन्थ दिगम्बर, मुनियों के माने जाते।
प्रथम पुलाक मुनि के कुछ, अतिचार गुणों में लग जाते।।
ऐसे गुरु में साधु समाधी, का शुभ भाव हृदय लाया।
अष्टद्रव्य की थाली लेकर, अर्घ्य चढ़ाने मैं आया।।1।।

ॐ ह्रीं पुलाकमुनि साधुसमाधिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँच भेद निर्ग्रंथ दिगम्बर, मुनियों के माने जाते।
दुतिय वकुश मुनि के अहार में, कुछ रति भाव भी आ जाते।।
ऐसे गुरु में साधु समाधी, का शुभ भाव हृदय लाया।
अष्टद्रव्य की थाली लेकर, अर्घ्य चढ़ाने मैं आया।।2।।

ॐ ह्रीं वकुशमुनि साधुसमाधिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँच भेद निर्ग्रंथ दिगम्बर, मुनियों के माने जाते।
प्रतिसेवना[1]-कषाय[2] द्विविध के, मुनि कुशील हैं कहलाते।।

1. जिनके उत्तर गुणों में कुछ अतिचार लग जाते हैं उन्हें ''प्रतिसेवना कुशील'' मुनि कहते हैं। 2. दशवें गुणस्थानवर्ती सूक्ष्ममोह के उदय से सहित मुनि को ''कषायकुशील'' कहते हैं।

ऐसे गुरु में साधु समाधी, का शुभ भाव हृदय लाया।
अष्टद्रव्य की थाली लेकर, अर्घ्य चढ़ाने मैं आया।।3।।

ॐ ह्रीं कुशीलमुनि साधुसमाधिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँच भेद निर्ग्रंथ दिगम्बर, मुनियों के माने जाते।
हैं निर्ग्रन्थ चतुर्थ उन्हीं के, मोहकर्म सब नश जाते।।
ऐसे गुरु में साधु समाधी, का शुभ भाव हृदय लाया।
अष्टद्रव्य की थाली लेकर, अर्घ्य चढ़ाने मैं आया।।4।।

ॐ ह्रीं निर्ग्रन्थमुनि साधुसमाधिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँच भेद निर्ग्रंथ दिगम्बर, मुनियों के माने जाते।
हैं स्नातक पंचम वे तो, केवलज्ञानी कहलाते।।
ऐसे गुरु में साधु समाधी, का शुभ भाव हृदय लाया।
अष्टद्रव्य की थाली लेकर, अर्घ्य चढ़ाने मैं आया।।5।।

ॐ ह्रीं स्नातकमुनि साधुसमाधिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य –

पाँच प्रकार दिगम्बर मुनि ही, शिवपथ साधक कहलाते।
ये व्यवहार चरित पालन कर निश्चयनय को अपनाते।।
इन सबको पूर्णार्घ्य चढ़ाकर, पद अनर्घ्य मैं पा जाऊँ।
साधु समाधि भावना भाकर, निज स्थिरता पा जाऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं पंचभेदयुतमुनि साधुसमाधिभावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र – **ॐ ह्रीं साधुसमाधिभावनायै नमः।**

जयमाला

दिगम्बर प्राकृतिक मुद्रा, विरागी की निशानी है।
कमण्डलु पिच्छि धारी मुनि की, अब जयमाल गानी है।।टेक.।।

दिशाएँ ही बनीं अम्बर, न तन पर वस्त्र ये डालें।
महाव्रत पाँच समिति और, गुप्ती तीन ये पालें।।

त्रयोदश विध चरित पालन, करें जिनवर की वाणी है।
कमण्डलु पिच्छिधारी मुनि की, अब जयमाल गानी है।।1।।

बिना बोले ही इनकी शान्त, छवि ऐसी बताती है।
मुक्तिकन्या वरण में यह ही, मुद्रा काम आती है।।
मोक्षपथ के पथिक जन को, यही वाणी सुनानी है।
कमण्डलु पिच्छिधारी मुनि की, अब जयमाल गानी है।।2।।

यदि मुनिव्रत न पल सकता, तो श्रावक धर्म मत भूलो।
देवगुरु शास्त्र की श्रद्धा, परम कर्तव्य मत भूलो।।
रहे मति सर्वदा अच्छी, यही ऋषियों की वाणी है।
कमण्डलु पिच्छिधारी मुनि की, अब जयमाल गानी है।।3।।

इन्हीं संतों के आतमसुख में, हम भी बन लें सहयोगी।
इसी साधु समाधी भावना, को भाते हैं योगी।।
शरण इन साधुओं की लें, यही शिवपथ निशानी है।
कमण्डलु पिच्छिधारी मुनि की, अब जयमाल गानी है।।4।।

लिया पूर्णार्घ्य मैंने 'चन्दना-मति'' भाव यह करके।
मुझे भी शक्ति मिल जावे, बसूँ मुक्ती में जा करके।।
तीन रत्नों को धारण कर, शुद्ध काया बनानी है।
कमण्डलु पिच्छिधारी मुनि की, अब जयमाल गानी है।।5।।

ॐ ह्रीं साधुसमाधिभावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद –

जो रुचिपूर्वक सोलहकारण, भावना की पूजा करते हैं।
मन-वच-तन से इनको ध्याकर, निज आतम सुख में रमते हैं।।
तीर्थंकर के पद कमलों में, जो मानव इनको भाते हैं।
वे ही इक दिन 'चन्दनामती', तीर्थंकर पदवी पाते हैं।।

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।

(पूजा नं.-10)

वैय्यावृत्त्य भावना पूजा

–स्थापना –

तर्ज-ऊँचे-ऊँचे शिखरों वाला है.....

सोलहकारण भावन में, नवमी भावना है।
रत्नत्रय आराधन में, उसकी साधना है।।टेक.।।

वैयावृत्ति नाम है इसका, प्रासुक सेवा काम है इसका।
आतमशक्ति बढ़ावन में, नवमी भावना है।।
सोलहकारण भावन में, नवमी भावना है।
रत्नत्रय आराधन में, उसकी साधना है।।1।।

इस भावना की पूजन हेतु मैं, आह्वानन स्थापन करूँ मैं।
तन की शक्ति बढ़ावन में, नवमी भावना है।।
सोलहकारण भावन में, नवमी भावना है।
रत्नत्रय आराधन में, उसकी साधना है।।2।।

ॐ ह्रीं वैयावृत्त्यकरण भावना! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं वैयावृत्त्यकरण भावना! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं वैयावृत्त्यकरण भावना! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक –

तर्ज-पार्श्वनाथ देव सेव आपकी.....

गंग नदि को नीर लाय, स्वर्ण भृंग में भरूँ।
श्री जिनेन्द्र के चरण में, तीन धार मैं करूँ।।
वैयावृत्ति भावना के, हेतु करूँ साधना।
गुरुचरण की सेवा करके, पूर्ण होगी कामना।।1।।

ॐ ह्रीं वैयावृत्तिभावनायै जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

काश्मीरि केशरादि, स्वर्ण पात्र में भरूँ।
श्री जिनेन्द्र के चरण में, चर्च ताप मैं हरूँ।।

वैयावृत्ति भावना के, हेतु करूँ साधना।
गुरुचरण की सेवा करके, पूर्ण होगी कामना।।2।।

ॐ ह्रीं वैयावृत्तिभावनायै संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ्र अक्षत धवल, स्वर्ण थाल में धरूँ।
पुंज को चढ़ायके, सौख्य शाश्वत भरूँ।।
वैयावृत्ति भावना के, हेतु करूँ साधना।
गुरुचरण की सेवा करके, पूर्ण होगी कामना।।3।।

ॐ ह्रीं वैयावृत्तिभावनायै अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प चुन चुन मंगाय, अंजली में भरूँ।
नाथ पाद में चढ़ाय, काम ध्वंसन करूँ।।
वैयावृत्ति भावना के, हेतु करूँ साधना।
गुरुचरण की सेवा करके, पूर्ण होगी कामना।।4।।

ॐ ह्रीं वैयावृत्तिभावनायै कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

रसमलाई पूरियाँ, बनाय थाल में भरूँ।
नाथ को चढ़ाय, क्षुध रोग नाशन करूँ।।
वैयावृत्ति भावना के, हेतु करूँ साधना।
गुरुचरण की सेवा करके, पूर्ण होगी कामना।।5।।

ॐ ह्रीं वैयावृत्तिभावनायै क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नदीप को जलाय, स्वर्णथाल में धरूँ।
प्रभु की आरती उतार, मोहनाशन करूँ।।
वैयावृत्ति भावना के, हेतु करूँ साधना।
गुरुचरण की सेवा करके, पूर्ण होगी कामना।।6।।

ॐ ह्रीं वैयावृत्तिभावनायै मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध चंदनादि मलय-गिरि धूप लाय के।
कर्मनाशन करूँ, अग्नि में जलाय के।।
वैयावृत्ति भावना के, हेतु करूँ साधना।
गुरुचरण की सेवा करके, पूर्ण होगी कामना।।7।।

ॐ ह्रीं वैयावृत्तिभावनायै अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आम अंगूर बादाम, फल लायके।
मोक्षफल की आश है, नाश को चढ़ायके।।
वैयावृत्ति भावना के, हेतु करूँ साधना।
गुरुचरण की सेवा करके, पूर्ण होगी कामना।।8।।

ॐ ह्रीं वैयावृत्तिभावनायै मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरगंध अक्षतादि, अष्टद्रव्य लायके।
''चन्दनामती'' अनर्घ्य-पद मिले चढ़ायके।।
वैयावृत्ति भावना के, हेतु करूँ साधना।
गुरुचरण की सेवा करके, पूर्ण होगी कामना।।9।।

ॐ ह्रीं वैयावृत्तिभावनायै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिधारा करूँ, शुद्ध जल मंगाय के।
विश्व में शांति हो, नाथ पद चढ़ायके।।
वैयावृत्ति भावना के, हेतु करूँ साधना।
गुरुचरण की सेवा करके, पूर्ण होगी कामना।।10।।

शांतये शांतिधारा।

भांति भांति के गुलाब, आदि पुष्प लायके।
नाथ पुष्पांजली , आप पद चढ़ायके।।
वैयावृत्ति भावना के, हेतु करूँ साधना।
गुरुचरण की सेवा करके, पूर्ण होगी कामना।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

(नवमें वलय में 10 अर्घ्य, 1 पूर्णार्घ्य)

–दोहा–

वैयावृत्ती भावना, को निज मन में ध्याय।
रत्नत्रय आराधना, हेतू पुष्प चढ़ाय।।1।।

इति मण्डलस्योपरि नवमदले पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–दोहा–

छत्तिस गुणयुत सूरि की, वैय्यावृत्ति सुखदाय।
तीर्थंकर पद प्राप्ति हित, अर्घ्य चढ़ाऊँ आय।।1।।

ॐ ह्रीं आचार्यवैयावृत्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण पचीस उपाध्याय के, उन सेवा सुखदाय।
तीर्थंकर पद प्राप्ति हित, अर्घ्य चढ़ाऊँ आय।।2।।

ॐ ह्रीं उपाध्यायवैयावृत्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुर्द्धर तप धारक मुनि, की सेवा सुखदाय।
तीर्थंकर पद प्राप्ति हित, अर्घ्य चढ़ाऊँ आय।।3।।

ॐ ह्रीं तपस्वीमुनिवैयावृत्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शैक्ष्य भेद वाले यती, की सेवा सुखदाय।
तीर्थंकर पद प्राप्ति हित, अर्घ्य चढ़ाऊँ आय।।4।।

ॐ ह्रीं शैक्ष्यमुनिवैयावृत्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रोगी भी हों साधु यदि, उन सेवा सुखदाय।
तीर्थंकर पद प्राप्ति हित, अर्घ्य चढ़ाऊँ आय।।5।।

ॐ ह्रीं ग्लानमुनिवैयावृत्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण वय ज्येष्ठ समूह मुनि, की सेवा सुखदाय।
तीर्थंकर पद प्राप्ति हित, अर्घ्य चढ़ाऊँ आय।।6।।

ॐ ह्रीं गणभेदयुतमुनिवैयावृत्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीक्षा विधि ज्ञाता मुनि, कुल सेवा सुखदाय।
तीर्थंकर पद प्राप्ति हित, अर्घ्य चढ़ाऊँ आय।।7।।

ॐ ह्रीं कुलभेदयुतमुनिवैयावृत्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चउविध संघ समूह की, वैयावृत्ति सुखदाय।
तीर्थंकर पद प्राप्ति हित, अर्घ्य चढ़ाऊँ आय।।8।।

ॐ ह्रीं चतुर्विधसंघवैयावृत्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुत ज्येष्ठ दीक्षित मुनि, की सेवा सुखदाय।
तीर्थंकर पद प्राप्ति हित, अर्घ्य चढ़ाऊँ आय।।9।।

ॐ ह्रीं साधुभेदयुतमुनिवैयावृत्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब मनहारि मनोज्ञ मुनि, की सेवा सुखदाय।
तीर्थंकर पद प्राप्ति हित, अर्घ्य चढ़ाऊँ आय।।10।।

ॐ ह्रीं मनोज्ञभेदयुतमुनिवैयावृत्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य (शंभु छंद) –

दश भेद सहित मुनियों की वैया-वृत्ति परम सुखदायी है।
हमने हे जिनवर! तभी सु वैया-वृत्ति भावना भायी है।।
पूर्णार्घ्य चढ़ाकर इसी भावना, की अर्चा हम करते हैं।
सोलहकारण की प्राप्ति हेतु, जिनगुण चर्चा हम करते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं दशभेदयुक्तमुनिवैयावृत्तिभावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र – **ॐ ह्रीं वैयावृत्तिभावनायै नमः।**

जयमाला

तर्ज-फूलों सा चेहरा तेरा.....

सार्थक हो जीवन मेरा, पाया जो वरदान है।
पुण्यकार्य कर सकूँ, भवसमुद्र तर सकूँ, मन में ये अरमान है।।टेक.।।

इस तन में है, एक चैतन्य आत्मा,
उसका ही सारा, चमत्कार है।
जिस दिन निकल जाय, तन से वो आत्मा,
रह जाता पुद्गल का, संसार है।।
नरजनम को पाके, आत्मतत्त्व ध्याके, पाना परममुक्ति का धाम है।
जड़ चेतन को समझूँ अलग, यह ज्ञानी की पहचान है।
पुण्यकार्य कर सकूँ, भवसमुद्र तर सकूँ, मन में ये अरमान है।।1।।

चारों गती में मानुषगती ही,
कहलाती सबसे उत्तम यहाँ।

क्योंकि उसी के द्वारा सभी जन,
करते हैं आतम चिन्तन यहाँ।।
सिद्ध जो बने हैं, सिद्ध जो बनेंगे, नरतन से ही पाते निजधाम हैं।
विषयों में फंसना नहीं, देते गुरू ज्ञान हैं।
पुण्यकार्य कर सकूँ, भवसमुद्र तर सकूँ, मन में ये अरमान हैं।।2।।
जिनवर की पूजा, गुरुओं की भक्ति,
स्वाध्याय करके संयम धरूँ।
शक्ती के अनुसार करके तपस्या,
दानी बनूँ कुछ नियम भी करूँ।।
''चन्दनामती'' ये, कर्म षट् कहे हैं, हो इनसे आतम का कल्याण है।
क्रम क्रम से पाना है फिर, संयम सकल धाम है।
पुण्यकार्य कर सकूँ, भवसमुद्र तर सकूँ, मन में ये अरमान हैं।।3।।

सोलह सुकारण की भावना में,
इक वैयावृत्ती की भावना है।
इस भावना को पूर्णार्घ्य अर्पित,
करके रतनत्रय को साधना है।।
अष्टद्रव्य लाके, अर्चना रचाके, पूजा करूँ तेरी भगवान मैं।
जय जय हो जय हो प्रभू, पाऊँ परम धाम मैं।
पुण्यकार्य कर सकूँ, भवसमुद्र तर सकूँ, मन में ये अरमान हैं।।4।।

ॐ ह्रीं वैयावृत्त्यभावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद –

जो रुचिपूर्वक सोलहकारण, भावना की पूजा करते हैं।
मन-वच-तन से इनको ध्याकर, निज आतम सुख में रमते हैं।।
तीर्थंकर के पद कमलों में जो, मानव इनको भाते हैं।
वे ही इक दिन 'चन्दनामती', तीर्थंकर पदवी पाते हैं।।

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।

(पूजा नं.-11)

अर्हद्भक्ति भावना पूजा

–स्थापना-अडिल्ल छंद –

चार घातिया कर्म जिन्हों के नश गये।
समवसरण के स्वामी अर्हत बन गये।।
उन अरिहंत प्रभू की भक्ती भावना।
पूजन हेतु उनकी कर लूँ थापना।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हद्भक्तिभावना! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं अर्हद्भक्तिभावना! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं अर्हद्भक्तिभावना! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक-चौपाई छंद –

पद्म सरोवर को जल लाय, जिनवर के पद पद्म चढ़ाय।
अर्हद्भक्ति भावना भाय, पूजन करूँ परम पद ध्याय।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हद्भक्तिभावनायै जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

काश्मीरी केशर घिस लाय, चर्चूं श्री जिनवर पद आय।
अर्हद्भक्ति भावना भाय, पूजन करूँ परम पद ध्याय।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हद्भक्तिभावनायै संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवलाक्षत मुट्ठी में लाय, पुंज धरूँ जिन सन्मुख आय।
अर्हद्भक्ति भावना भाय, पूजन करूँ परम पद ध्याय।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हद्भक्तिभावनायै अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हरसिंगार प्रसून मंगाय, जिन पद अर्पूं माल बनाय।
अर्हद्भक्ति भावना भाय, पूजन करूँ परम पद ध्याय।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हद्भक्तिभावनायै कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

बरफी पेड़ा आदि बनाय, पूजूँ प्रभु नैवेद्य चढ़ाय।
अर्हद्भक्ति भावना भाय, पूजन करूँ परम पद ध्याय।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हद्भक्तिभावनायै क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत दीपक का थाल सजाय, करूँ आरती जिनपद आय।
अर्हद्भक्ति भावना भाय, पूजन करूँ परम पद ध्याय।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हद्भक्तिभावनायै मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि की धूप बनाय, प्रभु सन्मुख अग्नी में जलाय।
अर्हद्भक्ति भावना भाय, पूजन करूँ परम पद ध्याय।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हद्भक्तिभावनायै अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

केला आम अनार मंगाय, फल से पूजूं जिनपद आय।
अर्हद्भक्ति भावना भाय, पूजन करूँ परम पद ध्याय।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हद्भक्तिभावनायै मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य 'चन्दनामती' बनाय, पद अनर्घ्य हित देउं चढ़ाय।
अर्हद्भक्ति भावना भाय, पूजन करूँ परम पद ध्याय।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हद्भक्तिभावनायै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णभृंग में जल भर लाय, शांतीधार करूँ सुखदाय।
अर्हद्भक्ति भावना भाय, पूजन करूँ परम पद ध्याय।।10।।

शांतये शांतिधारा।

उपवन से बहु पुष्प मंगाय, पुष्पांजलि कर लूँ सुखदाय।
अर्हद्भक्ति भावना भाय, पूजन करूँ परम पद ध्याय।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

(दशवें वलय में 12 अर्घ्य, 1 पूर्णार्घ्य)

–दोहा–

अर्हद्भक्ति सुभावना, को निज मन में ध्याय।
रत्नत्रय आराधना, हेतू पुष्प चढ़ाय।।1।।

इति मण्डलस्योपरि दशमदले पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–चौबोल छंद–

चार घातिया कर्म नाश कर, जो अरिहंत बना करते।
वे अठ प्रातिहार्य एवं, आनन्त्य चतुष्टय को वरते।।

उनमें प्रथम अशोक वृक्ष, भव्यों का शोक हरा करता।
ऐसे अरिहंतों की भक्ति, से संसार भ्रमण टरता।।1।।

ॐ ह्रीं अशोकवृक्षप्रातिहार्यसहित अर्हद्भक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार घातिया कर्म नाश कर, जो अरिहंत बना करते।
वे अठ प्रातिहार्य एवं, आनन्त्य चतुष्टय को वरते।।
उनमें दुतिय पुष्पवृष्टी का, प्रातिहार्य सुरभी करता।
ऐसे अरिहंतों की भक्ति, से संसार भ्रमण टरता।।2।।

ॐ ह्रीं पुष्पवृष्टिप्रातिहार्यसहित अर्हद्भक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार घातिया कर्म नाश कर, जो अरिहंत बना करते।
वे अठ प्रातिहार्य एवं, आनन्त्य चतुष्टय को वरते।।
उनमें तृतिय दिव्यध्वनि द्वारा, भव्यों का अघमल हरता।
ऐसे अरिहंतों की भक्ति, से संसार भ्रमण टरता।।3।।

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनिप्रातिहार्यसहित अर्हद्भक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार घातिया कर्म नाश कर, जो अरिहंत बना करते।
वे अठ प्रातिहार्य एवं, आनन्त्य चतुष्टय को वरते।।
उनमें चौथा प्रातिहार्य, चामर ढुरना शोभन लगता।
ऐसे अरिहंतों की भक्ती, से संसार भ्रमण टरता।।4।।

ॐ ह्रीं चामरप्रतिहार्यसहित अर्हद्भक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार घातिया कर्म नाश कर, जो अरिहंत बना करते।
वे अठ प्रातिहार्य एवं, आनन्त्य चतुष्टय को वरते।।
उनमें पंचम प्रातिहार्य, सिंहासन शोभे जिनवर का।
ऐसे अरिहंतों की भक्ती, से संसार भ्रमण टरता।।5।।

ॐ ह्रीं सिंहासनप्रातिहार्यसहित अर्हद्भक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार घातिया कर्म नाश कर, जो अरिहंत बना करते।
वे अठ प्रातिहार्य एवं, आनन्त्य चतुष्टय को वरते।।

उनमें प्रातिहार्य छट्ठा, भामण्डल शोभे जिनवर का।
ऐसे अरिहंतों की भक्ती, से संसार भ्रमण टरता।।6।।

ॐ ह्रीं भामण्डलप्रातिहार्यसहित अर्हद्भक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार घातिया कर्म नाश कर, जो अरिहंत बना करते।
वे अठ प्रातिहार्य एवं, आनन्त्य चतुष्टय को वरते।।
उनमें सप्तम प्रातिहार्य, दुन्दुभि बाजा मधुरिम स्वर का।
ऐसे अरिहंतों की भक्ती, से संसार भ्रमण टरता।।7।।

ॐ ह्रीं दुन्दुभिप्रातिहार्यसहित अर्हद्भक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार घातिया कर्म नाश कर, जो अरिहंत बना करते।
वे अठ प्रातिहार्य एवं, आनन्त्य चतुष्टय को वरते।।
उनमें अष्टम प्रातिहार्य, प्रभु पर शोभे छत्रत्रय का।
ऐसे अरिहंतों की भक्ती, से संसार भ्रमण टरता।।8।।

ॐ ह्रीं छत्रत्रयप्रातिहार्य अर्हद्भक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–शेर छंद –

चउ कर्म नाशने से, चार गुण प्रगट हुए।
उनमें प्रथम अनन्तज्ञान, युक्त प्रभु हुए।।
ऐसे प्रभू अरिहंत का, गुणगान मैं करूँ।
चरणों में अर्घ्य को चढ़ा, निजज्ञान को लहूँ।।9।।

ॐ ह्रीं अनन्तज्ञानसहित अर्हद्भक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब कर्म दर्शनावरण, विनाश कर दिया।
तब गुण अनन्तदर्शन, को प्राप्त कर लिया।।
ऐसे प्रभू अरिहंत का, गुणगान मैं करूँ।
चरणों में अर्घ्य को समर्घ्य, दर्श गुण वरूँ।।10।।

ॐ ह्रीं अनन्तदर्शनसहित अर्हद्भक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब कर्म मोहनीय का, विनाश कर दिया।
अविनाशी अरु अनन्तसुख को प्राप्त कर लिया।।

ऐसे प्रभू अरिहंत का, गुणगान मैं करूँ।
चरणों में अर्घ्य को चढ़ा, निजात्म सुख वरूँ।।11।।

ॐ ह्रीं अनन्तसुखसहित अर्हद्भक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब कर्म अन्तराय का, विनाश कर दिया।
तब गुण अनन्तवीर्य बल को, प्राप्त कर लिया।।
ऐसे प्रभू अरिहंत का, गुणगान मैं करूँ।
चरणों में अर्घ्य को चढ़ा, निजात्म बल वरूँ।।12।।

ॐ ह्रीं अनन्तबलसहितअर्हद्भक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य (चौबोल छंद) –

अरिहंत प्रभू के चार घातिया, कर्मों का नाशन होता।
उनके कारण चार गुणों का, उनमें प्रतिभासन होता।।
इसीलिए अरिहंत प्रभू की, भक्ती भविजन करते हैं।
हम पूर्णार्घ्य समर्पित कर, मनवाञ्छित फल वरते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं अष्टप्रातिहार्यानन्तचतुष्टयसहित अर्हद्भक्तिभावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र – **ॐ ह्रीं अर्हद्भक्तिभावनायै नमः।**

जयमाला

तर्ज-कभी कुण्डलपुर जाना है.....

प्रभू की पूजन करना है, प्रभू की भक्ति करना है, निजातम शक्ति भरना है,
मुझे मुक्तिश्री वरना है।।
प्रभु भक्ति गंगा में, अवगाहन करना है।
अरिहंत प्रभू की पूजन में, जयमाला पढ़ना है।।प्रभू की पूजा.....।।टेक.।।
जनम जनम के पुण्य कर्म का, फल अरिहंत अवस्था।
समवसरण लक्ष्मी को पाते, यही अनादि व्यवस्था..... यही अनादि।
उस समवसरण श्री का, शत वन्दन करना है।
जिनवर के दर्शन करके, भवसागर तरना है।। प्रभू की पूजा करना है.....।।1।।

कितनी सतियों ने प्रभु के, दर्शन से पाप नशाए।
जिनके अतिशय से जलती, अग्नि भी जल बन जाए। अग्नि भी....
सीता चन्दनबाला का, इतिहास बताता है।
भक्तिरस तो माँ ज्ञानमती की, जीवन गाथा है।।प्रभू की पूजा करना है.....।।2।।
जिसने भी अरिहंत प्रभू को, हृदयकमल में ध्याया।
वीतराग परमातम पद में, लीन परमसुख पाया।। लीन परमपद....
निज ध्यान की धारा में, अवगाहन करना है।
''चन्दनामती'' उसके पहले, जिनभक्ती करना है।।प्रभू की पूजा करना है...।।3।।
सोलहकारण में अरिहंत की, भक्ति भावना आई।
उसकी पूजन करके मैंने, यह जयमाला गाई।।....यह जयमाला गाई।
जयमाल के माध्यम से, गुणगान उचरना है।
पूर्णार्घ्य समर्पित करके, प्रभु पद वंदन करना है।।प्रभू की पूजा करना है...।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हद्भक्तिभावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद –

जो रुचिपूर्वक सोलहकारण, भावना की पूजा करते हैं।
मन-वच-तन से इनको ध्याकर, निज आतम सुख में रमते हैं।।
तीर्थंकर के पद कमलों में जो, मानव इनको भाते हैं।
वे ही इक दिन 'चन्दनामती', तीर्थंकर पदवी पाते हैं।।

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।

(पूजा नं.-12)

आचार्यभक्ति भावना पूजा

–स्थापना-अडिल्ल छंद –

सोलहकारण में ग्यारहवीं भावना।
श्री आचार्यभक्ति नामक है भावना।।
उसकी पूजन हेतु करूँ स्थापना।
मन पावन हेतू करलूँ मैं साधना।।1।।

ॐ ह्रीं आचार्यभक्तिभावना! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं आचार्यभक्तिभावना! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं आचार्यभक्तिभावना! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक –

तर्ज –बाबा! हम तो आए.....

गुरुवर! हम तो आए तेरे द्वार पे, गुरुवर तेरे द्वार पे, तेरी हम पे.....
तेरी हम पे नजर कब होगी।।टेक.।।
प्रासुक नीर कलश में भरकर, त्रयधारा पद में डालूँ।
जन्म मृत्यु का नाश करूँ सब, कर्म मलों को धो डालूँ।।
गुरुवर! हम तो आए.....।।1।।

ॐ ह्रीं आचार्यभक्तिभावनायै जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुवर! हम तो आए तेरे द्वार पे, गुरुवर तेरे द्वार पे, तेरी हम पे.....
तेरी हम पे नजर कब होगी।।टेक.।।
केशरचंदन युत घिस करके, जिनपद में चर्चन कर लूँ।
भव आताप विनाशन करके, आत्म सुगंधी को भर लूँ।।
गुरुवर! हम तो आए.....।।2।।

ॐ ह्रीं आचार्यभक्तिभावनायै संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुवर! हम तो आए तेरे द्वार पे, गुरुवर तेरे द्वार पे, तेरी हम पे.....
तेरी हम पे नजर कब होगी।।टेक.।।

मोती सम अक्षत ले करके, जिनवर की पूजन कर लूँ।
अक्षय पद मिल जाय मुझे, गुरुपद का अर्चन कर लूँ।।
गुरुवर! हम तो आए.....।।3।।

ॐ ह्रीं आचार्यभक्तिभावनायै अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुवर! हम तो आए तेरे द्वार पे, गुरुवर तेरे द्वार पे, तेरी हम पे.....
तेरी हम पे नजर कब होगी।।टेक.।।

कल्पवृक्ष के पुष्प सुगंधित, ले करके अर्चना करूँ।
कामबाण विध्वंसन हेतू, गुरुपद में वन्दना करूँ।।
गुरुवर! हम तो आए.....।।4।।

ॐ ह्रीं आचार्यभक्तिभावनायै कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुवर! हम तो आए तेरे द्वार पे, गुरुवर तेरे द्वार पे, तेरी हम पे.....
तेरी हम पे नजर कब होगी।।टेक.।।

षट्रस के नैवेद्य बनाकर, पूजन में अर्पण कर लूँ।
क्षुधारोग के नाशन हेतु, श्री गुरु को वंदन कर लूँ।।
गुरुवर! हम तो आए.....।।5।।

ॐ ह्रीं आचार्यभक्तिभावनायै क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुवर! हम तो आए तेरे द्वार पे, गुरुवर तेरे द्वार पे, तेरी हम पे.....
तेरी हम पे नजर कब होगी।।टेक.।।

जगमग जगमग दीप जलाकर, श्री गुरु की आरति कर लूँ।
मोहकर्म का विध्वंसन कर, भव भव का आरत हर लूँ।।
गुरुवर! हम तो आए.....।।6।।

ॐ ह्रीं आचार्यभक्तिभावनायै मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुवर! हम तो आए तेरे द्वार पे, गुरुवर तेरे द्वार पे, तेरी हम पे.....
तेरी हम पे नजर कब होगी।।टेक.।।

गंध सुगंधित धूप बनाकर, अग्नी घट में दहन करूँ।
अष्ट कर्म विध्वंस कराकर, आतमगुण में मगन रहूँ।।
गुरुवर! हम तो आए.....।।7।।

ॐ ह्रीं आचार्यभक्तिभावनायै अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुवर! हम तो आए तेरे द्वार पे, गुरुवर तेरे द्वार पे, तेरी हम पे.....
तेरी हम पे नजर कब होगी।।टेक.।।

अनंनास अंगूर फलों को, पूजन में अर्पण कर दूँ।
मोक्ष महाफल प्राप्त करन को, गुरुपद में वंदन कर लूँ।।
गुरुवर! हम तो आए.....।।8।।

ॐ ह्रीं आचार्यभक्तिभावनायै मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुवर! हम तो आए तेरे द्वार पे, गुरुवर तेरे द्वार पे, तेरी हम पे.....
तेरी हम पे नजर कब होगी।।टेक.।।

अर्घ्य थाल ''चन्दनामती'', ले करके मैं अर्चना करूँ।
पद अनर्घ्य की प्राप्ती हेतू, गुरुपद में वंदना करूँ।।
गुरुवर! हम तो आए.....।।9।।

ॐ ह्रीं आचार्यभक्तिभावनायै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

शांतीधारा के लिए, निर्मल जल भर लाय।
आतमशांति के लिए, गुरु पूजन सुखदाय।।10।।

शांतये शांतिधारा।

पुष्पांजलि के हेतु मैं, पुष्प सुगंधित लाय।
आतमगुण के हेतु है, गुरुपूजन सुखदाय।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

(ग्यारहवें वलय में 36 अर्घ्य, 1 पूर्णार्घ्य)

–दोहा–

छत्तिस गुण युत सूरि की, भक्ति भावना भाय।
रत्नत्रय आराधना, हेतू पुष्प चढ़ाय।।

इति मण्डलस्योपरि एकादशदले पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

तर्ज-हे वीर तुम्हारे.....

सच्चे गुरुओं के चरणों में, हम सादर शीश झुकाते हैं।
आचार्य भक्तिपूर्वक गुरु को, हम मन से अर्घ्य चढ़ाते हैं।।टेक.।।
बारह तप करके निज तन को, जो कुन्दन सम कर लेते हैं।
उनमें पहले अनशन तप से, निज शक्ति प्रगट कर लेते हैं।।
उन अनशन तप युत गुरुवर को, हम हृदय कमल में ध्याते हैं।
आचार्यभक्तिपूर्वक गुरु को, हम मन से अर्घ्य चढ़ाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं अनशनतपयुतआचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सच्चे गुरुओं के चरणों में, हम सादर शीश झुकाते हैं।
आचार्य भक्तिपूर्वक गुरु को, हम मन से अर्घ्य चढ़ाते हैं।।टेक.।।
बारह तप करके निज तन को, जो कुन्दन सम कर लेते हैं।
उनमें द्वितीय अवमौदर तप से, शक्ति प्रगट कर लेते हैं।।
उन अवमौदर्य तपस्वी को, हम हृदय कमल में ध्याते हैं।
आचार्यभक्तिपूर्वक गुरु को, हम मन से अर्घ्य चढ़ाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं अवमौदर्यतपयुतआचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सच्चे गुरुओं के चरणों में, हम सादर शीश झुकाते हैं।
आचार्य भक्तिपूर्वक गुरु को, हम मन से अर्घ्य चढ़ाते हैं।।टेक.।।
बारह तप करके निज तन को, जो कुन्दन सम कर लेते हैं।
उनमें तृतीय व्रतपरिसंख्या से, शक्ति प्रगट कर लेते हैं।।
उन व्रतपरिसंख्या युत गुरु को, हम हृदय कमल में ध्याते हैं।
आचार्यभक्तिपूर्वक गुरु को, हम मन से अर्घ्य चढ़ाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं व्रतपरिसंख्यानतपयुतआचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सच्चे गुरुओं के चरणों में, हम सादर शीश झुकाते हैं।
आचार्य भक्तिपूर्वक गुरु को, हम मन से अर्घ्य चढ़ाते हैं।।टेक.।।
बारह तप करके निज तन को, जो कुन्दन सम कर लेते हैं।
उनमें चतुर्थ रस परित्याग कर, शक्ति प्रगट कर लेते हैं।।

उन रसत्यागी तपयुत गुरु को, हम हृदय कमल में ध्याते हैं।
आचार्यभक्तिपूर्वक गुरु को, हम मन से अर्घ्य चढ़ाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं रसपरित्यागतपयुतआचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सच्चे गुरुओं के चरणों में, हम सादर शीश झुकाते हैं।
आचार्य भक्तिपूर्वक गुरु को, हम मन से अर्घ्य चढ़ाते हैं।।टेक.।।
बारह तप करके निज तन को, जो कुन्दन सम कर लेते हैं।
उनमें विविक्तशय्यासन तप से, शक्ति प्रगट कर लेते हैं।।
उन विविक्तशय्यासन युत को, हम हृदय कमल में ध्याते हैं।
आचार्यभक्तिपूर्वक गुरु को, हम मन से अर्घ्य चढ़ाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं विविक्तशय्यासनतपयुतआचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सच्चे गुरुओं के चरणों में, हम सादर शीश झुकाते हैं।
आचार्य भक्तिपूर्वक गुरु को, हम मन से अर्घ्य चढ़ाते हैं।।टेक.।।
बारह तप करके निज तन को, जो कुन्दन सम कर लेते हैं।
उनमें छट्ठा तप कायक्लेश कर, शक्ति प्रगट कर लेते हैं।।
उन कायक्लेश तप युत गुरु को, हम हृदय कमल में ध्याते हैं।
आचार्यभक्तिपूर्वक गुरु को, हम मन से अर्घ्य चढ़ाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं कायक्लेशतपयुतआचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–शेर छंद–

इन बाह्य तप के साथ, अन्तरंग तप को भी।
पालन करें स्वयं तथा, कराते सबको भी।।
श्री सूरि प्रायश्चित्त, तप की साधना करें।
अतएव हम आचार्यभक्ति, भावना करें।।7।।

ॐ ह्रीं प्रायश्चित्ततपयुतआचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनके हृदय में विनयगुण, भण्डार भरा है।
उनने ही अन्तरंग तप का, सार गहा है।।
आचार्यदेव उन्हीं की, मैं अर्चना करूँ।
उनके चरण में बार-बार, वन्दना करूँ।।8।।

ॐ ह्रीं विनयतपयुतआचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो वैयावृत्ति तप की, सदा साधना करते।
अपने सभी शिष्यों में, तप की भावना भरते।।
इस तप सहित आचार्य की, मैं वंदना करूँ।
चरणों में अर्घ्य को चढ़ाके, अर्चना करूँ।।9।।

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्त्यतपयुतआचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वाध्याय तप से ज्ञान का, भण्डार जो भरते।
आचार्यदेव वे जगत, उद्धार हैं करते।।
इस तप सहित आचार्य की, मैं वंदना करूँ।
चरणों में अर्घ्य को चढ़ाके, अर्चना करूँ।।10।।

ॐ ह्रीं स्वाध्यायतपयुतआचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन से ममत्व छोड़ जो, व्युत्सर्ग तप करें।
आचार्यदेव वे सभी, शिष्यों को नत करें।।
इस तप सहित आचार्य की, मैं वंदना करूँ।
चरणों में अर्घ्य को चढ़ाके, अर्चना करूँ।।11।।

ॐ ह्रीं व्युत्सर्गतपयुतआचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम मगन हो करके ध्यान, तप को जो करें।
एकाग्रपरिणती से आत्म-लक्ष्य को वरें।।
इस तप सहित आचार्य की, मैं वंदना करूँ।
चरणों में अर्घ्य को चढ़ाके, अर्चना करूँ।।12।।

ॐ ह्रीं ध्यानतपयुतआचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

दश धर्मों में है क्षमा, प्रथम धर्म विख्यात।
इस गुणयुत आचार्य का, अर्चन है सुखकाज।।13।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमाधर्मसहित आचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशधर्मों में है दुतिय, मार्दव धर्म महान।
इससे युत आचार्य को, अर्घ्य चढ़ाऊँ आन।।14।।

ॐ ह्रीं उत्तममार्दवधर्मसहित आचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशधर्मों में है तृतिय, आर्जव धर्म महान।
इससे युत आचार्य को, अर्घ्य चढ़ाऊँ आन।।15।।

ॐ ह्रीं उत्तमआर्जवधर्मसहित आचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम शौच धरम कहा, चौथा धर्म महान।
इससे युत आचार्य को, अर्घ्य चढ़ाऊँ आन।।16।।

ॐ ह्रीं उत्तमशौचधर्मसहित आचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशधर्मों में पाँचवाँ, उत्तम सत्य महान।
इससे युत आचार्य को, अर्घ्य चढ़ाऊँ आन।।17।।

ॐ ह्रीं उत्तमसत्यधर्मसहित आचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशधर्मों में है छठा, संयम धर्म महान।
इससे युत आचार्य को, अर्घ्य चढ़ाऊँ आन।।18।।

ॐ ह्रीं उत्तमसंयमधर्मसहित आचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशधर्मों में सातवाँ, उत्तम तपो महान।
इससे युत आचार्य को, अर्घ्य चढ़ाऊँ आन।।19।।

ॐ ह्रीं उत्तमतपधर्मसहित आचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशधर्मों में आठवाँ, उत्तम त्याग महान।
इससे युत आचार्य को, अर्घ्य चढ़ाऊँ आन।।20।।

ॐ ह्रीं उत्तमत्यागधर्मसहित आचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नवमां आकिंचन्य है, परिग्रहत्याग प्रधान।
इससे युत आचार्य को, अर्घ्य चढ़ाऊँ आन।।21।।

ॐ ह्रीं उत्तमआकिंचन्यधर्मसहित आचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्मचर्य दशवाँ धरम, सबका मूल प्रधान।
इससे युत आचार्य को, अर्घ्य चढ़ाऊँ आन।।22।।

ॐ ह्रीं उत्तमब्रह्मचर्यधर्मसहित आचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–नरेन्द्र छंद –

षट् आवश्यक में सामायिक, पहला आवश्यक है।
तीन काल में देववंदना, करना सामायिक है।।
इस आवश्यक का पालन, आचार्य स्वयं करते हैं।
अर्घ्य समर्पण करके हम, उनको वंदन करते हैं।।23।।

ॐ ह्रीं सामायिक आवश्यकसहित आचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षट् आवश्यक में द्वितीय, स्तव आवश्यक माना।
चौबिस जिनवर स्तुति इसमें, पढ़ना और पढ़ाना।।
इस आवश्यक का पालन, आचार्य स्वयं करते हैं।
अर्घ्य समर्पण करके हम, उनको वंदन करते हैं।।24।।

ॐ ह्रीं स्तव आवश्यकसहित आचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्आवश्यक में तृतीय, वंदना नाम आवश्यक।
किसी एक तीर्थंकर की, स्तुति इसमें आवश्यक।।
इस आवश्यक का पालन, आचार्य स्वयं करते हैं।
अर्घ्य समर्पण करके हम, उनको वंदन करते हैं।।25।।

ॐ ह्रीं वंदनाआवश्यकसहित आचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रतिक्रमण नामक चतुर्थ, आवश्यक कहा गया है।
प्रतिदिन के दोषों को हटाने, हेतू इसे कहा है।।
इस आवश्यक का पालन, आचार्य स्वयं करते हैं।
अर्घ्य समर्पण करके हम, उनको वंदन करते हैं।।26।।

ॐ ह्रीं प्रतिक्रमणआवश्यकसहित आचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचम प्रत्याख्यान नाम का, आवश्यक होता है।
मन वच तन से पाप का इसमें, परित्याग होता है।।
इस आवश्यक का पालन, आचार्य स्वयं करते हैं।
अर्घ्य समर्पण करके हम, उनको वंदन करते हैं।।27।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान आवश्यकसहित आचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

कायोत्सर्ग नामक छट्ठा, आवश्यक जो पालें।
काया से निर्मम होकर, वे पापकर्म को टालें।।
इस आवश्यक का पालन, आचार्य स्वयं करते हैं।
अर्घ्य समर्पण करके हम, उनको वंदन करते हैं।।28।।

ॐ ह्रीं कायोत्सर्ग आवश्यकसहित आचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

–स्रग्विणी छंद –

ज्ञान आचार को जो सदा पालते, पंच ज्ञानों को क्रमशः वही धारते।
ऐसे आचार्य परमेष्ठि को मैं जजूँ, अर्घ्य अर्पण करूँ स्वात्मसुख को भजूँ।।29।।

ॐ ह्रीं ज्ञानाचारसहितआचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शनाचार पच्चीस दोषों रहित, पालकर बनते जो सर्वगुण से सहित।
ऐसे आचार्य परमेष्ठि को मैं जजूँ, अर्घ्य अर्पण करूँ स्वात्मसुख को भजूँ।।30।।

ॐ ह्रीं दर्शनाचारसहितआचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तेरहों विध जो चारित्र पालन करें, वे ही चारित्र आचारि गुरुवर कहे।
ऐसे आचार्य परमेष्ठि को मैं जजूँ, अर्घ्य अर्पण करूँ स्वात्मसुख को भजूँ।।31।।

ॐ ह्रीं चारित्राचारसहितआचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाह्य अन्तर तपाचार जो पालते, कर्मपर्वत को कर चूर शिव पावते।
ऐसे आचार्य परमेष्ठि को मैं जजूँ, अर्घ्य अर्पण करूँ स्वात्मसुख को भजूँ।।32।।

ॐ ह्रीं तपाचारसहितआचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मबल को प्रगट कर करें साधना, जो गुरु वीर्याचारी उन्हें मानना।
ऐसे आचार्य परमेष्ठि को मैं जजूँ, अर्घ्य अर्पण करूँ स्वात्मसुख को भजूँ।।33।।

ॐ ह्रीं वीर्याचारसहितआचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा छंद –

मनगुप्ती को पाल, जो मन को वश में करें।
वे आचार्य प्रधान, उनकी भक्ती दुख हरे।।34।।

ॐ ह्रीं मनोगुप्तिसहितआचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनगुप्ति को पाल, जिह्वा इन्द्रिय वश करें।
वे आचार्य प्रधान, उनकी भक्ती दुख हरे।।35।।

ॐ ह्रीं वचनगुप्तिसहितआचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कायगुप्ति को पाल, तन चेष्टा को वश करें।
वे आचार्य प्रधान, उनकी भक्ती दुख हरे।।36।।

ॐ ह्रीं कायगुप्तिसहितआचार्यभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा –

छत्तिस गुण युत सूरि की, भक्ति करूँ मन लाय।
मैं पूर्णार्घ्य चढ़ाय के, पाऊँ सुख अधिकाय।।1।।

ॐ ह्रीं षट्त्रिंशत् गुणसहित आचार्यभक्तिभावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र – **ॐ ह्रीं आचार्यभक्तिभावनायै नमः।**

जयमाला

तर्ज –हे वीर तुम्हारे द्वारे पर.....

हे गुरुवर! तेरी काया ही, तेरा अन्तर दरशाती है।
यह नग्न दिगम्बर मुद्रा ही, प्राकृतिक रूप दरशाती है।।टेक.।।

बिन बोले ही इस काया से, मुक्ती का पथ बतलाते हो।
निज वीतराग छवि के द्वारा, आत्मानुभूति झलकाते हो।।
तव रत्नत्रय की आभा ही, सबको शिवपथ बतलाती है।
यह नग्न दिगम्बर मुद्रा ही, प्राकृतिक रूप दरशाती है।।1।।

तेरे सम्मुख आकर ध्याता, जब ध्यानमग्न हो जाता है।
जग के संकल्प विकल्पों से, तब मुक्त स्वयं हो जाता है।।
गुरुचरणों में आकर भक्तों को, परमशांति मिल जाती है।
यह नग्न दिगम्बर मुद्रा ही, प्राकृतिक रूप दरशाती है।।2।।

दिखते हैं जग में रूप बहुत, पर तुझसा रूप नहीं मिलता।
जिनवर के लघुनन्दन मुनिवर को लखकर आत्मकमल खिलता।

कलियुग में तेरी छवि में ही, भगवान की छवि दिख जाती है।
यह नग्न दिगम्बर मुद्रा ही, प्राकृतिक रूप दरशाती है।।3।।

मुनियों में प्रमुख आचार्यदेव, छत्तिसगुण धारक होते हैं।
कर संघ चतुर्विधसंचालन, सबके ही नायक होते हैं।।
इनकी भक्ती ही भक्तों को, क्रमशः शिवपथ दिलवाती है।
यह नग्न दिगम्बर मुद्रा ही, प्राकृतिक रूप दरशाती है।।4।।

सोलह कारण में ग्यारहवीं, भावना की यह जयमाला है।
पूर्णार्घ्य थाल लेकर मैंने, गाई गुरु की गुणमाला है।।
''चन्दनामती'' गुरुभक्ती ही, प्रभु के सम्मुख पहुँचाती है।
यह नग्न दिगम्बर मुद्रा ही, प्राकृतिक रूप दरशाती है।।5।।

ॐ ह्रीं आचार्यभक्तिभावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद –

जो रुचिपूर्वक सोलहकारण, भावना की पूजा करते हैं।
मन-वच-तन से इनको ध्याकर, निज आतम सुख में रमते हैं।।
तीर्थंकर के पद कमलों में जो, मानव इनको भाते हैं।
वे ही इक दिन 'चन्दनामती', तीर्थंकर पदवी पाते हैं।।

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।

(पूजा नं.-13)

बहुश्रुतभक्ति भावना पूजा

–स्थापना-अडिल्ल छंद –

सोलहकारण में बारहवीं भावना।
उसको भाकर करलूँ आतम साधना।।
अंगपूर्वमय श्रुतप्राप्ती की कामना।
पूजन करने हेतु करूँ मैं थापना।।1।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्तिभावना! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्तिभावना! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्तिभावना! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक –

तर्ज-जिन्दगी इक सफर है सुहाना.....

हे प्रभो! मैं भावना ये भाऊँ।
तेरे चरणों में ही रम जाऊँ।।
जय हो जय हो जय हो जय, जय हो जय हो जय हो जय...2।।टेक.।।
सोलहकारण भावनाएँ हैं।
उनमें बहुश्रुत भावना जो है।।
उसकी पूजा में नीर चढ़ाऊँ।
तेरे चरणों में ही रम जाऊँ।।
जय हो जय हो जय हो जय, जय हो जय हो जय हो जय।।1।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्तिभावनायै जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे प्रभो! मैं भावना ये भाऊँ।
तेरे चरणों में ही रम जाऊँ।।
जय हो जय हो जय हो जय, जय हो जय हो जय हो जय...2।।टेक.।।
सोलहकारण भावनाएँ हैं।
उनमें बहुश्रुत भावना जो है।।

उसकी पूजा में चंदन चढ़ाऊँ।
तेरे चरणों में ही रम जाऊँ।।
जय हो जय हो जय हो जय, जय हो जय हो जय हो जय।।2।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्तिभावनायै संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हे प्रभो! मैं भावना ये भाऊँ।
तेरे चरणों में ही रम जाऊँ।।
जय हो जय हो जय हो जय, जय हो जय हो जय हो जय...2।।टेक.।।
सोलहकारण भावनाएँ हैं।
उनमें बहुश्रुत भावना जो है।।
उसकी पूजा में अक्षत चढ़ाऊँ।
तेरे चरणों में ही रम जाऊँ।।
जय हो जय हो जय हो जय, जय हो जय हो जय हो जय।।3।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्तिभावनायै अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हे प्रभो! मैं भावना ये भाऊँ।
तेरे चरणों में ही रम जाऊँ।।
जय हो जय हो जय हो जय, जय हो जय हो जय हो जय...2।।टेक.।।
सोलहकारण भावनाएँ हैं।
उनमें बहुश्रुत भावना जो है।।
उसकी पूजा में पुष्प चढ़ाऊँ।
तेरे चरणों में ही रम जाऊँ।।
जय हो जय हो जय हो जय, जय हो जय हो जय हो जय।।4।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्तिभावनायै कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हे प्रभो! मैं भावना ये भाऊँ।
तेरे चरणों में ही रम जाऊँ।।
जय हो जय हो जय हो जय, जय हो जय हो जय हो जय...2।।टेक.।।
सोलहकारण भावनाएँ हैं।
उनमें बहुश्रुत भावना जो है।।

उसकी पूजा में नैवेद्य लाऊँ।
तेरे चरणों में ही रम जाऊँ।।
जय हो जय हो जय हो जय, जय हो जय हो जय हो जय।।5।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्तिभावनायै क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे प्रभो! मैं भावना ये भाऊँ।
तेरे चरणों में ही रम जाऊँ।।
जय हो जय हो जय हो जय, जय हो जय हो जय हो जय...2।।टेक.।।
सोलहकारण भावनाएँ हैं।
उनमें बहुश्रुत भावना जो है।।
उसकी पूजा में दीप जलाऊँ।
तेरे चरणों में ही रम जाऊँ।।
जय हो जय हो जय हो जय, जय हो जय हो जय हो जय।।6।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्तिभावनायै मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हे प्रभो! मैं भावना ये भाऊँ।
तेरे चरणों में ही रम जाऊँ।।
जय हो जय हो जय हो जय, जय हो जय हो जय हो जय...2।।टेक.।।
सोलहकारण भावनाएँ हैं।
उनमें बहुश्रुत भावना जो है।।
उसकी पूजा में धूप जलाऊँ।
तेरे चरणों में ही रम जाऊँ।।
जय हो जय हो जय हो जय, जय हो जय हो जय हो जय।।7।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्तिभावनायै अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हे प्रभो! मैं भावना ये भाऊँ।
तेरे चरणों में ही रम जाऊँ।।
जय हो जय हो जय हो जय, जय हो जय हो जय हो जय...2।।टेक.।।
सोलहकारण भावनाएँ हैं।
उनमें बहुश्रुत भावना जो है।।

उसकी पूजन में फल को चढ़ाऊँ।
तेरे चरणों में ही रम जाऊँ।।
जय हो जय हो जय हो जय, जय हो जय हो जय हो जय।।8।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्तिभावनायै मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे प्रभो! मैं भावना ये भाऊँ।
तेरे चरणों में ही रम जाऊँ।।
जय हो जय हो जय हो जय, जय हो जय हो जय हो जय...2।।टेक.।।
सोलहकारण भावनाएँ हैं।
उनमें बहुश्रुत भावना जो है।।
उसकी पूजन में अर्घ्य चढ़ाऊँ।
तेरे चरणों में ही रम जाऊँ।।
जय हो जय हो जय हो जय, जय हो जय हो जय हो जय।।9।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्तिभावनायै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे प्रभो! मैं भावना ये भाऊँ।
तेरे चरणों में ही रम जाऊँ।।
जय हो जय हो जय हो जय, जय हो जय हो जय हो जय...2।।टेक.।।
सोलहकारण भावनाएँ हैं।
उनमें बहुश्रुत भावना जो है।।
पूजा करके शांतिधार कराऊँ।
विश्वशांति की भावना भाऊँ।।
जय हो जय हो जय हो जय, जय हो जय हो जय हो जय।।11।।

शांतये शांतिधारा।

हे प्रभो! मैं भावना ये भाऊँ।
तेरे चरणों में ही रम जाऊँ।।
जय हो जय हो जय हो जय, जय हो जय हो जय हो जय...2।।टेक.।।
सोलहकारण भावनाएँ हैं।
उनमें बहुश्रुत भावना जो है।।

पूजा करके पुष्पांजली चढ़ाऊँ।
गुण पुष्पों की सुरभी पाऊँ।।
जय हो जय हो जय हो जय, जय हो जय हो जय हो जय।।12।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

(बारहवें वलय में 25 अर्घ्य, 1 पूर्णार्घ्य)

दोहा – **बहुश्रुत भक्ती भावना, को निज मन में ध्याय।**
रत्नत्रय आराधना, हेतू पुष्प चढ़ाय।।1।।

इति मण्डलस्योपरि द्वादशदले पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अंगरूप श्रुतभेद में, पहला आचारांग।
बहुश्रुतभक्ती हेतु मैं, अर्घ्य चढ़ाऊँ आन।।1।।

ॐ ह्रीं आचारांगसहित बहुश्रुतभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगरूप श्रुतभेद में, दूजा सूत्रकृतांग।
बहुश्रुतभक्ती हेतु मैं, अर्घ्य चढ़ाऊँ आन।।2।।

ॐ ह्रीं सूत्रकृतांगसहित बहुश्रुतभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगरूप श्रुतभेद में, तीजा स्थानांग।
बहुश्रुतभक्ती हेतु मैं, अर्घ्य चढ़ाऊँ आन।।3।।

ॐ ह्रीं स्थानांगसहित बहुश्रुतभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगरूप श्रुतभेद में, चौथा समवायांग।
बहुश्रुतभक्ती हेतु मैं, अर्घ्य चढ़ाऊँ आन।।4।।

ॐ ह्रीं समवायांगसहित बहुश्रुतभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगरूप श्रुतभेद में, व्याख्याप्रज्ञप्त्यंग।
बहुश्रुतभक्ती हेतु मैं, अर्घ्य चढ़ाऊँ आन।।5।।

ॐ ह्रीं व्याख्याप्रज्ञप्तिअंगसहित बहुश्रुतभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगरूप श्रुतभेद में, छट्ठा ज्ञातृकथांग।
बहुश्रुतभक्ती हेतु मैं, अर्घ्य चढ़ाऊँ आन।।6।।

ॐ ह्रीं ज्ञातृकथांगसहित बहुश्रुतभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगरूप श्रुतभेद में, उपासकाध्ययनांग।
बहुश्रुतभक्ती हेतु मैं, अर्घ्य चढ़ाऊँ आन।।7।।

ॐ ह्रीं उपासकाध्ययनांगसहित बहुश्रुतभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगरूप श्रुतभेद में, है अंतकृद्दशांग।
बहुश्रुतभक्ती हेतु मैं, अर्घ्य चढ़ाऊँ आन।।8।।

ॐ ह्रीं अंतःकृद्दशांगसहित बहुश्रुतभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगरूप श्रुतभेद में, अनुतरोपाददशांग।
बहुश्रुतभक्ती हेतु मैं, अर्घ्य चढ़ाऊँ आन।।9।।

ॐ ह्रीं अनुत्तरोपपादिकदशांगसहित बहुश्रुतभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगरूप श्रुतभेद में, प्रश्नव्याकरणांग।
बहुश्रुतभक्ती हेतु मैं, अर्घ्य चढ़ाऊँ आन।।10।।

ॐ ह्रीं प्रश्नव्याकरणांगसहित बहुश्रुतभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगरूप श्रुतभेद में, है विपाकसूत्रांग।
बहुश्रुतभक्ती हेतु मैं, अर्घ्य चढ़ाऊँ आन।।11।।

ॐ ह्रीं विपाकसूत्रांगसहित बहुश्रुतभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा –

चौदह पूरब ज्ञान, में पहला उत्पाद है।
अर्घ्य चढ़ा श्रुतज्ञान, को बहुश्रुत भक्ति करूँ।।12।।

ॐ ह्रीं उत्पादपूर्वसहितबहुश्रुतभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदह पूरब ज्ञान, में द्वितीय अग्रायणी।
अर्घ्य चढ़ा श्रुतज्ञान, को बहुश्रुत भक्ति करूँ।।13।।

ॐ ह्रीं आग्रायणीयपूर्वसहितबहुश्रुतभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदह पूरब ज्ञान, में वीर्यानुप्रवाद है।
अर्घ्य चढ़ा श्रुतज्ञान, को बहुश्रुत भक्ति करूँ।।14।।

ॐ ह्रीं वीर्यानुप्रवादपूर्वसहितबहुश्रुतभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदह पूरब ज्ञान, में अस्तिनास्तिप्रवाद है।
अर्घ्य चढ़ा श्रुतज्ञान, को बहुश्रुत भक्ति करूँ।।15।।

ॐ ह्रीं अस्तिनास्तिप्रवादपूर्वसहितबहुश्रुतभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

चौदह पूरब ज्ञान, में पंचम ज्ञानप्रवाद है।
अर्घ्य चढ़ा श्रुतज्ञान, को बहुश्रुत भक्ति करूँ।।16।।

ॐ ह्रीं ज्ञानप्रवादपूर्वसहितबहुश्रुतभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदह पूरब ज्ञान, में छट्ठा सत्यप्रवाद है।
अर्घ्य चढ़ा श्रुतज्ञान, को बहुश्रुत भक्ति करूँ।।17।।

ॐ ह्रीं सत्यप्रवादपूर्वसहितबहुश्रुतभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदह पूरब ज्ञान, में जो आत्मप्रवाद है।
अर्घ्य चढ़ा श्रुतज्ञान, को बहुश्रुत भक्ति करूँ।।18।।

ॐ ह्रीं आत्मप्रवादपूर्वसहितबहुश्रुतभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदह पूरब ज्ञान, में इक कर्मप्रवाद है।
अर्घ्य चढ़ा श्रुतज्ञान, को बहुश्रुत भक्ति करूँ।।19।।

ॐ ह्रीं कर्मप्रवादपूर्वसहितबहुश्रुतभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदह पूरब ज्ञान, में प्रत्याख्यानप्रवाद है।
अर्घ्य चढ़ा श्रुतज्ञान, को बहुश्रुत भक्ति करूँ।।20।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानप्रवादपूर्वसहितबहुश्रुतभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदह पूरब ज्ञान, में विद्यानुप्रवाद है।
अर्घ्य चढ़ा श्रुतज्ञान, को बहुश्रुत भक्ति करूँ।।21।।

ॐ ह्रीं विद्यानुप्रवादपूर्वसहितबहुश्रुतभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदह पूरब ज्ञान, में कल्याणप्रवाद है।
अर्घ्य चढ़ा श्रुतज्ञान, को बहुश्रुत भक्ति करूँ।।22।।

ॐ ह्रीं कल्याणवादपूर्वसहितबहुश्रुतभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदह पूरब ज्ञान, में प्राणानुप्रवाद है।
अर्घ्य चढ़ा श्रुतज्ञान, को बहुश्रुत भक्ति करूँ।।23।।

ॐ ह्रीं प्राणानुप्रवादपूर्वसहितबहुश्रुतभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदह पूरब ज्ञान, में इक क्रियाविशाल है।
अर्घ्य चढ़ा श्रुतज्ञान, को बहुश्रुत भक्ति करूँ।।24।।

ॐ ह्रीं क्रियाविशालपूर्वसहितबहुश्रुतभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदह पूरब ज्ञान, में लोकबिन्दुसार है।
अर्घ्य चढ़ा श्रुतज्ञान, को बहुश्रुत भक्ति करूँ।।25।।

ॐ ह्रीं लोकबिन्दुसारपूर्वसहितबहुश्रुतभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-कुसुमलता छंद –

ग्यारह अंग व चौदह पूर्वों, सहित कहा श्रुतज्ञान महा।
इनको प्राप्त किया जिनने, उनको ही श्रुतकेवली कहा।।
श्रुत एवं श्रुतकेवलियों की, भक्ति बहुश्रुतभक्ती है।
मैं पूर्णार्घ्य चढ़ाकर पूजूँ, मिले ज्ञान की शक्ती है।।1।।

ॐ ह्रीं अंगपूर्वश्रुतज्ञानसहित बहुश्रुतभक्तिभावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र – **ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्तिभावनायै नमः।**

जयमाला

तर्ज-द्वारे आये.....

पूजा रचाएँ, प्रभू की जयमाला गाएँ, श्रुतज्ञान दे दे भगवान।।पूजा...।।टेक.।।

हम अज्ञानी भटक रहे हैं, दुनिया के चक्कर में।
पा जाएँ सन्मार्ग यदी तो, छूटें हम भवदुख से।।पूजा....।।1।।

तुम दीपक तो हम बाती हैं, टिमटिम हमें जला देना।
तुम सूरज तो हम तारे हैं, निज में हमें मिला लेना।।पूजा...।।2।।

श्रुत की भक्ति कर करके, बहुतों ने फल पाया।
इस श्रुत की शक्ति के आगे, मोह नहीं टिक पाया।।पूजा...।।3।।

श्रुत अध्ययन से समता मिलती, अरु वात्सल्य की सरिता।
ज्ञानामृत को देने वाला, बहुश्रुतज्ञानी रहता।।पूजा...।।4।।

ग्यारह अंग चतुर्दश पूरब, में विभक्त श्रुतरचना।
जिसे ज्ञान यह मिल जावे, श्रुतकेवलि उसे समझना।।पूजा...।।5।।
सोलहकारण में बहुश्रुत की, भक्ति भावना भाएं।
जयमाला का अर्घ्य चढ़ाकर, पूजन का फल पाएँ।।पूजा...।।6।।
ज्ञान का फल चारित्र ही है, हम इसको धारण कर लें।
मिले ''चन्दनामती'' यही, वरदान हमें जीवन में।।पूजा...।।7।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्तिभावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद –

जो रुचिपूर्वक सोलहकारण, भावना की पूजा करते हैं।
मन-वच-तन से इनको ध्याकर, निज आतम सुख में रमते हैं।।
तीर्थंकर के पद कमलों में, जो मानव इनको भाते हैं।
वे ही इक दिन 'चन्दनामती', तीर्थंकर पदवी पाते हैं।।

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।

(पूजा नं.-14)

प्रवचनभक्ति भावना पूजा

–स्थापना (चौबोल छंद) –

सोलहकारण में तेरहवीं, भावना की पूजा करना है।
उसके माध्यम से जिनवर की, वाणी निज मन में धरना है।।
प्रवचन भक्ती मोक्ष महल की, सीढ़ी प्राप्त कराएगी ।
इसमें अनुरक्ती सचमुच, इक दिन शिवतिय दिलवाएगी।।1।।

–दोहा –

आह्वानन स्थापना, सन्निधिकरण रचाय।
प्रवचनभक्ति भावना, हृदय कमल में ध्याय।।2।।

ॐ ह्रीं प्रवचनभक्तिभावना! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं प्रवचनभक्तिभावना! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं प्रवचनभक्तिभावना! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक (कुसुमलता छंद) –

गंगा सिंधु नदी का निर्मल, जल भर कर ले आए।
जन्मजरामृत्यू विनाश हित, प्रभु पद धार कराएँ।।
प्रवचन भक्ति भावना भाकर, सोलहकारण ध्याएँ।
इक दिन तीर्थंकर पद पाकर, निजगुण में रम जाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं प्रवचनभक्तिभावनायै जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चंदन केशर घिस, स्वर्ण कटोरी लाए।
जिनवर चरण कमल में चर्चत, भव आतप नश जाए।।
प्रवचन भक्ति भावना भाकर, सोलहकारण ध्याएँ।
इक दिन तीर्थंकर पद पाकर, निजगुण में रम जाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं प्रवचनभक्तिभावनायै संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तंदुल उज्वल चन्द्रकिरण सम, ले प्रभु पास चढ़ाएँ।
अमल अखण्डित सुख से मण्डित, अक्षय पद मिल जाए।।

प्रवचन भक्ति भावना भाकर, सोलहकारण ध्याएँ।
इक दिन तीर्थंकर पद पाकर, निजगुण में रम जाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं प्रवचनभक्तिभावनायै अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बेला चंपक कमल केवड़ा, पुष्प सुगंधित लाए।
प्रभु के चरण कमल को पूजत, कामबाण नश जाए।।
प्रवचन भक्ति भावना भाकर, सोलहकारण ध्याएँ।
इक दिन तीर्थंकर पद पाकर, निजगुण में रम जाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं प्रवचनभक्तिभावनायै कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अमृतपिण्ड समान चरू अरु, घेवर आदि बनाए।
जिन पूजन में अर्पण करते, रोग क्षुधा नश जाए।।
प्रवचन भक्ति भावना भाकर, सोलहकारण ध्याएँ।
इक दिन तीर्थंकर पद पाकर, निजगुण में रम जाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं प्रवचनभक्तिभावनायै क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत दीपक का थाल सजाकर, आरति करने आए।
श्री जिनवर की पूजन करते, मोहतिमिर नश जाए।।
प्रवचन भक्ति भावना भाकर, सोलहकारण ध्याएँ।
इक दिन तीर्थंकर पद पाकर, निजगुण में रम जाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं प्रवचनभक्तिभावनायै मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर तगर चंदन से मिश्रित, धूप सुगंधित लाए।
अशुभ कर्म के दग्ध हेतु ही, अग्नी माँहि जलाएँ।।
प्रवचन भक्ति भावना भाकर, सोलहकारण ध्याएँ।
इक दिन तीर्थंकर पद पाकर, निजगुण में रम जाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं प्रवचनभक्तिभावनायै अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सेव आम अंगूर सरस फल, लेकर थाल भराएँ।
जिनवर सम्मुख अर्पण करके, मोक्ष महाफल पाएँ।।
प्रवचन भक्ति भावना भाकर, सोलहकारण ध्याएँ।
इक दिन तीर्थंकर पद पाकर, निजगुण में रम जाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं प्रवचनभक्तिभावनायै मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत कुसुमादिक, अष्टद्रव्य ले आए।
प्रभु पद में ''चन्दनामती'', अर्पण कर शिवसुख पाएँ।।
प्रवचन भक्ति भावना भाकर, सोलहकारण ध्याएँ।
इक दिन तीर्थंकर पद पाकर, निजगुण में रम जाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं प्रवचनभक्तिभावनायै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

केसरि द्रह का नीर ले, श्री जिनवर पादाब्ज।
शांतिधारा करत ही, मिले शांति साम्राज्य।।10।।

शांतये शांतिधारा।

जुही गुलाब सुगंधि युत, वर्ण वर्ण के फूल।
पुष्पांजलि जिनपद करत, मिलें सौख्य अनुकूल।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

(तेरहवें वलय में 15 अर्घ्य, 1 पूर्णार्घ्य)

–दोहा–

प्रवचन भक्ति भावना, को निज मन में ध्याय।
रत्नत्रय आराधना, हेतू पुष्प चढ़ाय।।1।।

इति मण्डलस्योपरि त्रयोदशदले पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–कुसुमलता छंद–

ग्यारह अंग चतुर्दश पूरब, सहित कही जिनवाणी है।
इनमें ही श्रुत समाविष्ट है, जन जन मन कल्याणी है।।
प्रवचन भक्ति भावना के प्रति, अर्घ्य चढ़ाने आए हैं।
अंगपूर्व श्रुत ज्ञान प्राप्त हो, यही भाव संग लाए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं एकादशांगचतुर्दशपूर्वसहित प्रवचनभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

अंगबाह्य श्रुत के अनेक, भेदों का वर्णन है आता।
उनमें कहा प्रकीर्णक जो, चौदह भेदों को समझाता।।

प्रथम प्रकीर्णक सामायिक में, साम्य भावना कही गई।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजन करके, प्रवचनभक्ति प्राप्त हुई।।2।।

ॐ ह्रीं सामायिकप्रकीर्णकसहित प्रवचनभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबिस तीर्थंकर का स्तव, कहा द्वितीय प्रकीर्णक है।
इसमें चौबीसों जिनवर के, पंचकल्याण का वर्णन है।।
अंगबाह्य श्रुत की पूजा कर, मन में उसे बसाएंगे।
प्रवचन भक्ति भावना भाकर, तीर्थंकर पद पाएंगे।।3।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतिस्तवप्रकीर्णकसहित प्रवचनभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनप्रतिमा को वंदन करना, कहा तृतीय प्रकीर्णक है।
मन वच तन से शीश झुकाकर, नमन करें जिनवर पद में।।
अंगबाह्य श्रुत की पूजा कर, मन में उसे बसाएंगे।
प्रवचन भक्ति भावना भाकर, तीर्थंकर पद पाएंगे।।4।।

ॐ ह्रीं वंदनाप्रकीर्णकसहित प्रवचनभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपने दोषों को कहकर, क्षालन करना प्रतिक्रमण कहा।
गुरु के सम्मुख प्रातः सायं, इसको करना कहा गया।।
अंगबाह्य श्रुत की पूजा कर, मन में उसे बसाएंगे।
प्रवचन भक्ति भावना भाकर, तीर्थंकर पद पाएंगे।।5।।

ॐ ह्रीं प्रतिक्रमणप्रकीर्णकसहित प्रवचनभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव धर्म अरु गुरुओं के प्रति, विनयभाव बतलाता है।
वही कहा वैनयिक प्रकीर्णक, साधु इसे अपनाता है।।
अंगबाह्य श्रुत की पूजा कर, मन में उसे बसाएंगे।
प्रवचन भक्ति भावना भाकर, तीर्थंकर पद पाएंगे।।6।।

ॐ ह्रीं वैनयिकप्रकीर्णकसहित प्रवचनभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचपरमेष्ठी के वंदन में, यथायोग्य कृतिकर्म कहे।
उस वर्णन कृतिकर्म प्रकीर्णक, के अन्दर आचार्य करें।।
अंगबाह्य श्रुत की पूजा कर, मन में उसे बसाएंगे।
प्रवचन भक्ति भावना भाकर, तीर्थंकर पद पाएंगे।।7।।

ॐ ह्रीं कृतिकर्मप्रकीर्णकसहित प्रवचनभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनियों की चर्यादिक का, वर्णन जिस श्रुत में माना है।
दशवैकालिक नामक एक, प्रकीर्णक उसको माना है।।
अंगबाह्य श्रुत की पूजा कर, मन में उसे बसाएंगे।
प्रवचन भक्ति भावना भाकर, तीर्थंकर पद पाएंगे।।8।।

ॐ ह्रीं दशवैकालिकप्रकीर्णकसहित प्रवचनभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तराध्ययन प्रकीर्णक में, उपसर्ग परीषह वर्णन है।
इन शास्त्रों के अंश आज, उपलब्ध नहीं श्रुतपूरण है।।
अंगबाह्य श्रुत की पूजा कर, मन में उसे बसाएंगे।
प्रवचन भक्ति भावना भाकर, तीर्थंकर पद पाएंगे।।9।।

ॐ ह्रीं उत्तराध्ययनप्रकीर्णकसहित प्रवचनभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि के योग्य अयोग्य आचरण, का वर्णन आता जिसमें।
उन्हें कल्पव्यवहार प्रकीर्णक, कहें मुनी उनको पढ़ते।।
अंगबाह्य श्रुत की पूजा कर, मन में उसे बसाएंगे।
प्रवचन भक्ति भावना भाकर, तीर्थंकर पद पाएंगे।।10।।

ॐ ह्रीं कल्पव्यवहारप्रकीर्णकसहित प्रवचनभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्यक्षेत्र अरु काल भाव, अनुसार कही चर्या जिसमें।
कल्पाकल्प प्रकीर्णक संज्ञा, वाला श्रुत कहते हैं उन्हें।।
अंगबाह्य श्रुत की पूजा कर, मन में उसे बसाएंगे।
प्रवचन भक्ति भावना भाकर, तीर्थंकर पद पाएंगे।।11।।

ॐ ह्रीं कल्पाकल्पप्रकीर्णकसहित प्रवचनभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनकल्पी स्थविरकल्पि मुनि, कैसे करें समाधी हैं।
महाकल्प शास्त्रों को पढ़कर, शमन करें भवव्याधी है।।
अंगबाह्य श्रुत की पूजा कर, मन में उसे बसाएंगे।
प्रवचन भक्ति भावना भाकर, तीर्थंकर पद पाएंगे।।12।।

ॐ ह्रीं महाकल्पप्रकीर्णकसहित प्रवचनभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों प्रकार के देवों में, यह जीव जनम कैसे लेता।
यह पुण्डरीक श्रुत बतलाता, मुनि इससे भवदुख हर लेता।।

अंगबाह्य श्रुत की पूजा कर, मन में उसे बसाएंगे।
प्रवचनभक्ति भावना भाकर, तीर्थंकर पद पाएंगे।।13।।

ॐ ह्रीं पुण्डरीकप्रकीर्णकसहित प्रवचनभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्र और अहमिन्द्र पदों की, प्राप्ति तपस्या से होती।
इसे महापुण्डरीक प्रकीर्णक, कहे तपोवृद्धि हेतू।।
अंगबाह्य श्रुत की पूजा कर, मन में उसे बसाएंगे।
प्रवचन भक्ति भावना भाकर, तीर्थंकर पद पाएंगे।।14।।

ॐ ह्रीं महापुण्डरीकप्रकीर्णकसहित प्रवचनभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

आलस अरु प्रमाद से पापों, का अर्जन करते प्राणी।
निषद्यका में यह वर्णन पढ़ पापकर्म तजते ज्ञानी।।
अंगबाह्य श्रुत की पूजा कर, मन में उसे बसाएंगे।
प्रवचन भक्ति भावना भाकर, तीर्थंकर पद पाएंगे।।15।।

ॐ ह्रीं निषद्यकाप्रकीर्णकसहित प्रवचनभक्तिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य –

अंगप्रविष्ट व अंगबाह्य श्रुत, दिव्यध्वनि से ही निकले।
इन सबके शुभ अंश आज भी, जिनशास्त्रों में हैं मिलते।।
इस श्रुत को पूर्णार्घ्य चढ़ाकर, मन में उसे बसाएंगे।
प्रवचन भक्ति भावना भाकर, तीर्थंकर पद पाएंगे।।1।।

ॐ ह्रीं अंगप्रविष्टअंगबाह्यश्रुतप्रकीर्णकसहितप्रवचनभक्तिभावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र – **ॐ ह्रीं प्रवचनभक्तिभावनायै नमः।**

जयमाला

तर्ज-दिनरात मेरे स्वामी.....

जिनवाणि मात तेरी, जयमाल आज गाऊँ। जयमाल.....
श्रुतज्ञान निधि को पाकर, पूर्णार्घ्य मैं चढ़ाऊँ।।पूर्णार्घ्य.....।।टेक.।

कैसी भी स्थिती हो, धीरज मेरा न छूटे।
स्वाध्याय ध्यान करके, सब विघ्न मैं भगाऊँ।।जिनवाणि.....।।1।।

दीनों के प्रति हो करुणा, दुखियों के प्रति दया हो।
उपकार पर का करके, निज को सुखी बनाऊँ।।जिनवाणि.....।।2।।

निज शत्रु से कभी भी, बदला न लेना चाहूँ।
समकित की पाई शिक्षा, मन में सदा बसाऊँ।।जिनवाणि.....।।3।।

अनमोल श्रुत वचन को, जब-जब पढ़े हैं मैंने।
इच्छा सदा है मन में, उनको सदा निभाऊँ।।जिनवाणि.....।।4।।

पथ भ्रष्ट होने से माँ, तू ही बचाने वाली।
मैं ''चन्दनामती'' माँ, तुझमें ही रमना चाहूँ।।जिनवाणि.....।।5।।

एकादशांग चौदह, पूर्वों में बद्ध श्रुत है।
अनुयोग द्वार पढ़के, श्रुतज्ञान को बढ़ाऊँ।।जिनवाणि.....।।6।।

श्रुतज्ञान में ही प्रवचन, की भक्ति भावना है।
इस भक्ति में ही रहकर, निज आत्मतत्त्व पाऊँ।।जिनवाणि.....।।7।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्तिभावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद –

जो रुचिपूर्वक सोलहकारण, भावना की पूजा करते हैं।
मन-वच-तन से इनको ध्याकर, निज आतम सुख में रमते हैं।।
तीर्थंकर के पद कमलों में जो, मानव इनको भाते हैं।
वे ही इक दिन 'चन्दनामती', तीर्थंकर पदवी पाते हैं।।

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।

(पूजा नं.-15)

आवश्यकापरिहाणि भावना पूजा

–स्थापना –

तर्ज-सजधज कर जिसदिन.....

सोलहकारण की भावना, हम मन में भाएंगे।
आवश्यकापरिहाणि की, पूजा रचाएंगे।।टेक.।।
मुनियों की सामायिक आदि, जो षट्क्रियाएँ हैं।
पालन उन्हें करते सभी, श्रुत में कथाएँ हैं।।
आह्वानन स्थापन करके, जिनवर को ध्याएंगे।
आवश्यकापरिहाणि की, पूजा रचाएंगे।।1।।

ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहाणि भावना! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहाणि भावना! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहाणि भावना! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक-स्रग्विणी छंद –

आत्मसुख समतारस नाथ! दे दो मुझे।
शुद्ध जल से प्रभो! तीन धारा करूँ।।
नाथ! मैं सोलहकारण की पूजा करूँ।
अपने आवश्यकों में सदा रत रहूँ।।1।।

ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहाणिभावनायै जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्म की सुरभि में, चित्त मेरा रमें।
गंध से प्रभु चरण में, करूँ अर्चना।।
नाथ! मैं सोलहकारण की पूजा करूँ।
अपने आवश्यकों में सदा रत रहूँ।।2।।

ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहाणिभावनायै संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मसुख मेरा अक्षय, बने हे प्रभो!
शालि के पुंज से, तेरी पूजा करूँ।।

नाथ! मैं सोलहकारण की पूजा करूँ।
अपने आवश्यकों में सदा रत रहूँ।।3।।

ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहाणिभावनायै अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प मंदार के, दिव्य लाऊँ प्रभो!
विषय विध्वंस हेतू, चढ़ाऊँ प्रभो।।
नाथ! मैं सोलहकारण की पूजा करूँ।
अपने आवश्यकों में सदा रत रहूँ।।4।।

ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहाणिभावनायै कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

खीर लाडू बनाकर, चढ़ाऊँ प्रभो!
भूख व्याधि मिटे, ऐसा भाऊँ प्रभो।।
नाथ! मैं सोलहकारण की पूजा करूँ।
अपने आवश्यकों में सदा रत रहूँ।।5।।

ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहाणिभावनायै क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नदीपक जला, आरती मैं करूँ।
मोह के नाश की, भावना मैं करूँ।।
नाथ! मैं सोलहकारण की पूजा करूँ।
अपने आवश्यकों में सदा रत रहूँ।।6।।

ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहाणिभावनायै मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप खेऊँ सुगंधित, अगनि में प्रभो!
अष्ट कर्मों का नाशन, करो अब प्रभो।।
नाथ! मैं सोलहकारण की पूजा करूँ।
अपने आवश्यकों में सदा रत रहूँ।।7।।

ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहाणिभावनायै अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आम अंगूर अमरूद, फल लायके।
मोक्षफल हेतु अर्पण, करूँ आयके।।
नाथ! मैं सोलहकारण की पूजा करूँ।
अपने आवश्यकों में सदा रत रहूँ।।8।।

ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहाणिभावनायै मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य अर्पण करूँ पद, अनर्घ्य मिले।
''चन्दनामति'' मेरी, आत्मकलिका खिले।।
नाथ! मैं सोलहकारण की पूजा करूँ।
अपने आवश्यकों में सदा रत रहूँ।।9।।

ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहाणिभावनायै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिधारा करूँ, शांति की प्राप्ति हो।
घोर हिंसा मिटे, विश्व में शांति हो।।
नाथ! मैं सोलहकारण की पूजा करूँ।
अपने आवश्यकों में सदा रत रहूँ।।10।।

शांतये शांतिधारा।

आज पुष्पांजली, प्रभु समर्पित करूँ।
गुणसुरभि हेतु निज को भी, अर्पित करूँ।।
नाथ! मैं सोलहकारण की पूजा करूँ।
अपने आवश्यकों में सदा रत रहूँ।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

(चौदहवें वलय में 6 अर्घ्य, 1 पूर्णार्घ्य)

–दोहा–

चौदहवीं शुभ भावना, को निज मन में ध्याय।
रत्नत्रय आराधना, हेतू पुष्प चढ़ाय।।1।।

इति मण्डलस्योपरि चतुर्दशदले पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

तर्ज –वो क्या है एक मंदिर है.....

षट् आवश्यक का, मुनिजन पालन करते हैं।
हम पूजन करके, अर्घ्य समर्पण करते हैं।।
ये क्या है ? पुण्यास्रव है, आत्मा के लिए शुभ आस्रव है।
जो इनका पालन करते हैं, वे भवसागर से तिरते हैं।।ये क्या है.....।।टेक.।।

पहला आवश्यक, सामायिक कहलाता है।
जो त्रैकालिक में, समता भाव सिखाता है।।
ये क्या है ? पुण्यास्रव है, आत्मा के लिए शुभ आस्रव है।
यह ध्यान का भाव बढ़ाता है, दुर्ध्यान का भाव हटाता है।।1।।

ॐ ह्रीं सामायिकआवश्यकसहितआवश्यकापरिहाणिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षट् आवश्यक का, मुनिजन पालन करते हैं।
हम पूजन करके, अर्घ्य समर्पण करते हैं।।
ये क्या है ? पुण्यास्रव है, आत्मा के लिए शुभ आस्रव है।
जो इनका पालन करते हैं, वे भवसागर से तिरते हैं।।ये क्या है.....।।टेक.।।

दूजा आवश्यक, स्तव नामक कहलाता।
चौबिस तीर्थंकर, स्तुति का इससे नाता।।
ये क्या है ? पुण्यास्रव है, आत्मा के लिए शुभ आस्रव है।
जिनभक्ति का पाठ पढ़ाता है, शिवपथ की ओरबढ़ाता है।।ये क्या है....।।2।।

ॐ ह्रीं स्तवआवश्यकसहितआवश्यकापरिहाणिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षट् आवश्यक का, मुनिजन पालन करते हैं।
हम पूजन करके, अर्घ्य समर्पण करते हैं।।
ये क्या है ? पुण्यास्रव है, आत्मा के लिए शुभ आस्रव है।
जो इनका पालन करते हैं, वे भवसागर से तिरते हैं।।ये क्या है.....।।टेक.।।

वंदना नाम का आवश्यक, भी है तीजा।
इसमें जिनवर को, वन्दन करने की शिक्षा।।
ये क्या है ? पुण्यास्रव है, आत्मा के लिए शुभ आस्रव है।
इसमें मस्तक नम जाता है, अभिमान दूर हो जाता है।।ये क्या है...।।3।।

ॐ ह्रीं वन्दनाआवश्यकसहितआवश्यकापरिहाणिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षट् आवश्यक का, मुनिजन पालन करते हैं।
हम पूजन करके, अर्घ्य समर्पण करते हैं।।

ये क्या है ? पुण्यास्रव है, आत्मा के लिए शुभ आस्रव है।
जो इनका पालन करते हैं, वे भवसागर से तिरते हैं।।ये क्या है.....।।टेक.।।

प्रतिक्रमण नाम का, चौथा आवश्यक माना।
मुनियों ने इससे, दोष दूर करना जाना।।
ये क्या है ? पुण्यास्रव है, आत्मा के लिए शुभ आस्रव है।
मुनि आर्यिका इसको करते हैं, पापों से विरत वे रहते हैं।।ये क्या है.....।।4।।

ॐ ह्रीं सामायिकआवश्यकसहितआवश्यकापरिहाणिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षट् आवश्यक का, मुनिजन पालन करते हैं।
हम पूजन करके, अर्घ्य समर्पण करते हैं।।
ये क्या है ? पुण्यास्रव है, आत्मा के लिए शुभ आस्रव है।
जो इनका पालन करते हैं, वे भवसागर से तिरते हैं।।ये क्या है.....।।टेक.।।

पंचम आवश्यक, प्रत्याख्यान बताया है।
पापों के त्याग का, वर्णन इसमें आया है।।
ये क्या है ? पुण्यास्रव है, आत्मा के लिए शुभ आस्रव है।
आहार आदि जब त्याग करें, यह आवश्यक स्वीकार करें।।ये क्या है.....।।5।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानआवश्यकसहितआवश्यकापरिहाणिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षट् आवश्यक का, मुनिजन पालन करते हैं।
हम पूजन करके, अर्घ्य समर्पण करते हैं।।
ये क्या है ? पुण्यास्रव है, आत्मा के लिए शुभ आस्रव है।
जो इनका पालन करते हैं, वे भवसागर से तिरते हैं।।ये क्या है.....।।टेक.।।

छट्ठा आवश्यक, कायोत्सर्ग कहा जाता।
मुनिजन को तन से, निर्मम होना सिखलाता।।
ये क्या है ? पुण्यास्रव है, आत्मा के लिए शुभ आस्रव है।
यह ध्यानाभ्यास कराता है, निज में स्थिरता लाता है।।ये क्या है.....।।6।।

ॐ ह्रीं कायोत्सर्गआवश्यकसहितआवश्यकापरिहाणिभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-नरेन्द्र छंद –

अट्ठाईस मूलगुण मुनि के, उनमें छह आवश्यक हैं।
इनमें कभी हानि नहिं करके, पालन करते जो यति हैं।।
उनको मैं पूर्णार्घ्य चढ़ाकर, चौदहवीं भावना जजूँ।
मेरे आवश्यक प्रपूर्ण हों, तीर्थंकर पद पद्म भजूँ।।1।।

ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहाणिभावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र – **ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहाणिभावनायै नमः।**

जयमाला

तर्ज-ऐसी लागी लगन.....

प्रभु की पूजा करूँ, प्रभु की भक्ती करूँ।
मुक्ति को पाने की, प्रभु जी शक्ती वरूँ।।टेक.।।

कहते हैं सोलहकारण, की जो भावना।
भाते हैं उनकी सब, पूरी हो कामना।।
इसलिए मैं भी उनकी ही, भक्ती करूँ।।प्रभु...।।1।।

अपने आवश्यकों की, करूँ पालना।
पूजा दानादि कर मैं, करूँ साधना।।
साधना लीन गुरुओं की, भक्ती करूँ।।प्रभु...।।2।।

सुबह मंदिर में जा, प्रभु के दर्शन करूँ।
पाँच अंगों से झुक, उनका वंदन करूँ।।
अक्षतों से भरी बंद, मुट्ठी धरूँ।।प्रभु...।।3।।

जैन शास्त्रों को करके, नमन भक्ति से।
कर लूँ स्वाध्याय कुछ, आत्मशक्ति मिले।।
चार पुंजों को धर, अर्घ्य अर्पित करूँ।।प्रभु...।।4।।

साधु-साध्वी मिलें, तो नमोऽस्तु करूँ।
तीन रत्नों के धारक, को त्रय पुंज दूँ।।
उनकी साक्षात् उपदेश, वाणी सुनूँ।।प्रभु...।।5।।

जैन मंदिर से जब, वापसी मैं चलूँ।
प्रभु के गंधोदक से, तन को पावन करूँ।।
पीठ प्रभु को न दे, सीधे सीधे चलूँ।।प्रभु...।।6।।

मूलगुण आठ को, पाल श्रावक बनें।
'चन्दनामती' तभी, सच्चे श्रावक बनें।।
देवगुरुशास्त्र तीनों की, भक्ति करूँ।।प्रभु...।।7।।

आज जयमाल गाकर, करूँ प्रार्थना।
एक दिन मैं भी पा, जाऊँ यह भावना।।
छह ही आवश्यकों की, मैं भक्ती करूँ।।प्रभु...।।8।।

यह तो मुनियों की ही, भावना मानी है।
शक्तिसम सबको भी, भावना भानी है।।
आठों द्रव्यों का अर्घ्य, समर्पित करूँ।।प्रभु.।।9।।

ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहाणिभावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद –

जो रुचिपूर्वक सोलहकारण, भावना की पूजा करते हैं।
मन-वच-तन से इनको ध्याकर, निज आतम सुख में रमते हैं।।
तीर्थंकर के पद कमलों में जो, मानव इनको भाते हैं।
वे ही इक दिन 'चन्दनामती', तीर्थंकर पदवी पाते हैं।।

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।

(पूजा नं.-16)

मार्गप्रभावना भावना पूजा

–स्थापना-दोहा –

मार्ग प्रभावना भावना, की पूजन सुखदाय।
आह्वानन स्थापना, कर लूँ मन हरषाय।।1।।

ॐ ह्रीं मार्गप्रभावना भावना! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं मार्गप्रभावना भावना! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं मार्गप्रभावना भावना! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक –

तर्ज-तेरे हाथों की लकीर बदलेगी.....

मेरा भाग्य सितारा चमका, मिला अवसर प्रभु भक्ति का, कि आज मैं निहाल हो गया
मुझे मिल गया गुणों का खजाना, मैं तो मालामाल हो गया।।टेक.।।

गंगा नदी का जल लेके आया, जिनवर चरण तीन धारा कराया।
भावना यही मैं भाऊँ, जिनशासन को चमकाऊँ, मैं भव से पार हो गया,
मुझे मिल गया गुणों का खजाना, मैं तो मालामाल हो गया।।मेरा...।।1।।

ॐ ह्रीं मार्गप्रभावनाभावनायै जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर मिश्रित चन्दन घिसाया, जिनराज पद चर्चन करने आया।
भावना यही मैं भाऊँ, जिनशासन को चमकाऊँ, मैं भव से पार हो गया,
मुझे मिल गया गुणों का खजाना, मैं तो मालामाल हो गया।।मेरा...।।2।।

ॐ ह्रीं मार्गप्रभावनाभावनायै संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती सदृश अक्षत ले आया, जिनवर चरण में मैंने चढ़ाया।
भावना यही मैं भाऊँ, जिनशासन को चमकाऊँ, मैं भव से पार हो गया,
मुझे मिल गया गुणों का खजाना, मैं तो मालामाल हो गया।।मेरा...।।3।।

ॐ ह्रीं मार्गप्रभावनाभावनायै अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

नाना तरह के पुष्प मंगाया, जिनवर चरण में मैंने चढ़ाया।
भावना यही मैं भाऊँ, जिनशासन को चमकाऊँ, मैं भव से पार हो गया,

मुझे मिल गया गुणों का खजाना, मैं तो मालामाल हो गया।।मेरा...।।4।।

ॐ ह्रीं मार्गप्रभावनाभावनायै कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मीठे सरस पकवान्न बनाया, क्षुधरोगनाशन हेतु चढ़ाया।
भावना यही मैं भाऊँ, जिनशासन को चमकाऊँ, मैं भव से पार हो गया,
मुझे मिल गया गुणों का खजाना, मैं तो मालामाल हो गया।।मेरा...।।5।।

ॐ ह्रीं मार्गप्रभावनाभावनायै क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत दीपक का थाल सजाया, प्रभु आरति करके सुख पाया।
भावना यही मैं भाऊँ, जिनशासन को चमकाऊँ, मैं भव से पार हो गया,
मुझे मिल गया गुणों का खजाना, मैं तो मालामाल हो गया।।मेरा...।।6।।

ॐ ह्रीं मार्गप्रभावनाभावनायै मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नी में सुरभित धूप जलाया, कर्म जलाने के हेतु आया।
भावना यही मैं भाऊँ, जिनशासन को चमकाऊँ, मैं भव से पार हो गया,
मुझे मिल गया गुणों का खजाना, मैं तो मालामाल हो गया।।मेरा...।।7।।

ॐ ह्रीं मार्गप्रभावनाभावनायै अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

नाना तरह के फल ले आया, शिवफल के हेतू प्रभु को चढ़ाया।
भावना यही मैं भाऊँ, जिनशासन को चमकाऊँ, मैं भव से पार हो गया,
मुझे मिल गया गुणों का खजाना, मैं तो मालामाल हो गया।।मेरा...।।8।।

ॐ ह्रीं मार्गप्रभावनाभावनायै मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं अर्घ्य थाल चढ़ाने आया, तब ''चन्दनामति'' निज सुख पाया।
भावना यही मैं भाऊँ, जिनशासन को चमकाऊँ, मैं भव से पार हो गया,
मुझे मिल गया गुणों का खजाना, मैं तो मालामाल हो गया।।मेरा...।।9।।

ॐ ह्रीं मार्गप्रभावनाभावनायै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

शांतीधारा के लिए, जल का कलश भराय।
मन निर्मलता के लिए, जिनवरण चरण चढ़ाय।।10।।

शांतये शांतिधारा।

पुष्पांजलि के हेतु मैं, पुष्प विविध चुन लाय।
आत्मगुणों की प्राप्ति हित, जिनवरचरण चढ़ाय।।1।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

(पन्द्रहवें वलय में 10 अर्घ्य, 1 पूर्णार्घ्य)

–दोहा–

आत्म प्रभावन भावना, को निज मन में ध्याय।
रत्नत्रय आराधना, हेतू पुष्प चढ़ाय।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पञ्चदशदले पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

तर्ज-चाँद मेरे आ जा रे.....

मेरे मन खुशियाँ छाई हैं-2
मार्ग प्रभावन की भावना, मेरे मन में समाई है।।मेरे.।।टेक.।

श्रुतज्ञान के द्वारा गुरुजन, जिनशासन को फैलाते।
इस ज्ञान की महिमा को सब, ग्रंथों में कविजन गाते।।
उन्हीं की पूजा रचाई है,
अर्घ्य चढ़ाने हेतु द्रव्य की, थाली सजाई है।।मेरे.।।1।।

ॐ ह्रीं ज्ञानेन मार्गप्रभावनाभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरे मन खुशियाँ छाई हैं-2
मार्ग प्रभावन की भावना, मेरे मन में समाई है।।मेरे.।।टेक.।

उपवास आदि तप करके, मुनि आतम बल को बढ़ाते।
जिनशासन को भी अपने, तप से वे सदा चमकाते।।
उन्हीं की पूजा रचाई है,
अर्घ्य चढ़ाने हेतु द्रव्य की, थाली सजाई है।।मेरे.।।2।।

ॐ ह्रीं तपसा मार्गप्रभावनाभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरे मन खुशियाँ छाई हैं-2
मार्ग प्रभावन की भावना, मेरे मन में समाई है।।मेरे.।।टेक.।

साहित्य गद्य पद्यादिक, रच जो प्रभावना करते।
अपनी कवित्व शक्ती से, सबको आकर्षित करते।।
उन्हीं की पूजा रचाई है,
अर्घ्य चढ़ाने हेतु द्रव्य की, थाली सजाई है।।मेरे.।।3।।

ॐ ह्रीं कवित्वेन मार्गप्रभावनाभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरे मन खुशियाँ छाई हैं-2
मार्ग प्रभावन की भावना, मेरे मन में समाई है।।मेरे.।।टेक.।
निज व्याख्यानों के द्वारा, जो आगम सार बताते।
जिनधर्म प्रभावन हेतू, हित मित प्रिय वचन सुनाते।।
उन्हीं की पूजा रचाई है,
अर्घ्य चढ़ाने हेतु द्रव्य की, थाली सजाई है।।मेरे.।।4।।

ॐ ह्रीं व्याख्यानेन मार्गप्रभावनाभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरे मन खुशियाँ छाई हैं-2
मार्ग प्रभावन की भावना, मेरे मन में समाई है।।मेरे.।।टेक.।
अकलंक देव सूरी सम, पर मत पर विजय करें जो।
स्याद्वाद पक्ष के द्वारा, जिनमत की विजय करें वो।।
उन्हीं की पूजा रचाई है,
अर्घ्य चढ़ाने हेतु द्रव्य की, थाली सजाई है।।मेरे.।।5।।

ॐ ह्रीं वादेन मार्गप्रभावनाभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरे मन खुशियाँ छाई हैं-2
मार्ग प्रभावन की भावना, मेरे मन में समाई है।।मेरे.।।टेक.।
जिनसेन व नेमिचन्द्र सम, रविषेणाचार्य सरीखे।
ग्रंथों की रचना करके, जिनधर्म भावना सीखें।।
उन्हीं की पूजा रचाई है,
अर्घ्य चढ़ाने हेतु द्रव्य की, थाली सजाई है।।मेरे.।।6।।

ॐ ह्रीं ग्रन्थोद्धारेण मार्गप्रभावनाभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरे मन खुशियाँ छाई हैं-2
मार्ग प्रभावन की भावना, मेरे मन में समाई है।।मेरे.।।टेक.।

चक्री भरतेश के सदृश, जिनबिम्बों को जो बनाते।
सबको सम्यग्दर्शन का, मारग उपलब्ध कराते।।
उन्हीं की पूजा रचाई है,
अर्घ्य चढ़ाने हेतु द्रव्य की, थाली सजाई है।।मेरे.।।7।।

ॐ ह्रीं जिनप्रतिमानिर्माणरूपमार्गप्रभावनाभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरे मन खुशियाँ छाई हैं-2
मार्ग प्रभावन की भावना, मेरे मन में समाई है।।मेरे.।।टेक.।
चउविध संघ को बुलवा कर-के पंचकल्याणक करना।
प्रतिमा की प्रतिष्ठा करके, जिनधर्म प्रभावन करना।।
उन्हीं की पूजा रचाई है,
अर्घ्य चढ़ाने हेतु द्रव्य की, थाली सजाई है।।मेरे.।।8।।

ॐ ह्रीं जिनप्रतिमाप्रतिष्ठाकृतमार्गप्रभावनाभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरे मन खुशियाँ छाई हैं-2
मार्ग प्रभावन की भावना, मेरे मन में समाई है।।मेरे.।।टेक.।
शुभ तीर्थ अयोध्या कुण्डलपुर, अरु सम्मेदशिखर की।
यात्रासंघों के द्वारा, होती प्रभावना धरम की।।
उन्हीं की पूजा रचाई है,
अर्घ्य चढ़ाने हेतु द्रव्य की, थाली सजाई है।।मेरे.।।9।।

ॐ ह्रीं तीर्थयात्राकृतमार्गप्रभावनाभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरे मन खुशियाँ छाई हैं-2
मार्ग प्रभावन की भावना, मेरे मन में समाई है।।मेरे.।।टेक.।
सोलहकारण दशलक्षण, आष्टान्हिक आदि दिनों में।
पूजा विधान उत्सव से, होती प्रभावना जो है।।
उन्हीं की पूजा रचाई है,
अर्घ्य चढ़ाने हेतु द्रव्य की, थाली सजाई है।।मेरे.।।10।।

ॐ ह्रीं अनेकपूजाविधानमार्गप्रभावनाभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य (नरेन्द्र छंद) –

दान तपस्या जिनपूजा, रथयात्रा आदि कराओ।
नृत्य गीत संगीत के द्वारा, जग में धूम मचाओ।।

जिनशासन का गौरव जिससे, वृद्धिंगत हो जावे।
मार्गप्रभावन उसी भावना, को पूर्णार्घ्य चढ़ावें।।1।।

ॐ ह्रीं दशविधसांगोपांगयुक्तमार्गप्रभावनाभावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र – **ॐ ह्रीं मार्गप्रभावनाभावनायै नमः।**

जयमाला

तर्ज-फूलों सा चेहरा तेरा....

जिनवर की वाणी अमर, जग को सुनाना है।
अर्घ्य का थाल ले, प्रभु गुणों की माल ले, पूजा रचाना है।।जिनवर..।।टेक.।।

भारत की धरती, ऋषियों के तप से
पावन सदा ही, होती रही है।
तीर्थंकरों की, वाणी सभी के
पापों के मल को, धोती रही है।।

प्रभु के विहारों से, ज्ञान विचारों से, फैला अमन चैन है विश्व में।
तीर्थंकर कैसे बने, यह परिचय कराना है।
अर्घ्य का थाल ले, प्रभु गुणों की माल ले, पूजा रचाना है।।जिनवर की.....।।1।।

कलियुग में जिनवर, होते नहीं पर
मुनिवर की पदवी, दुर्लभ नहीं है।
जिनवर के लघु नन्दन, मुनिवरों की
वाणी सभी को, सुलभ हो रही है।।

धर्मपिपासू को, आत्मजिज्ञासू को, भाती है प्रभु की अमर भारती।
जिनवाणी की बातों को सुन-कर जीवन बनाना है।
अर्घ्य का थाल ले, प्रभु गुणों की माल ले, पूजा रचाना है।।जिनवर की.....।।2।।

कुन्दकुन्द से लेकर, श्री शांतिसिंधु।
तक के सभी, गुरुओं को नमूँ।
माँ ब्राह्मी से, चंदना तक तथा,
गणिनी श्री ज्ञानमती, माता को नमूँ।।

धर्म की वृद्धी की, सौख्य अरु समृद्धी की, जिनधर्म को जिनने चमकाया है।
इनसे ही ले प्रेरणा, जिनशासन बढ़ाना है।
अर्घ्य का थाल ले, प्रभु गुणों की माल ले, पूजा रचाना है।।जिनवर की....।।3।।

सोलहसुकारण, की भावना में,
मार्गप्रभावना, इक भावना है।
उत्सव महोत्सव, संगीत प्रवचन
के द्वारा इसको, सदा पालना है।।

मिल के सभी आओ, प्रभु के गीत गाओ, फैलेगा सुख चैन संसार में।
दुनिया के हर कोने में, जिनधर्म गुंजाना है।
अर्घ्य का थाल ले, प्रभुगुणों की माल ले, पूजा रचाना है।।जिनवर की.....।।4।।

जल गंध अक्षत, पुष्पों की माला,
नैवेद्य दीपक, तथा धूप ले।
फल से सहित, अष्ट द्रव्यों को लेकर,
पूर्णार्घ्य से, जिनचरण पूज लें।।

देवशास्त्र गुरुवर, तीन रत्न सुखकर, सबको यही भव से तारते।
प्रभु पद की रज 'चन्दना-मति' सिर पर लगाना है।
अर्घ्य का थाल ले, प्रभु गुणों की माल ले, पूजा रचाना है।।जिनवर....।।5।।

ॐ ह्रीं मार्गप्रभावनाभावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद –

जो रुचिपूर्वक सोलहकारण, भावना की पूजा करते हैं।
मन-वच-तन से इनको ध्याकर, निज आतम सुख में रमते हैं।।
तीर्थंकर के पद कमलों में जो, मानव इनको भाते हैं।
वे ही इक दिन 'चन्दनामती', तीर्थंकर पदवी पाते हैं।।

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।

(पूजा नं.-17)

प्रवचनवात्सल्य भावना पूजा

–स्थापना (चौबोल छंद) –

श्री जिनेन्द्रमुख से निर्गत, वाणी को प्रवचन कहते हैं।
उसमें प्रीति दिखाने वाले, बिरले ही जन रहते हैं।।
सोलहकारण में अंतिम, प्रवचन वात्सल्य भावना है।
आह्वानन करके उसका, पूजन की हुई भावना है।।1।।

ॐ ह्रीं प्रवचनवात्सल्यभावना! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं प्रवचनवात्सल्यभावना!अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं प्रवचनवात्सल्यभावना!अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक (शंभु छंद) –

भव भव में जन्म मरण व्याधी, मुझको दुख देती आई है।
जलधारा से अब उसे शांत, करने की भावना भाई है।।
प्रवचन वात्सल्य भावना की, पूजन का भाव बनाया है।
जिनवचनों में रुचि बनी रहे, जिनधर्म की पाई छाया है।।1।।

ॐ ह्रीं प्रवचनवात्सल्यभावनायै जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में यम का सन्ताप मुझे, भव भव से सताता आया है।
तव पद में चंदन चर्चन का, अतएव भाव अब आया है।।
प्रवचन वात्सल्य भावना की, पूजन का भाव बनाया है।
जिनवचनों में रुचि बनी रहे, जिनधर्म की पाई छाया है।।2।।

ॐ ह्रीं प्रवचनवात्सल्यभावनायै संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

भव भव में ज्ञान को खण्ड-खण्ड, करके जो मैंने दुख पाया।
इसलिए अखण्डित अक्षत से, प्रभु पूजन करना मन भाया।।
प्रवचन वात्सल्य भावना की, पूजन का भाव बनाया है।
जिनवचनों में रुचि बनी रहे, जिनधर्म की पाई छाया है।।3।।

ॐ ह्रीं प्रवचनवात्सल्यभावनायै अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

विषयों की आशा ने भव भव में, मुझको बहुत सताया है।
उसकी शांती हेतू अब फूल, चढ़ाने का मन आया है।।
प्रवचन वात्सल्य भावना की, पूजन का भाव बनाया है।
जिनवचनों में रुचि बनी रहे, जिनधर्म की पाई छाया है।।4।।

ॐ ह्रीं प्रवचनवात्सल्यभावनायै कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हे प्रभुवर! काल अनादी से, मैंने क्या क्या नहिं खाया है।
पर शांत हुई नहिं क्षुधा मेरी, अतएव तुम्हें अब ध्याया है।।
प्रवचन वात्सल्य भावना की, पूजन का भाव बनाया है।
जिनवचनों में रुचि बनी रहे, जिनधर्म की पाई छाया है।।5।।

ॐ ह्रीं प्रवचनवात्सल्यभावनायै क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरे मोही मन में भव भव से, अंधकार ही छाया है।
इसलिए रत्न का दीप जला, आरति करना मन भाया है।।
प्रवचन वात्सल्य भावना की, पूजन का भाव बनाया है।
जिनवचनों में रुचि बनी रहे, जिनधर्म की पाई छाया है।।6।।

ॐ ह्रीं प्रवचनवात्सल्यभावनायै मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों के कारण जनम जनम में, दुःखों को ही पाया है।
दुखशांति हेतु प्रभु पद में धूप, दहन का भाव बनाया है।।
प्रवचन वात्सल्य भावना की, पूजन का भाव बनाया है।
जिनवचनों में रुचि बनी रहे, जिनधर्म की पाई छाया है।।7।।

ॐ ह्रीं प्रवचनवात्सल्यभावनायै अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

खट्टे मीठे फल को खा खाकर, भी उत्तम फल नहिं पाया।
अतएव आज प्रभु पूजन में, फल थाल चढ़ाना मन भाया।।
प्रवचन वात्सल्य भावना की, पूजन का भाव बनाया है।
जिनवचनों में रुचि बनी रहे, जिनधर्म की पाई छाया है।।8।।

ॐ ह्रीं प्रवचनवात्सल्यभावनायै मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

ले अष्टद्रव्य ''चन्दनामती'', मैंने यह अर्घ्य बनाया है।
अनुपम अनर्घ्य पद मिल जावे, इस हेतू अर्घ्य चढ़ाया है।।

प्रवचन वात्सल्य भावना की, पूजन का भाव बनाया है।
जिनवचनों में रुचि बनी रहे, जिनधर्म की पाई छाया है।।9।।

ॐ ह्रीं प्रवचनवात्सल्यभावनायै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों द्रव्यों के बाद शांति-धारा करने मैं आया हूँ।
राजा व प्रजा में शांतिक्षेम हो, यही भाव संग लाया हूँ।।
प्रवचन वात्सल्य भावना की पूजन का भाव बनाया है।
जिनवचनों में रुचि बनी रहे, जिनधर्म की पाई छाया है।।10।।

शांतये शांतिधारा।

शांतीधारा करके पुष्पांजलि, अर्पित करने आया हूँ।
जग में मैत्री स्थापित हो, यह भाव हृदय में लाया हूँ।।
प्रवचन वात्सल्य भावना की पूजन का भाव बनाया है।
जिनवचनों में रुचि बनी रहे, जिनधर्म की पाई छाया है।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

(सोलहवें वलय में 4 अर्घ्य, 1 पूर्णार्घ्य)

दोहा –**प्रवचनवत्सल भावना, को निज मन में ध्याय।**
रत्नत्रय आराधना, हेतू पुष्प चढ़ाय।।1।।

इति मण्डलस्योपरि षोडशदले पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

तर्ज-गुरुवर आज मेरी कुटिया में.....

प्रवचनवत्सल भावना भाएंगे-2
सोलहकारण.....हो.....
सोलहकारण की पूजा रचाएंगे।।प्रवचन....।।टेक.।।

हाथ में पिच्छी कमण्डलु जिनके।
साथ में मुनिगण रहते हैं जिनके।।
उन मुनि पद में.....हो.....
उन मुनिपद में, हम रम जाएंगे।।प्रवचन.....।।1।।

ॐ ह्रीं मुनिस्नेहरूपप्रवचनवात्सल्यभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रवचनवत्सल भावना भाएंगे-2
सोलहकारण.....हो.....
सोलहकारण की पूजा रचाएंगे।।प्रवचन....।।टेक.।।

श्वेत साटिका एक पहनतीं।
आर्यिका पिच्छि कमण्डलु धरतीं।।
उनके गुण में.....हो.....
उनके गुण में हम रम जाएंगे।।प्रवचन.....।।2।।

ॐ ह्रीं आर्यिकास्नेहरूपप्रवचनवात्सल्यभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रवचनवत्सल भावना भाएंगे-2
सोलहकारण.....हो.....
सोलहकारण की पूजा रचाएंगे।।प्रवचन....।।टेक.।।

देव शास्त्र गुरु भक्ति करें जो।
श्रावक सच्चे कहते उनको।।
उनको लखकर.....हो.....
उनको लखकर प्रेम लुटाएंगे।।प्रवचन.....।।3।।

ॐ ह्रीं श्रावकस्नेहरूपप्रवचनवात्सल्यभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रवचनवत्सल भावना भाएंगे-2
सोलहकारण.....हो.....
सोलहकारण की, पूजा रचाएंगे।।प्रवचन....।।टेक.।।

सद्गृहस्थ श्राविका जो होतीं।
गुरु भक्ती में तत्पर रहतीं।।
उनको लखकर.....हो.....
उनको लखकर, प्रेम दिखाएंगे।।प्रवचन.....।।4।।

ॐ ह्रीं श्राविकास्नेहरूपप्रवचनवात्सल्यभावनायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-शंभु छंद –

प्रवचन वात्सल्य भावना को, पूर्णार्घ्य चढ़ाने आए हैं।
हम संघ चतुर्विध के चरणों में, वंदन करने आए हैं।।

मुनि और आर्यिका श्रावक अरु, श्राविका के प्रति वत्सलता है।
सोलहकारण की अंतिम इस, भावना की यह सार्थकता है।।

ॐ ह्रीं चतुर्विधसंघवत्सलत्वरूपप्रवचनवात्सल्यभावनायै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र – **ॐ ह्रीं प्रवचनवात्सल्यभावनायै नमः।**

जयमाला

तर्ज-सोनागिरि में.....

जिनमंदिर में, भक्ती गंगा बहती है।
प्रभु चरणों में, सिद्धी कन्या रहती है।।
जयमाला में अर्घ्य थाल अर्पण करूँ, प्रवचनवत्सल भावना का अर्चन करूँ।

जिनमूर्तियाँ रहती जहाँ, मंदिर उसे कहते।
ग्रंथों में जिनमंदिर को भी, इक देवता कहते।।
जिनमंदिरों के दर्श से, भवताप भी टरते।
मंगलमयी प्रभु दर्श से, हर कार्य हैं बनते।।
जिनमूरति बिन बोले, सब कुछ कहती है॥प्रभु चरणों में, सिद्धी कन्या रहती है।।1।।

प्रातः से ही जिनमंदिरों में, घंटे बजते हैं।
भव्यात्मा सुनकर जिसे, दुर्ध्यान तजते हैं।।

जिनभक्त जाकर के वहाँ, अभिषेक करते हैं।
जिनवर के गंधोदक से तन को, शुद्ध करते हैं।।
गंधोदक से तन में स्वस्थता रहती है। प्रभु चरणों में सिद्धी कन्या रहती है।।2।।

पूजा के स्वर जिनमंदिरों में, गूंजते रहते।
वे स्वर सदा पर्यावरण को, शुद्ध हैं करते।।

आतम को भी परमात्मा, पूजा बनाती है।
पतितों को भी पावन प्रभू, पूजा बनाती है।।
जिनवाणी यह पूजन महिमा कहती है। प्रभु चरणों में सिद्धी कन्या रहती है।।3।।

जब मंदिरों में सोलहकारण, पर्व आते हैं।
तब भक्तजन प्रायः विशेष, विधान रचाते हैं।।

शक्ती हुई तो सोलहकारण, का व्रत करते हैं।
भक्ती से सोलह भावना की, पूजन करते हैं।।
इससे कर्मशृंखला निश्चित कटती है, प्रभु चरणों में सिद्धी कन्या रहती है।।4।।

अंतिम है इसमें भावना, वात्सल्य प्रवचन की।
धर्मात्माओं के प्रति, मैत्री प्रदर्शन की।।

चउसंघ के प्रति प्रेम का, जब भाव रहता है।
तब ''चन्दनामती'' धर्म का, उत्थान बढ़ता है।।
यही बात गुरु प्रवचन में भी रहती है। प्रभु चरणों में सिद्धी कन्या रहती है।।5।।

इस सिद्धि कन्या से, जिनेन्द्र विवाह करते हैं।
फिर भी हमेशा ब्रह्मचर्य-स्वरूप रहते हैं।।

सिद्धात्मा की स्थिती को, सिद्धी कहते हैं।
शुद्धात्मा उसके लिए, पुरुषार्थ करते हैं।।
पुरुषारथ से सिद्ध अवस्था मिलती है। प्रभु चरणों में सिद्धी कन्या रहती है।।6।।

ॐ ह्रीं प्रवचनवात्सल्यभावनायै जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद –

जो रुचिपूर्वक सोलहकारण, भावना की पूजा करते हैं।
मन-वच-तन से इनको ध्याकर, निज आतम सुख में रमते हैं।।
तीर्थंकर के पद कमलों में जो, मानव इनको भाते हैं।
वे ही इक दिन 'चन्दनामती', तीर्थंकर पदवी पाते हैं।।

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।

बड़ी जयमाला

तर्ज-माई रे माई.....

आया रे आया सोलहकारण, पर्व अनादी आया।
हमने सोलहकारण का, सुन्दर विधान रचवाया।।
बोलो जय जय जय, बोलो जय जय जय।।टेक.।।

एक वर्ष में तीन बार, यह पर्व सदा आता है।
चैत्र भाद्रपद और माघ का, माह इसे पाता है।।
पर्व अनादि इसे कहते हैं, नहीं किसी ने बनाया।
हमने सोलहकारण का, सुन्दर विधान रचवाया।।
बोलो जय जय जय, बोलो जय जय जय।।1।।

इसमें बत्तिस दिन तक उपवा-सादि किये जाते हैं।
सोलहकारण पूजा एवं, जाप्य किये जाते हैं।।
इसको कर बहुतेक जनों ने, तीर्थंकर पद पाया।
हमने सोलहकारण का, सुन्दर विधान रचवाया।।
बोलो जय जय जय, बोलो जय जय जय।।2।।

इसकी सुन्दर कथा जिनागम, में पाई जाती है।
जिसे जानकर गुरुओं की, गाथा गाई जाती है।।
राजगृही नगरी का कथानक, इस व्रत में बतलाया।
हमने सोलहकारण का, सुन्दर विधान रचवाया।।
बोलो जय जय जय, बोलो जय जय जय।।3।।

राजगृही में कालभैरवी, नाम की इक कन्या थी।
वह अत्यन्त कुरूप महा-शर्मा के घर जन्मी थी।।
इक दिन मतिसागर मुनिवर से, महाशर्मा ने बताया।
हमने सोलहकारण का, सुन्दर विधान रचवाया।।
बोलो जय जय जय, बोलो जय जय जय।।4।।

गुरु ने कहा यह पूर्व जन्म में, सुन्दर राजसुता थी।
उज्जैनी के राजमहल में, लाड़ प्यार से पली थी।।
रूप के मद में ज्ञानसूर्य मुनि, पर था थूक गिराया।
हमने सोलहकारण का, सुन्दर विधान रचवाया।।
बोलो जय जय जय, बोलो जय जय जय।।5।।

राजपुरोहित ने क्रोधित हो, कन्या को फटकारा।
मुनिवर का तन प्रक्षालन कर, वैयावृत्ति कराया।।
कन्या को भी गुरुवर सम्मुख, प्रायश्चित्त कराया।
हमने सोलहकारण का, सुन्दर विधान रचवाया।।
बोलो जय जय जय, बोलो जय जय जय।।6।।

गुरु बोले महाशर्मा से, कुछ पुण्य उदय जब आया।
उस कन्या ने तेरे घर में, पुनः जनम अब पाया।।
लेकिन मुनि उपसर्ग का पाप भी, आज उदय है आया।
हमने सोलहकारण का सुन्दर विधान रचवाया।।
बोलो जय जय जय, बोलो जय जय जय।।7।।

गुरु आसादन का दुष्फल सुन, काल भैरवी बोली।
गुरुवर कुछ उपाय बतलाओ, शान्त भाव से बोली।।
मुनि ने तब सोलहकारण का, व्रत उसको बतलाया।
हमने सोलहकारण का, सुन्दर विधान रचवाया।।
बोलो जय जय जय, बोलो जय जय जय।।8।।

विधिवत् व्रत पालन कर उसने, मरण समाधि किया था।
फिर सोलहवें स्वर्ग में देव के, पद को प्राप्त किया था।।
परम्परा से विदेह क्षेत्र में, तीर्थंकर पद पाया।।
हमने सोलहकारण का, सुन्दर विधान रचवाया।।
बोलो जय जय जय, बोलो जय जय जय।।9।।

सीमंधर तीर्थंकर बन, गन्धर्व नगर में जन्मे।
असंख्य जीवों को संबोधा, उस तीर्थंकर पद में।।

आयु पूर्ण करके उनने, निर्वाण परमपद पाया।
हमने सोलहकारण का, सुन्दर विधान रचवाया।।
बोलो जय जय जय, बोलो जय जय जय।।10।।

यह इस सोलहकारण व्रत का, चमत्कार तुम जानो।
इस व्रत से तीर्थंकर पद भी, मिलता है यह मानो।।
तीर्थंकर के पुण्य का वर्णन, शास्त्रों में बतलाया।
हमने सोलहकारण का, सुन्दर विधान रचवाया।।
बोलो जय जय जय, बोलो जय जय जय।।11।।

चैत्र भाद्रपद माघ की बदि, एकम से शुरू व्रत होता।
एक माह तक व्रत करके, मंत्रों का जाप्य भी होता।।
दर्शविशुद्धी से प्रवचन-वत्सल तक पुण्य कमाया।
हमने सोलहकारण का, सुन्दर विधान रचवाया।।
बोलो जय जय जय, बोलो जय जय जय।।12।।

व्रत में तीन प्रतिपदा[1] के उपवास तीन होते हैं।
बाकी के दिन में एकाशन, करके व्रत होते हैं।।
अथवा जघन्य में बत्तिस दिन, एकाशन बतलाया।
हमने सोलहकारण का, सुन्दर विधान रचवाया।।
बोलो जय जय जय, बोलो जय जय जय।।13।।

एक मंत्र का जाप्य दो दिवस, करना है भव्यात्मन्।
बत्तिस[2] दिन में सोलह मंत्रों, को पढ़ना भव्यात्मन्।।
सोलहकारण व्रत सोलह, वर्षों में पूर्ण बताया।
हमने सोलहकारण का, सुन्दर विधान रचवाया।।
बोलो जय जय जय, बोलो जय जय जय।।14।।

1. जैसे-चैत्र कृ. एकम् का, चैत्र शु. एकम् का पुनः वैशाख कृ. एकम् को, इसी प्रकार भादों कृ. एकम्-भादों शु. एकम् एवं आश्विन कृ. एकम् को तथा माघ में माघ कृ. एकम्, माघ शु. एकम् एवं फाल्गुन कृ. एकम् को उपवास किया जाता है। 2. जैसे भादों कृ. एकम् से आश्विन कृ. दूज तक 32 दिन होते हैं।

गणिनीप्रमुख ज्ञानमती माता, का आशीष मिला है।
इसीलिए यह पुण्यकृती, लिखने का पुण्य खिला है।।
इस व्रत को ''चन्दनामती'', पालन करना मन भाया।
हमने सोलहकारण का, सुन्दर विधान रचवाया।।
बोलो जय जय जय, बोलो जय जय जय।।15।।

जयमाला का महा अर्घ्य, प्रभु चरण चढ़ाने आए।
इस विधान के माध्यम से, भावों को शुद्ध बनाएँ।।
रथयात्रा आदिक भी करना, उद्यापन में बताया।
हमने सोलहकारण का, सुन्दर विधान रचवाया।।
बोलो जय जय जय, बोलो जय जय जय।।16।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धि-विनयसम्पन्नता-शीलव्रतेष्वनतीचार-अभीक्ष्णज्ञानोपयोग-संवेग-शक्तितस्त्याग-शक्तितस्तप-साधुसमाधि-वैय्यावृत्त्यकरण-अर्हद्भक्ति-आचार्यभक्ति-बहुश्रुतभक्ति-प्रवचनभक्ति-आवश्यकापरिहाणि-मार्गप्रभावना-प्रवचनवत्सल्वनाम षोडशकारणेभ्यो महाजयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद –

जो रुचिपूर्वक सोलहकारण, भावना की पूजा करते हैं।
मन-वच-तन से इनको ध्याकर, निज आतम सुख में रमते हैं।।
तीर्थंकर के पद कमलों में जो, मानव इनको भाते हैं।
वे ही इक दिन 'चन्दनामती', तीर्थंकर पदवी पाते हैं।।

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।

प्रशस्ति

–दोहा–

वीर संवत् पच्चीस सौ, सैंतिस का शुभ वर्ष।
चैत्र कृष्ण एकम तिथी, है मन में अति हर्ष।।1।।

सोलहकारण पर्व का, है प्रारंभ महान।
ज्ञानमती जी मात का, दीक्षा दिन[2] शुभ जान।।2।।

वर्ष अठावन पूर्ण कर, उनसठवें में प्रवेश।
सन् उन्निस सौ त्रेपन में, धरा क्षुल्लिका वेष।।3।।

सोलहकारण पर्व उन, जीवन में साकार।
हुआ तभी उनसे हुआ, बहुत हि धर्मप्रचार।।4।।

इन्हीं ज्ञानमति मात की, शिष्या मैं अज्ञान।
नाम चन्दनामति मिला, पाया गुरु से ज्ञान।।5।।

यद्यपि गृह पर्याय की, बड़ी बहन हैं मात।
किन्तु मात्र गुरुरूप में, हुईं मुझे ये प्राप्त।।6।।

सन् उन्निस सौ उन्हत्तरे[2], मुझको पहली बार।।
इनका शुभ दर्शन हुआ, ग्यारह वर्ष थी आयु।।7।।

किञ्चित् सम्बोधन मिला, हुआ मुझे वैराग्य।
ब्रह्मचर्यव्रत दो वरष, का ले किया शुरुआत।।8।।

पुनः इकहत्तर[3] में लिया, व्रत आजन्म महान।
तब से ही गुरुचरण को, माना तीरथ धाम।।9।।

क्रम क्रम से प्रतिमादि व्रत, ले घर का कर त्याग।
सन् उन्निस सौ [4]नवासि में, बनी आर्यिका मात।।10।।

---

1. क्षुल्लिका दीक्षा दिवस। 2. 25 अक्टूबर 1969-शरदपूर्णिमा के दिन जयपुर (राज.) में दो वर्ष का ब्रह्मचर्य व्रत लिया। 3. सन् 1971 में सुगंध दशमी के दिन अजमेर (राज.) में आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत लिया। 4. सन् 1989 में श्रावण शु. ग्यारस 13 अगस्त को जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में आर्यिका दीक्षा लेकर चन्दनामती नाम पाया।

गणिनी माता ज्ञानमति, से दीक्षा हुई प्राप्त।
नाम चन्दनामति दिया, देकर आशिर्वाद।।11।।

उनकी ही सम्प्रेरणा, से यह लिखा विधान।
सोलहकारण भावना, का मन में कर ध्यान।।12।।

सोलहकारण दिवस ही, किया इसे सम्पूर्ण।
सत्रह पूजाओं सहित, है विधान यह पूर्ण।।13।।

दो सौ ब्यालिस अर्घ्य अरु, इक्किस हैं पूर्णार्घ्य।
सत्रह जयमाला तथा, इक जयमाल महार्घ्य।।14।।

श्रीफल अर्पित कर करो, उत्तम महाविधान।
अथवा शक्तिसम करो, अर्पण फल व बादाम।।15।।

सोलहकारण पर्व का, जानो सब माहात्म्य।
इसीलिए समझो इसे, जीवन में वरदान।।16।।

।।वर्धतां जिनशासनम्।।

आरती

–आर्यिका सुदृढ़मती

तर्ज –माई रे माई.....

सोलहकारण के विधान की, आरती सब मिल गाएँ।
स्वर्णथाल में दीप जलाकर, मिथ्यातम को नशाएँ।।
जय हो चौबिस जिन की जय, जय हो जैनागम की जय।
सोलह कारण पर्व वर्ष में, तीन बार आता है।
माघ, चैत्र, भादों का महीना, पावन हो जाता है।।
शाश्वत है यह पर्व हमारा-2, सब नर नारी मनाएँ।।1।।स्वर्णथाल.....
दर्श विशुद्धि से प्रवचन–वत्सल तक सोलह भावन।
इनका चिंतन करके जन, पाते सिद्धि का साधन।।
सभी भव्य इनका पालन कर-2, जीवन सफल बनाएँ।।2।।स्वर्णथाल....
सम्यग्दर्शन प्राप्ति से, मन में विशुद्धि आती है।
इसके बिन मानव के नहीं, दर्शन विशुद्धि होती है।।
देव-शास्त्र-गुरु भक्ति करके-2, रत्नत्रय निधि पाएँ।।3।।स्वर्णथाल.....
विनय, शीलव्रत, त्याग, तपस्या, धर तन पावन कर लो।
साधु समाधि, वैय्यावृत्ति, कर मन कुंदन कर लो।।
अर्हत् ,श्रुत, आचार्य भक्ति कर-2, ज्ञान की ज्योति जलाएँ।।4।।स्वर्णथाल.....
श्रेणिक ने प्रभु भक्ति करके, अपने कर्म जलाए।
क्षायिक सम्यक् प्राप्ति कर, भावि तीर्थेश कहाए।।
इसी कथानक को सुनकर के-2, सम्यक् पथ अपनाएँ।।5।।स्वर्णथाल....
चौबिस जिन ने पूर्व जनम में, सोलह भावन भाया।
तीर्थंकर प्रकृति को बांधा, निज आतम चमकाया।।
प्रभु की भक्ति करते-करते-2, परमातम पद पाएँ।।6।।स्वर्णथाल.....
गणिनी ज्ञानमती माँ की, शिष्या चंदनामती ने।
इस विधान की रचना करके, अर्चा की प्रभु पद में।।
गुरु चरणों में वंदन करके-2 ''सुदृढ़'' चारित्र पाएँ।।7।।स्वर्णथाल.....

भजन

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

श्री सोलहकारण पाठ, करें सब ठाट-बाट से प्राणी,
तीर्थंकर पद की निशानी।।टेक.।।
यह पर्व अनादीनिधन है।
पर्वाधिराज यह अनुपम है।।
इसका व्रत करते हैं श्रावक-मुनि ज्ञानी,
तीर्थंकर पद की निशानी।।1।।
यह वर्ष में तीन बार आता।
भावों को शुद्ध बना जाता।।
शुभ चैत्र-भाद्रपद-माघ की सुनो कहानी,
तीर्थंकर पद की निशानी।।2।।
सोलहकारण के मंत्र जपो।
एकेक भावना रोज पढ़ो।।
बत्तिस दिन तक प्रभु नाम भजो भवि प्राणी,
तीर्थंकर पद की निशानी।।3।।
इस युग में भी व्रत करते जो।
सोलहकारण मय बनते वो।।
पाएंगे वे भी इक दिन शिवरजधानी,
तीर्थंकर पद की निशानी।।4।।
उत्तमव्रत में उपवास करो।
अथवा व्रत शक्त्यनुसार करो।।
''चंदनामती'' यह कहती है जिनवाणी,
तीर्थंकर पद की निशानी।।5।।

षोडशकारण व्रत

मेघमालाषोडशकारणञ्चैतद्द्वयं समानं प्रतिपद्दिनमेव द्वयोरारम्भं मुख्यतया करणीयम्। एतावान् विशेषः षोडशकारणे तु आश्विनकृष्णा प्रतिपदा एव पूर्णाभिषेकाय गृहीता भवति, इति नियमः। कृष्णपंचमी तु नाम्न एव प्रसिद्धा।

अर्थ–मेघमाला और षोडशकारण व्रत दोनों ही समान हैं। दोनों का आरंभ भाद्रपद कृष्णा प्रतिपदा से होता है परन्तु षोडशकारण व्रत में इतनी विशेषता है कि इसमें पूर्णाभिषेक आश्विन-कृष्णा प्रतिपदा को होता है, ऐसा नियम है। कृष्णा पंचमी तो नाम से ही प्रसिद्ध है।

जम्बूद्वीप संबंधी भरतक्षेत्र के मगध (बिहार) प्रांत में राजगृही नगर है। वहाँ के राजा हेमप्रभ और रानी विजयावती थी। इस राजा के यहाँ महाशर्मा नामक नौकर था और उनकी स्त्री का नाम प्रियंवदा था। इस प्रियंवदा के गर्भ से कालभैरवी नामक एक अत्यन्त कुरूपी कन्या उत्पन्न हुई कि जिसे देखकर माता-पितादि सभी स्वजनों तक को घृणा होती थी।

एक दिन मतिसागर नामक चारण ऋद्धिधारी मुनि आकाशमार्ग से गमन करते हुए उसी नगर में आये, तो उस महाशर्मा ने अत्यन्त भक्ति सहित श्री मुनि का पड़गाहन कर उन्हें विधिपूर्वक आहार दिया और उनसे धर्मोपदेश सुना। पश्चात् हाथ जोड़कर विनययुक्त उनसे पूछा-हे नाथ! यह मेरी कालभैरवी नाम की कन्या किस पापकर्म के उदय से ऐसी कुरूपी और कुलक्षणी उत्पन्न हुई है, सो कृपाकर कहिए? तब अवधिज्ञान के धारी श्री मुनिराज कहने लगे, वत्स! सुनो–

उज्जैन नगरी में एक महिपाल नाम का राजा और उसकी वेगावती नाम की रानी थी। इस रानी से विशालाक्षी नाम की एक अत्यन्त सुन्दर रूपवान कन्या थी, जो कि बहुत रूपवान होने के कारण बहुत अभिमानिनी थी और इसी रूप के मद में उसनेएक भी सद्गुण न सीखा। यथार्थ है–अहंकारी (मानी) नरों को विद्या नहीं आती है।

एक दिन वह कन्या अपनी चित्रसारी में बैठी हुई दर्पण में अपना मुख देख रही थी कि इतने में ज्ञानसूर्य नाम के महातपस्वी श्री मुनिराज उसके घर से आहार लेकर बाहर निकले, सो इस अज्ञान कन्या ने रूप के मद से मुनि को देखकर खिड़की से मुनि के ऊपर थूक दिया और बहुत हर्षित हुई।

परन्तु पृथ्वी के समान क्षमावान श्री मुनिराज तो अपनी नीची दृष्टि किये हुए ही चले गये। यह देखकर राजपुरोहित इस कन्या का उन्मत्तपना देख उस पर बहुत क्रोधित हुआ और तुरंत ही प्रासुक जल से श्री मुनिराज का शरीर प्रक्षालन

करके बहुत भक्ति से वैयावृत्य कर स्तुति की। यह देखकर वह कन्या बहुत लज्जित हुई और अपने किये हुए नीच कृत्य पर पश्चाताप करके श्री मुनि के पास गई और नमस्कार करके अपने अपराध की क्षमा मांगी। श्री मुनिराज ने उसको धर्मलाभ कहकर उपदेश दिया। पश्चात् वह कन्या वहाँ से मरकर तेरे घर यह काल भैरवी नाम की कन्या हुई है। इसने जो पूर्वजन्म में मुनि की निंदा व उपसर्ग करके घोर पाप किया है उसी के फल से यह ऐसी कुरूपा हुई है, क्योंकि पूर्व संचित कर्मों का फल भोगे बिना छुटकारा नहीं होता है इसलिए अब इसे समभावों से भोगना ही कर्तव्य है और आगे को ऐसे कर्म न बंधे ऐसा समीचीन उपाय करना योग्य है। अब पुनः वह महाशर्मा बोला–हे प्रभो! आप ही कृपाकर कोई ऐसा उपाय बताइये कि जिससे वह कन्या अब इस दुःख से छूटकर सम्यक् सुखों को प्राप्त होवे तब श्री मुनिराज बोले–वत्स! सुनो–

संसार में मनुष्यों के लिए कोई भी कार्य असाध्य नहीं है, सो भला यह कितना सा दुःख है? जिनधर्म के सेवन से तो अनादिकाल से लगे हुए जन्म-मरणादि दुःख भी छूटकर सच्चे मोक्षसुख की प्राप्ति होती है और दुःखों से छूटने की तो बात ही क्या है? वे तो सहज ही में छूट जाते हैं। इसलिए यदि यह कन्या षोडशकारण भावना भावे और व्रत पाले, तो अल्पकाल में ही स्त्रीलिंग छेदकर मोक्ष-सुख को पावेगी। तब वह महाशर्मा बोला–हे स्वामी! इस व्रत की कौन-कौन सी भावनाएं और विधि क्या है? सो कृपाकर कहिए। तब मुनिराज ने इन जिज्ञासुओं को निम्न प्रकार षोडशकारण व्रत का स्वरूप और विधि बताई।

इन 16 भावनाओं को यदि केवली-श्रुतकेवली के पादमूल के निकट अन्तःकरण से चिन्तवन की जाये तथा तदनुसार प्रवर्तन किया जाये तो इनका फल तीर्थंकर नाम कर्म के आश्रव का कारण है। आचार्य महाराज **व्रत की विधि कहते हैं–**

भादों, माघ और चैत्र वदी एकम् से कुंवार (आश्विन), फाल्गुन और वैशाख वदी एकम् तक (एक वर्ष में तीन बार) पूरे एक-एक मास तक यह व्रत करना चाहिए।

इन दिनों तेला-बेला आदि उपवास करें अथवा नीरस वा एक, दो, तीन आदि रस त्यागकर ऊनोदरपूर्वक अतिथि या दीन दुःखी नर या पशुओं को भोजनादि दान देकर एकभुक्ति–एक बार भोजन करें। अंजन, मंजन, वस्त्रालंकार विशेष धारण न करे, शीलव्रत (ब्रह्मचर्य) रखे, नित्य षोडशकारण भावना भावे और यंत्र बनाकर पूजाभिषेक करे, त्रिकाल सामायिक करे और **(ॐ ह्रीं दर्शन-विशुद्धि, विनयसम्पन्नता, शीलव्रतेष्वनतिचार अभीक्ष्णज्ञानोपयोग, संवेग, शक्तितस्त्याग,**

शक्तितस्तप, साधुसमाधि, वैयावृत्यकरण, अर्हद्भक्ति, आचार्यभक्ति, बहुश्रुतभक्ति, प्रवचनभक्ति, आवश्यकापरिहाणि, मार्ग प्रभावना, प्रवचनवत्सलत्वादि षोडश-कारणेभ्यो नमः)। इस महामंत्र का जाप करे। इस प्रकार इस व्रत को उत्कृष्ट सोलह वर्ष, मध्यम 5 अथवा दो वर्ष और जघन्य 1 वर्ष करके यथाशक्ति उद्यापन करे अर्थात् सोलह-सोलह उपकरण श्री मंदिरजी में भेंट दे और शास्त्र व विद्यादान करे, शास्त्र भण्डार खोले, सरस्वती मंदिर बनावे, पवित्र जिनधर्म का उपदेश करे और करावे इत्यादि यदि द्रव्य खर्च करने की शक्ति न हो तो व्रत द्विगुणित करे।

इस प्रकार ऋषिराज के मुख से व्रत की विधि सुनकर कालभैरवी नाम की उस ब्राह्मण कन्या ने षोडशकारण व्रत स्वीकार करके उत्कृष्ट रीति से पालन किया, भावना भायी और विधिपूर्वक उद्यापन किया, पीछे वह आयु के अंत में समाधिमरण द्वारा स्त्रीलिंग छेदकर सोलहवें (अच्युत) स्वर्ग में देव हुई। पुनः परम्परा से वह देव जम्बूद्वीप के विदेहक्षेत्र संबंधी अमरावती देश के गंधर्व नगर में राजा श्रीमंदिर की रानी महादेवी के सीमंधर नाम का तीर्थंकर पुत्र हुआ सो योग्य अवस्था को प्राप्त होकर राज्योचित सुख भोग जिनेश्वरी दीक्षा ली और घोर तपश्चरण कर केवलज्ञान प्राप्त करके बहुत जीवों को धर्मोपदेश दिया तथा आयु के अंत में समस्त अघाति कर्मों का भी नाश कर निर्वाण पद प्राप्त किया।

इस प्रकार इस व्रत को धारण करने से कालभैरवी नाम की ब्राह्मण कन्या ने सुर-नर भवों के सुखों को भोगकर अक्षय अविनाशी स्वाधीन मोक्षसुख को प्राप्त कर लिया, तो जो अन्य भव्यजीव इस व्रत को पालन करेंगे उनको भी अवश्य ही उत्तम फल की प्राप्ति होवेगी।

सोलहकारण व्रत जाप्य मंत्र-

(सोलहकारण पर्व में ये 1-1 मंत्र दो-दो दिन किये जाते हैं अतः 32 दिन में 16 मंत्र की जाप्य होती है।)

1. ॐ ह्रीं अर्हं दर्शनविशुद्धिभावनायै नमः। 2. ॐ ह्रीं अर्हं विनयसंपन्नता-भावनायै नमः। 3. ॐ ह्रीं अर्हं शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै नमः। 4. ॐ ह्रीं अर्हं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै नमः। 5. ॐ ह्रीं अर्हं संवेगभावनायै नमः। 6. ॐ ह्रीं अर्हं शक्तितस्त्यागभावनायै नमः। 7. ॐ ह्रीं अर्हं शक्तितस्तपोभावनायै नमः। 8. ॐ ह्रीं अर्हं साधुसमाधिभावनायै नमः। 9. ॐ ह्रीं अर्हं वैयावृत्यकरणभावनायै नमः। 10. ॐ ह्रीं अर्हं अर्हद्भक्तिभावनायै नमः। 11. ॐ ह्रीं अर्हं आचार्यभक्तिभावनायै नमः। 12. ॐ ह्रीं अर्हं बहुश्रुतभक्तिभावनायै नमः। 13. ॐ ह्रीं अर्हं प्रवचनभक्ति-भावनायै नमः। 14. ॐ ह्रीं अर्हं आवश्यकापरिहाणिभावनायै नमः। 15. ॐ ह्रीं अर्हं मार्गप्रभावनाभावनायै नमः। 16. ॐ ह्रीं अर्हं प्रवचनवत्सलत्वभावनायै नमः।

विधान के मण्डल का नक्शा

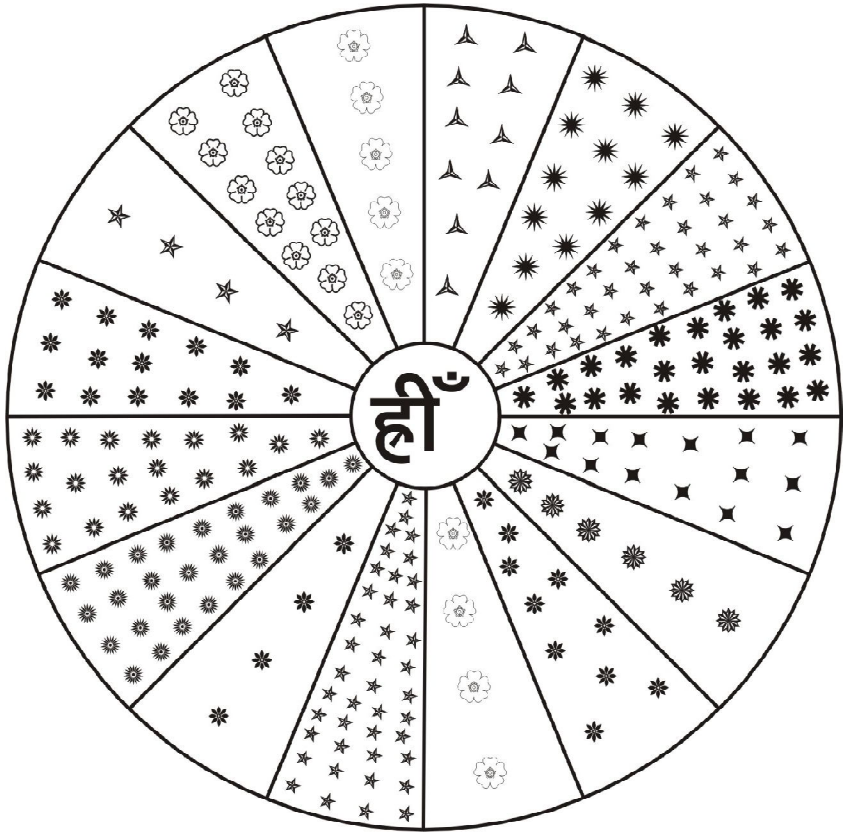

पहले वलय में	–41 अर्घ्य	नवमें वलय में	–10 अर्घ्य
दूसरे वलय में	–4 अर्घ्य	दशवें वलय में	–12 अर्घ्य
तीसरे वलय में	–27 अर्घ्य	ग्यारहवें वलय में	–36 अर्घ्य
चौथे वलय में	–19 अर्घ्य	बारहवें वलय में	–25 अर्घ्य
पाँचवें वलय में	–14 अर्घ्य	तेरहवें वलय में	–15 अर्घ्य
छठे वलय में	–4 अर्घ्य	चौदहवें वलय में	–6 अर्घ्य
सातवें वलय में	–12 अर्घ्य	पन्द्रहवें वलय में	–10 अर्घ्य
आठवें वलय में	–5 अर्घ्य	सोलहवें वलय में	–4 अर्घ्य
		कुल	–244 अर्घ्य
			21 पूर्णार्घ्य